सद्गुरवे नमः

पलटू साहेब की बानी

खंड-दो

रेख़ता

1. बोधदाता सद्गुरु और माया

रेखता-1

भवसिंधु के पार जो चाहिए जान को,
केवट भेदी तलास कीजै।
घाट औ बाट के भेद का महरमी,
उसी की नाव पर पाँव दीजै॥
सबद की नाव पर चढ़ै जो ध्याय कै,
जाय वही पार नहिं पाँव भीजै।
दास पलटू कहै कौन मल्लाह है,
पार भव सिन्धु तब उतरि लीजै॥ 1॥

शब्दार्थ—महरमी = ज्ञाता, जानकार।

भावार्थ—यदि आप संसार-सागर से पार जाना चाहते हैं तो उसके रहस्य को जानने वाले मल्लाह की खोज करें। घाट और पथ दोनों के जानकार की नाव पर चढ़िये। जो सद्गुरु के निर्णय शब्दों की नाव पर उत्साह से चढ़ता है, वह संसार-सागर से पार हो जाता है। उसके पांव नहीं भीगते—वह भटकता नहीं है। पलटू साहेब कहते हैं कि संसार-सागर से पार लगाने वाला कौन है, इस तथ्य को समझ लीजिए। तब संसार-सागर से पार पायेंगे।

रेखता–2

गुरु पूरा मिलै ज्ञान साधन करै,
पकरि कै पाँच पच्चीस मारै।
आतमा देव है पिंड का द्यौहरा,
काम औ क्रोध बिनु आग जारै॥
चंद औ सूर तहँ कोटि तारा उगै,
प्रान वायु सेती तत्त मारै।
गगन के बीच में तेल बाती बिना,
दास पलटू महा दीप बारै॥ 2॥

शब्दार्थ—पाँच= पांच ज्ञानेन्द्रियां—आंख, नाक, कान, जीभ, चाम। पचीस = पचीस प्रकृतियां। पिंड= शरीर। द्यौहरा= देवालय, मंदिर।

भावार्थ—जब बोध और रहनी सम्पन्न पूरा सद्‌गुरु मिल जाय और उससे स्वरूपबोध प्राप्त कर ले, तब उसके अनुसार साधना करे। पांच ज्ञानेन्द्रियों और पचीस प्रकृतियों को अपने वश में कर ले। शरीर देवालय है और इसमें रहने वाला 'मैं' के रूप में आत्मा परमात्मा देव है। उसी की उपासना करे—जड़ दृश्य को छोड़-छोड़कर आत्मा में स्थित होने का अभ्यास करे। वह साधक काम-क्रोधादि को भौतिक आग से रहित विवेक की आग में जला देता है। फिर तो उसके जीवन में आत्मानुभव के चांद, सूर्य तथा करोड़ों तारे उगते हैं—वह ज्ञान-ज्योतित हो जाता है। वह प्राणायाम क्रिया द्वारा तत्त्व-प्रकृति के विकारों को भी मारकर स्वस्थ रहता है। पलटू साहेब कहते हैं कि वह हृदयाकाश में भौतिक तेल-बत्ती से रहित आत्मज्ञान का अखंड महा दीपक जलाता है।

रेखता–3

गुरू तो कीजिए बूझि बिचारि कै,
करम अरु भरम से रहत न्यारा।
करम को बंद जम काल को फंद है,
पचि मरे गुरु सिष्य दोउ सीस धारा॥
धनी को भेद लै बस्तु खोवै नहीं,
रैन बिनु दीप के महल सारा।

पाँच पच्चीस को पकरि सठ कैद में,
लाय गुन तीन निःतत्त मारा॥
बिबेक जानै नहीं कान फूँकत फिरै,
बिना सत सबद किन काल टारा।
दास पलटू कहै सदा वह पाक है,
गुरू तो वही जिन तत्तगारा॥ 3॥

शब्दार्थ—धनी= पूर्ण सद्‌गुरु। निःतत्त्व= सारहीन, निस्सार। पाक= पवित्र। गारा= निचोड़ लिया।

भावार्थ—साधक सावधान! समझ-बूझकर गुरु का चुनाव करो। जो कर्मकांड तथा परोक्ष उपासना के भ्रम से रहित हो, वह सच्चा सद्‌गुरु है। कर्मकांड तथा देवी-देवताओं की मान्यताएं यमजाल और कल्पना का फंदा हैं। यदि इन बातों को कोई अपने सिर पर चढ़ाये है तो वे गुरु तथा शिष्य अनात्म उपासना में ही पच-पचकर मरते हैं। पूर्ण सद्‌गुरु से स्वस्वरूप का रहस्य समझ ले और परोक्ष उपासना में उलझकर आत्मबोध न खोवे, अपितु स्वरूपस्थिति करे। हृदय-महल में आत्मज्ञान का दीपक सदैव जलता रहे जिससे अविद्या की रात रहने न पावे। पांच ज्ञानेन्द्रियों तथा पचीस प्रकृतियों[1] के जो मूढ़तापूर्ण कर्म हैं, उन्हें मारकर वश में करे और रज, सत तथा तम गुण के जो सारहीन कर्म हैं उनका त्याग कर दे। कितने गुरु हैं जिन्हें आत्मा-अनात्मा का विवेक नहीं है। वे केवल शिष्यों के कानों में कोई मंत्र फूंक मारते हैं। सत्यासत्य निर्णय के बिना प्रत्यक्ष-परोक्ष के सारे मोह और भ्रम रूपी काल को कौन दूर कर सकता है? पलटू साहेब कहते हैं कि वह सदैव पवित्र है और वही सच्चा सद्‌गुरु है जिसने विवेक से मंथन कर सार आत्मतत्त्व को निकाल लिया है।

---

1. पचीस प्रकृतियां—पृथ्वी तत्त्व की प्रकृतियां—हाड़, चाम, मांस, नस तथा रोम; जल की लार, मूत्र, वीर्य, रक्त और पसीना; अग्नि की भूख, प्यास, आलस्य, नींद तथा जमुहाई; वायु की बलकरन, संकोचन, पसारन, बोलन तथा धावन; आकाश की काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा भय। आकाश शून्य है, उसकी कोई प्रकृति नहीं। उसकी कामादि प्रकृति है, यह मान्यता मात्र है। वस्तुतः कामादि मनोविकार हैं, वे साधना से नष्ट हो जाते हैं, प्रकृति नहीं नष्ट होती।

रेखता-4

माया कर जोरि कै भई आगे खड़ी,
हुकुम जो होय मैं रहौं स्वामी।
हुकुम जो होय सो करौं तैयार मैं,
हुकुम में तनिक ना करौ खामी॥
मुक्ति मोरि कीजिये राखिये सरन में,
तनिक जबान से भरौ हामी।
दास पलटू कहै फरक तू खड़ी हो,
बकसु भैने कँहै लगै मामी॥ 4॥

शब्दार्थ—खामी= कमी, असावधानी। हामी= स्वीकार। फरक= फर्क, दूर। बकसु= क्षमा कर, दूर हो। भैने= भगना, भानजा। मामी= मामा की पत्नी, मातुलानी।

भावार्थ—माया हाथ जोड़कर आगे खड़ी हो गयी है। उसने कहा कि हे स्वामी ! जो आपकी आज्ञा हो, वह मैं सब करूंगी। आपकी जो आज्ञा हो, मैं उसे आपके सामने प्रस्तुत करूंगी। मैं आपकी आज्ञा की थोड़ी भी अवहेलना नहीं करूंगी। आप मुझे अपनी शरण में रखिये और मुझे मुक्ति दीजिए। मैं आपकी आज्ञा सुनते ही उसे स्वीकार करूंगी। पलटू साहेब ने कहा—री माया ! तू दूर खड़ी हो ! मुझे क्षमा कर। मैं तेरा भानजा हूं और तू, मेरी मामी लगती है।

विशेष—प्रगल्भ संत पलटू साहेब के ज्ञान-वैराग्य पूर्ण कथन के बीच-बीच में दिल को छूने वाली मनोरंजक उक्तियां आती हैं। माया कोई व्यक्ति नहीं जो बात करे और जिससे बात की जाय। ग्रंथकार का कुल जोर माया-त्याग में है।

2. नाम महत्त्व

रेखता-5

पीवता नाम सो जुगन जुग जीवता,
नाहिं वो मरै जो नाम पीवै।
काल ब्यापै नहीं अमर वह होयगा,
आदि औ अंत वह सदा जीवै॥

संत जन अमर हैं उसी हरि नाम से,
उसी हरि नाम पर चित्त देवै।
दास पलटू कहै सुधा रस छोड़ि कै,
भया अज्ञान तू छाछ लेवै॥ 5॥

शब्दार्थ—छाछ= मट्ठा।

भावार्थ—जो हरिनाम एवं सतनाम का रस पीता है वह युग-युग जीता है। वह अमर हो जाता है। उसके ऊपर काल का प्रभाव नहीं पड़ता। वह अमर होकर अनन्त काल तक जीता है। उसी हरिनाम से संत जन जीवित रहते हैं; अतएव उसी में मन लगाओ। पलटू साहेब कहते हैं कि अमृत-रस छोड़कर तू मट्ठा पीता है, यह तेरा अज्ञान है।

विशेष—हरिनाम, सतनाम, ॐ, अल्लाह आदि सारे नाम मनुष्य के कल्पित हैं। इनके जप से मन का कुछ विचार दूर हो तो ठीक है। नाम जप महिमापरक कथन है। वस्तुत: जीवन में शांति तथा अमर स्थिति मिलती है आत्मबोध और आत्मशोध कर आत्मस्थिति में।

रेखता-6

राखु परवाह तू एक निज नाम की,
खलक मैदान में बाँध टाटी।
मीर उमराव दिन चारि के पाहुना,
छोड़ि घर माहिं दौलत हाथी॥
पकरि ले सबद जिन तोहि पैदा किया,
और सब होइँगे खाक माटी।
दास पलटू कहै देखु संसार गति,
बिना निज नाम नहिं कोई साथी॥ 6॥

शब्दार्थ—खलक= संसार। मीर= अमीर, सरदार, नेता। उमराव= धनपति।

भावार्थ—हे कल्याणार्थी! तू केवल अपने नाम की चिंता कर—तू अपने आत्मा पर ध्यान दे। संसार के मैदान से अपने को अलग करने के लिए तू ज्ञान-वैराग्य का परदा लगा। नेता, पूंजीपति आदि सब संसार में चार दिन के पहुना हैं। ये सब अपनी धन-दौलत, हाथी-घोड़े, घर-द्वार यहीं छोड़कर

चले जायेंगे। तू अपने कर्म-संस्कारों को शोध, जिसके कारण तूने देह धारण किया है। तेरा अपना माना हुआ सारा ऐश्वर्य धूल-माटी हो जायेगा। पलटू साहेब कहते हैं कि संसार की गति को देख। निज आत्मस्वरूप के बोध से ही संसार-बंधन छूटेगा। इसके अलावा तेरा दुख-मोचन कर्ता कोई नहीं है।

रेखता-7

बोलु हरि नाम तू छोड़ि दे काम सब,
सहज में मुक्ति होइ जाय तेरी।
दाम लागै नहीं काम यह बड़ा है,
सदा सतसंग में लाउ फेरी॥
बिलम ना लाइ कै डारि सिर भार को,
छोड़ि दे आस संसार के री।
दास पलटू कहै यही संग जायगा,
बोलु मुख राम यह अरज मेरी॥ 7॥

शब्दार्थ—काम सब= सारी कामनाएं। विलम= विलम्ब, देरी।

भावार्थ—हरिनाम बोल और दुनिया की सारी कामनाएं छोड़ दे, तो तेरा सहज में संसार-बंधनों से छुटकारा हो जायेगा। इसमें कोई धन-ऐश्वर्य की आवश्यकता नहीं पड़ती, परन्तु यह काम सर्वोच्च है। तू सदैव संत-संगति में जा-जाकर आत्मज्ञान पर विचार कर। देरी मत कर, मोह का सारा बोझा सिर से उतार दे और सांसारिक भोगों की सारी आशाएं छोड़ दे। पलटू साहेब कहते हैं कि जीव के साथ यह आत्मसंयम की पूंजी ही जाकर शांति देगी। मेरी यह प्रार्थना है कि तू मुख से राम कह !

3. जीव शिव है

रेखता-8

कोटि हैं बिस्नु जहँ कोटि सिव खड़े हैं,
कोटि ब्रह्मा तहाँ कथैं बानी।
कोटि देवी जहाँ खड़ी हैं चेरियाँ,
कोटि फन सहस ना मरम जानी॥

कोटि आकास पाताल फिरि कोटि हैं,
कोटि ब्रह्मांड सौ कोटि ज्ञानी।
दास पलटू कहैं बड़े दरबार में,
इंद्र हैं कोटि तहँ भरैं पानी॥ 8॥

शब्दार्थ—फन= फण।

भावार्थ—निष्काम आत्मस्थिति दशा सर्वोच्च है। उसके सामने सब फीके हैं। करोड़ों विष्णु और शिव उसके सामने मानो हाथ जोड़े खड़े हैं। करोड़ों ब्रह्मा उसकी स्तुति करते हैं। करोड़ों देवियां वहां सेविकाएं होकर खड़ी हैं। सहस्र फणधारी करोड़ों शेषनाग उसकी दशा को नहीं पा सकते। करोड़ों आकाश, पाताल, ब्रह्माण्ड और ज्ञानी उसके सामने नतमस्तक हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि उस बड़े दरबार में करोड़ों इंद्र पानी भरते हैं।

विशेष—यह महिमापरक काव्यात्मक प्रयोग केवल यह बताने के लिए है कि निष्काम स्वरूपस्थिति उच्चतम है। उसके सामने सब फीका है।

रेखता-9

भक्त के नाथ को जक्त की लाज है,
रहै सब माहिं कोउ नाहिं जानै।
मरै सिर पीटि के आपनी भटक से,
संत के बचन को नाहिं मानै॥
मोह औ माया के बीच पड़ि गया है,
कर्म के बंध से भर्म आनै।
दास पलटू कहै जीव सब वही है,
बेद बेदान्त में खोजि छानै॥ 9॥

शब्दार्थ—बीच= अंतर, भेद।

भावार्थ—भक्तों के स्वामी को जगत की लाज है। वे सबका कल्याण चाहते हैं। वे सबके दिल में बैठे हैं, किन्तु अज्ञानवश कोई समझता नहीं है। लोग अपने अज्ञान से परमात्मा को पाने के लिए सिर पीट-पीट कर मरते हैं और बाहर खोजते हैं। ये भटकने वाले लोग विवेकी संतों की बात नहीं मानते हैं। अनात्म वस्तुओं के मोह तथा माया के लोभ के कारण परदा पड़ा है।

लोग कर्मबंधनों में पड़े भ्रमित होकर बाहर भटकते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि सब जीव परमात्मा हैं। वेद-वेदांत में खोज-छान कर देख लो, वे भी यही कहते हैं।

रेखता-10

पूरब में राम है पच्छिम खुदाय है,
उत्तर औ दक्खिन कहो कौन रहता।
साहिब वह कहाँ है कहाँ फिर नहीं है,
हिन्दू और तुरुक तोफान करता॥
हिन्दू औ तुरुक मिलि परे हैं खैंचि में,
आपनी बर्ग दोऊ दीन बहता।
दास पलटू कहै साहिब सब में रहै,
जुदा ना तनिक मैं साच कहता॥ 10॥

शब्दार्थ—तोफान=तूफान, झगड़ा, अहंकारी बातें। खैंचि=खींचा-तानी। बर्ग=सम्प्रदाय।

भावार्थ—पूर्व दिशा में राम हैं और पश्चिम में खुदा हैं, तो बताओ, उत्तर और दक्षिण दिशाओं में कौन रहता है? परमात्मा कहां है और कहां नहीं है? हिन्दू और मुसलमान व्यर्थ ही झगड़ा करते हैं। हिन्दू और मुसलमान दोनों खींचतान में पड़े हैं दोनों वर्ग अपनी-अपनी मान्यताओं की धारा में बह रहे हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि परमात्मा तो सब प्राणियों के दिल में बैठा है। मैं सच कहता हूं परमात्मा प्राणियों से अलग नहीं है।

विशेष—यहां बात हिन्दू-मुसलमान की है क्योंकि ये दोनों पलटू साहेब के सामने थे। यही बात इसाई आदि सभी सम्प्रदायों के लिए है। धर्म के क्षेत्र में अवतारवाद, पैगम्बरवाद, अलौकिकता आदि दादागीरी के लिए है। इससे असली धर्म ढक जाता है।

रेखता-11

घट औ मठ ब्रह्मांड सब एक है,
भटकि कै मरत संसार सारा।
मृगा की बासना वही छुटै नहीं,
आप को भूलि बहु बार हारा॥

आपु को खोज तू भर्म को छोड़ि दे,
कोटि बैकुंठ ससि भानु तारा।
दास पलटू कहै बहुत तहकीक करि,
बोलता ब्रह्म है राम प्यारा॥ 11॥

शब्दार्थ—घट=घड़ा। मठ=मकान। ब्रह्मांड=संसार। तहकीक= तहक़ीक़, जांच-पड़ताल, खोज।

भावार्थ—घड़ा, मकान, पूरा ब्रह्माण्ड सब जड़ प्रकृति का खेल है। सारा संसार भौतिक पदार्थों की मोह-माया में उलझकर मर रहा है। मृगा की नाभि में कस्तूरी है, परन्तु वह उसे बाहर खोजता है। उसकी यह भ्रम-वासना नहीं छूटती। इसी प्रकार जीव अपने आप को भूलकर बारंबार धोखा खाता रहा है। अतएव तू बाहर से परमात्मा पाने का भ्रम छोड़कर अपने आप का अनुसंधान कर। करोड़ों बैकुंठ, चंद्रमा, सूर्य और तारे तेरी आत्मिक शांति के ऐश्वर्य के सामने फीके हैं, क्योंकि वे जड़ हैं। पलटू साहेब बहुत जांच-पड़ताल के बाद कहते हैं कि यह देह में रहकर बोलने वाला जीव ही ब्रह्म है और प्रियतम राम है।

रेखता-12

मरै सिर पटकि कै धोख धंधा करै,
जाय तू कहाँ कुछ होस नाहीं।
बैठु सतसंग में बात को बूझि ले,
बिना सतसंग ना भर्म जाही॥
सबै है राम का राम का वही है,
दौरि कै राम जब धरै बाहीं।
दास पलटू कहै जिन्हैं तू खोजता,
सोई तो राम है तुसी पाहीं॥ 12॥

शब्दार्थ—तुसी पाहीं=तेरे पास, तात्पर्य में तेरा अस्तित्व, तेरा होना।

भावार्थ—लोग परमात्मा को खोजने के नाम पर धोखा का धंधा करते हैं और जगह-जगह पानी-पत्थर में सिर पटककर मरते हैं। हे मनुष्य ! कहां जा रहा है? तू तो अनात्म जड़ वस्तुओं में भटक रहा है। तेरे को अपने आप

की कुछ भी सुधि-बुधि नहीं है। तू विवेकियों के सत्संग में बैठकर बात को समझ ले। बिना सत्संग भ्रम नहीं जा सकता। सब जीव राम के स्वरूप हैं। वस्तुतः राम का वही है जिसका दौड़कर राम ने हाथ पकड़ लिया। पलटू साहेब कहते हैं कि जिन्हें तू खोजता है, वही राम तो तेरे पास स्वचेतन के रूप में विद्यमान है।

विशेष—कोई बाहर राम नहीं है कि वह दौड़कर किसी का हाथ पकड़ ले। वस्तुतः जो अपने आत्म तत्त्व को समझा कि यही राम, ब्रह्म तथा खुदा है और उत्साहपूर्वक अपने आप में लीन हो गया वही अपने रामरूप को पाया। विषयों से मुड़कर अंतर्मुख हो जाना ही राम को पाना है।

रेखता-13

पवन पानी कँहै अगिन से जोरि कै,
नाइ माटी केरी महल छाया।
पाँच है तत्त सोइ पाँच भूतात्मा,
इन्द्री दस ज्ञान औ कर्म लाया॥
मन परकिर्ति हंकार फिर जीव है,
महातत्त सोई ह्वै ब्रह्म आया।
दास पलटू कहै दूसरा कौन है,
भर्म को छोड़ि दे द्वैत माया॥ 13॥

शब्दार्थ—महतत्त= महतत्त्व, बुद्धि।

भावार्थ—वायु, जल, अग्नि, मिट्टी तथा आकाश ये पांच तत्त्व पांच भूतों के स्वरूप हैं। पांच कर्मेन्द्रियां तथा पांच ज्ञानेन्द्रियां, मन, प्रकृति, अहंकार, और बुद्धि इसके साथ पांच विषय—शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गंध, ये चौबीस जड़ तत्त्व हैं। इन्हीं से शरीर रूपी भवन बना है। इसमें रहने वाला पचीसवां चेतन जीव है। वही ब्रह्म है। पलटू साहेब कहते हैं कि जीव के अलावा ब्रह्म कहां और कौन है? हे मनुष्य! भ्रम को छोड़ दे। आत्मा के अलावा तो जड़ कार्य मायामय है जो द्वैत है।

रेखता-14

एक अनेक अनेक फिर एक है,
एक ही एक ना और कोई।

संत को एक अनेक संसार को,
रहा भरिपूर सब माहिं सोई॥
संत के अमर है मरै असंत के,
नरक औ सरग यहि भाँति होई।
नरक औ सरग सब होत अनेक को,
दास पलटू हम देखि रोई॥ 14॥

शब्दार्थ—रोई=दुखी हुआ।

भावार्थ—सब जीवों का गुण एक चेतन है, किन्तु व्यक्तित्व सबका अलग-अलग है। अतएव मूलतः सब जीव एक समान हैं। संत यह समझते हैं कि सब जीव एक समान हैं, किन्तु असंत उनमें ऊंच-नीच का भेद करते हैं। वस्तुतः सब घटों में एक समान चेतन का निवास है। संत सचाई देखते हैं, इसलिए वे अमरत्व स्थिति पाते हैं, किन्तु असंत भेदभाव रखकर मरणशीलता में बहते हैं। इसी प्रकार नरक-स्वर्ग की बात है। भेदभाव रखने वाले को स्वर्ग-नरक हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि इन अज्ञानियों की दशा को देखकर मुझे दुख होता है।

4. संत और सत्संग सर्वोच्च है

रेखता-15

धन्य हैं संत निज धाम सुख छोड़ि कै,
आन के काज को देह धारा।
ज्ञान समसेर लै पैठि संसार में,
सकल संसार का मोह टारा॥
प्रीति सब से करैं मित्र औ दुष्ट से,
भली अरु बुरी दोउ सीस धारा।
दास पलटू कहै राम नहिं जानहूँ,
जानहूँ संत जिन जक्त तारा॥ 15॥

शब्दार्थ—समसेर=शमशीर, शमशेर, तलवार।

भावार्थ—संत धन्य हैं जो स्वरूपस्थिति रूपी निजधाम का सुख छोड़कर समाज के कल्याण के लिए साधु रूपी देह धारणकर जीवों को

जगाते हैं। वे आत्मज्ञान रूपी तलवार लेकर संसार में प्रवेश करते हैं और मोह-दल को मारकर स्वयं निर्मोह रहते हैं, और संसार के लोगों को चेताते हैं कि मोह का त्याग करो। वे मित्र और शत्रु सबसे प्रेम करते हैं। उन्हें कोई भला या बुरा कहे, तो उसे सिर झुकाकर स्वीकार लेते हैं। वे विवाद में नहीं पड़ते। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं ईश्वर को नहीं जानता हूं, अपितु संत को जानता हूं जो संसार के लोगों को सत्योपदेश देकर उनका उद्धार करते हैं।

रेखता-16

संत संसार में आय परगट भये,
नाम दृढ़ाय कै जक्त तारा।
भजन भगवान को कोऊ ना जानता,
संत यहि हेतु औतार धारा॥
राम के नाम पर अदल चलाय कै,
काल के सीस पर धौल मारा।
दास पलटू कहै रहे सब डूबते,
संत ने पकरि कै किहा पारा॥ 16॥

शब्दार्थ—अदल=न्याय, इंसाफ। धौल=भारी आघात, चोट, प्रहार।

भावार्थ—संत संसार में प्रकट होकर विचरण करते हैं और वे परमार्थ के नामों तथा संज्ञाओं के अर्थस्वरूप आत्मज्ञान का उपदेश करते हैं और जगत का उद्धार करते हैं। भगवान का भजन कोई नहीं जानता यदि संत उपदेश न करते। निज और पर के कल्याण के लिए ही संत का अवतरण है। वे संसार में आत्मज्ञान का न्याय चलाकर मनःकल्पनाओं के सिर पर भारी चोट मारते हैं और उसे ध्वस्त कर देते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि संसार के लोग माया-मोह में डूबते हैं। बोध-वैराग्य सम्पन्न संत ही उनका उद्धार करते हैं।

रेखता-17

संत औ राम को एक कै जानिये,
दूसरा भेद ना तनिक आनै।
लाली ज्यों छिपी है मिंहदी के पात में,
दूध में घीव यह ज्ञान ठानै॥

फूल में बास ज्यों काठ में आग है,
संत में राम यहि भाँति जानै।
दास पलटू कहै संत में राम है,
राम में संत यह सत्य मानै॥ 17॥

शब्दार्थ—मिंहदी= मेंहदी, जिसके पत्ते घिसने पर उसमें लाल रंग निकलता है।

भावार्थ—संत और ईश्वर एक समझो। इसमें थोड़ा भी अंतर मत मानो। जैसे मेंहदी के हरे पत्ते में लाली छिपी है, दूध में घी छिपा है, फूल में सुगंध तथा काष्ठ में अग्नि छिपी है, वैसे संत में ईश्वर छिपा है, ऐसा समझो। पलटू साहेब कहते हैं कि संत में ईश्वर है और ईश्वर में संत है। इस सत्यता को स्वीकारना चाहिए।

विशेष—राम-रहीम, ईश्वर-अल्लाह, तो केवल शब्द हैं। मनुष्य ही उन शब्दों का निर्माता है। अतएव परम ईश्वर मनुष्य है, और जो उनमें पवित्रात्मा हैं वे आत्मसंतुष्ट होते हैं और दूसरों को उस रास्ते पर लगाते हैं; अतएव पवित्रात्मा ही संत हैं, और वे ही कल्याणार्थियों के लिए परम इष्ट और पूज्य हैं।

रेखता-18

संत दरबार तहसील संतोष की,
कचहरी ज्ञान हरि नाम डंका।
रिद्धि औ सिद्धि दोउ हाथ बाँधे खड़ी,
बिबेक ने मारि कै दिहा धक्का॥
मुक्ति सिर खोलि कै करै फिरियाद को,
दिहा दुदकार यह अदल बंका।
मारि माया कँहै अमल ऐसा किहा,
दास पलटू अहै हरीफ पक्का॥ 18॥

शब्दार्थ—तहसील= लोगों से रुपये वसूल करने की क्रिया, वसूली, उगाही। फरियाद= विनती, प्रार्थना। बंका= बांका, अच्छा। अमल= अधिकार। हरीफ= हरीफ़, समान व्यवसायी, प्रतिद्वंद्वी, लड़ने वाला, योद्धा।

भावार्थ—संत का दरबार संतोष की वसूली करता है। उनका न्यायालय आत्मज्ञान की चर्चा है और हरिनाम का डंका बजता है। संत-दरबार में ऋद्धि

और सिद्धि दोनों हाथ जोड़कर खड़ी रहती हैं और पूछती हैं कि हम क्या सेवा करें। किन्तु विवेकी उनको मारकर और धक्का देकर बाहर निकाल देता है। मुक्ति अपना सिर खोलकर—अत्यंत दीन होकर प्रार्थना करती है कि मुझे अपनी शरण में रख लो, किन्तु संत उसे दुत्कार कर दूर कर देते हैं। यह उनका उत्तम न्याय है। पलटू साहेब कहते हैं कि संत माया को मारकर अपने आप पर ऐसा अधिकार कर लेते हैं कि अचल हो जाते हैं। संत पक्के योद्धा हैं।

विशेष—पलटू साहेब की वाणी में यह बात बारंबार आती है कि मुक्ति को दूर हटा दिया। यह उनकी मस्तानगी का काव्यात्मक कथन है। वस्तुतः उनका पूरा जीवन ही मुक्त रूप है। जो सबसे निष्काम है वही तो मुक्त है। मुक्ति कोई व्यक्ति नहीं जो किसी को विनती करने आये। सबसे निष्काम हो जाना मुक्ति है और पलटू साहेब सबसे निष्काम होने से निरंतर मुक्त स्वरूप ही हैं।

रेखता-19

सबद बिबेकी मिलै जो आइकै,
उसहु की सुनै कछु आप कहना।
उसी टकसार का होय तो बोलिये,
बिना टकसार सुनि मौन रहना॥
सत्त की गाय को सुरति से दूहि कै,
दही जमाय के तत्त महना।
दास पलटू कहै आपनी मौज में,
यार फक्कीर तुम खुसी रहना॥ 19॥

शब्दार्थ—टकसार=टकसाल, सिक्के ढलने का स्थान, प्रामाणिकता, निर्दोष वस्तु; चोखा, खरा; आचरण। बोली=बानी। तत्त=तत्त्व, सार।

भावार्थ—यदि शब्दों के विवेकी मिलें, तो उनकी बातें सुने और कुछ अपनी बातें भी कहे। यदि वे विवेक पथ के हों तो बातचीत करना चाहिए। यदि केवल भावना प्रधान हों तो उनकी बात सुनकर मौन रहना चाहिए। सत्यरूपी गाय को सुरति से दुहकर दही जमावे और उसे मथकर सार आत्मबोध निकाल ले। पलटू साहेब कहते हैं कि हे मित्र फकीर! अपनी आत्मस्थिति के आनंद में सदैव आनंदित रहना।

रेखता-20

कांच कंचन सेती भेद ना राखही,
दुष्ट औ मित्र को एक जानै।
निन्दा अस्तुति सेती पीठ दे बैठही,
भली औ बुरी कछु नाहिं मानै॥
छोड़ जग आस को भरम को बोरि दे,
पाप औ पुन्न इक घाट आनै।
दास पलटू कहै सोई अनन्य है,
कर्म संसार को पकरि भानै॥ 20॥

शब्दार्थ—अनन्य= एकनिष्ठ। भाने=तोड़ दे।

भावार्थ—कांच और कंचन समान समझे। मित्र और शत्रु में समता रखे। मिली हुई निन्दा और स्तुति अनदेखी कर दे। किसी की भलाई-बुराई में मन न लगावे। सांसारिक आशाओं को त्याग दे। सारी मानसिक भ्रांतियों को नष्ट कर दे और पाप और पुण्य से ऊपर उठ जाय। पलटू साहेब कहते हैं कि वही एकनिष्ठ आत्म-उपासक है जो कर्म-संस्कारों को परखकर नष्ट कर दे।

रेखता-21

बिना सतसंग ना कथा हरि नाम की,
बिना हरि नाम ना मोह भागै।
मोह भागे बिना मुक्ति ना मिलैगी,
मुक्ति बिनु नाहिं अनुराग लागै॥
बिना अनुराग से भक्ति ना मिलेगी,
भक्ति बिनु प्रेम उर नाहिं जागै।
प्रेम बिनु नाम ना नाम बिनु संत ना,
पलटू सतसंग वरदान माँगै॥ 21॥

शब्दार्थ—अनुराग= प्रगाढ़ लगन।

भावार्थ—सत्संग के बिना आत्मज्ञान की चर्चा नहीं हो सकती और आत्मज्ञान हुए बिना मोह-भंग नहीं होगा। मोह के पूरा नष्ट हुए बिना समस्त वासनाओं से मुक्ति नहीं मिलेगी और वासनाओं से छुटकारा हुए बिना

अध्यात्म में प्रगाढ़ लगन नहीं लगेगी। इसके बिना भक्ति नहीं जगेगी और बिना भक्ति के हृदय में आध्यात्मिक प्रेम नहीं जगेगा। प्रेम के बिना ज्ञान का महत्त्व नहीं है और ज्ञान के बिना संत नहीं। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं सद्‌गुरु से यही वरदान मांगता हूं कि मुझे सत्संग मिलता रहे।

विशेष—ग्रंथकार ने सत्संग-हरिनाम (आत्मज्ञान)-मोहभंग-मुक्ति-अनुराग-भक्ति-प्रेम-नाम (ज्ञान)-संत का क्रम रखा है। सरलभाव है, सत्संग से आत्मज्ञान, आत्मज्ञान से मोहभंग, मोहभंग से मोक्ष होता है। जीवनपर्यन्त मोक्ष-स्थिति बनाये रखने वाला गुरुजनों की भक्ति का अनुरागी होता है।

रेखता-22

कौन तू सकस है चेत करु आपु को,
कहाँ तू आइ कै मन्न लाया।
केतिक बेर तू गया ठगाय है,
आपना भेद तू नाहिं पाया॥
भटक यह मिटैगी काम तब होयगा,
केतिक बेर तू भटकि आया।
दास पलटू कहै होय संस्कार जब,
बिना सतसंग ना छुटै माया॥ 22॥

शब्दार्थ—सकस= शख़्स, व्यक्ति, जन। मन्न= मन। बेर= बार, दफा।

भावार्थ—तू कौन है? अपने आप की सुधि कर। तू कहां आकर अपना मन लगा दिया है ? तू मनुष्य देह में आकर कितनी ही बार अपने को ठगाकर चला गया है, किन्तु तूने अपने आप की पहचान नहीं की। जब अपने स्वरूप की भूल मिटेगी तब अविचल शांति मिलेगी। यही अपना काम बनाना है। तू अपने आत्म-अस्तित्व को भूलकर बहुत बार भटकता रहा। पलटू साहेब कहते हैं कि जब पूर्वजन्मों के अच्छे संस्कार उदय हों और विवेकवान संतों का सत्संग मिले, तब उनसे प्रेरणा लेकर व्यक्ति अपने मन की मोह-माया मिटाकर अपना कल्याण कर सकता है।

रेखता-23

गगन मैदान में ध्यान धूनी धरै,
मन में लखि गुरु का ज्ञान छाला।

चंद्र सिर तिलक है तत्त सुमिरन करै,
जपै हरि नाम अवधूत बाला॥
प्रेम भभूति बिबेक की फावड़ी,
गूदरी खुसी अरु आड़ माला।
दास पलटू कहै संत की सरन में,
लिखा नसीब को मेटि डाला॥ 23॥

शब्दार्थ—छाला=मृगछाला, मृगचर्म। बाला=कान में पहनने का छल्ला। फावड़ी=छोटा फावड़ा। आड़=आड़बंद, लंगोटी। नसीब=प्रारब्ध, भाग्य।

भावार्थ—आकाश के मैदान में ध्यान की धूनी रमावे। गुरु द्वारा दिया हुआ आत्मज्ञान का मन में चिंतन करे और इसी को मृगचर्म समझे। चंद्रमा ही मानो सिर का तिलक है। आत्म तत्त्व का स्मरण करे और हरिनाम का जप अवधूत अपने कान का बाला समझे। प्रेम का भभूत लगावे, विवेक की फावड़ी रखे और मन की निरंतर प्रसन्नता की लंगोटी और माला धारण करे। पलटू साहेब कहते हैं कि संतों की शरण में लगकर मनुष्य अपने कर्म-बंधनों को काटकर मुक्त हो जाता है।

रेखता-24

मन मूरति करै तनै देवल बना,
निकट में छोड़ि कहँ दूरि धावै।
जल पाषान कछु खाय बोलै नहीं,
बिना सतसंग सब भटकि आवै॥
यही तहकीक करु बोलता कौन है,
यही है राम जो नित्त खावै।
दास पलटू कहै बोलता पूजिये,
करै सतसंग तब भेद पावै॥ 24॥

शब्दार्थ—तहकीक=तहक़ीक़, सत्य की खोज, जांच, शोध।

भावार्थ—शरीर को देव-मंदिर समझे, मन को देवता बनावे और निरंतर मन की पवित्रता करना रूपी उसकी पूजा करे। यह निकट देव तथा देव-मन्दिर छोड़कर दूर कहां दौड़े? पानी-पत्थर की पूजा करने से वे न खाते हैं न

बोलते हैं। बिना सत्संग के लोग तीर्थ-मूर्ति में भटककर लौट आते हैं और कुछ नहीं पाते हैं। यह शोधन करो कि जो देह में रहकर बोलता है वह कौन है? वस्तुतः यही राम है जो नित्य खाता है। पलटू साहेब कहते हैं कि बोलने-डोलने वाले आत्मा की पूजा करो। जब मनुष्य विवेकवान संतों का सत्संग करता है, तब वह आत्मा के यथार्थ स्वरूप को समझता है।

5. चेतावनी

रेखता-25

देह और गेह परिवार को देखि कै,
माया के जोर में फिरै फूला।
जानता सदा दिन ऐसे ही जायेंगे,
सुन्दरी संग सुखपाल झूला॥
चारि जून खात है बैठि कै खुसी से,
बहुत मुटाई कै भया थूला।
सेज बँद बाँधि कै पान को चाभते,
रैन दिन करत है दूध कूला॥
जानता अमर हूँ मरूँगा अब नहीं,
बाघ की रौस जा काल हूला।
दास पलटू कहै नाम को याद करू,
ख्वाब की लहरि में काह भूला॥ 25॥

शब्दार्थ—सुखपाल=एक तरह की पालकी। थूला=स्थूल, मोटा। सेजबंद=शय्या को खाट में बांधने की डोरी। कूला=कुल्ला। रौस=चाल, गति। हूला= भोंक दिया।

भावार्थ—मनुष्य अपनी मानी हुए देह, मकान तथा परिवार को देखकर माया की चमक-दमक के प्रवाह में अहंकारवश फूला-फूला घूमता है। वह भोला समझता है कि ऐसी ही चमक-दमक में सारे दिन बीतेंगे। वह सुंदरी युवती पत्नी के साथ पालकी पर झूलते हुए चलता है, बैठकर मगन हो चार समय खाता है और बहुत मोटा होकर स्थूल हो गया है। खाट में सेजबंद बांधकर पौढ़ता और बारंबार पान चाभता है। मानो वह रात-दिन दूध का कुल्ला ही करता है। उसे भ्रम है कि मैं अमर हूं, कभी मरूंगा नहीं, किन्तु

जैसे सिंह दौड़कर अपने शिकार को धर दबोचता है, वैसे काल दौड़कर उसके पेट में अपनी तलवार भोंक देता है। पलटू साहेब कहते हैं कि राम नाम या सतनाम का स्मरण कर और उसके अर्थस्वरूप अपने आत्मा की याद कर। तू स्वप्न के सैलाब में क्यों भूला फिरता है?

रेखता-26

राम के नाम से भूलना नाहिं है,
खायगा यार तू फेरि गोता।
काम औ क्रोध में लगा दिन राति तू,
लोभ औ मोह का खेत जोता॥
भई जागीर तागीर हज़ूर से,
काल ने आय के लिहा पोता।
दास पलटू कहै पड़ा किस ख्याल में,
घरी पल पहर में कूच होता॥ 26॥

शब्दार्थ—जागीर= राजा एवं सरकार से मिला तालुका, भूमि या प्रदेश, रियासत। तागीर= तगादा, तकाजा, पावना मांगना। पोता= लगान, मालगुजारी।

भावार्थ—हे मित्र ! राम का नाम मत भूल, अन्यथा तू पुनः संसार-सागर में डूबेगा। तू रात-दिन काम और क्रोध के विकारों में लगा है। तू लोभ और मोह का खेत जोत रहा है। माना कि तुम्हारे पास जागीर है, माल-मुलुक है, किन्तु जब काल आ जायेगा तब हुजूर से मालगुजारी वसूल लेगा—सब कुछ छीन लेगा। पलटू साहेब कहते हैं कि हे अभिमानी ! तू किस ख्याल में पड़ा है? ध्यान रख, पल-घड़ी और पहर में संसार से प्रस्थान हो जायेगा।

6. अध्यात्म-प्रेम

रेखता-27

जाहि तन लगी है सोई तन जानि है,
जानि है वही सतसंग बासी।
कोटि औषधि करै बिरह ना जायेगा,
जाहि के लगी है बिरह गाँसी॥

नैन झरना बन्यौ भूख ना नींद है,
परी है गले बिच प्रेम फाँसी।
दास पलटू कहै लगी ना छूटि है,
सकल संसार मिलि करै हाँसी॥ 27॥

शब्दार्थ—बिरह= वियोग जनित पीड़ानुभव। गांसी= तीर आदि का फल, चुभने वाली बात।

भावार्थ—आत्मानुराग जिसके मन में लगता है, वही जानता है और वह वही होता है जो सत्संग में बसने वाला होता है। कोई करोड़ों उपाय करे उसे उसके निश्चय से हटा नहीं सकता है। जिसको आत्म-विस्मरणजनित पीड़ा है उसकी आंखों से झरने झरते हैं। उसे भूख और नींद नहीं लगती। उसके गले में तो आत्मस्थिति-प्रेम की फांसी लगी है। पलटू साहेब कहते हैं कि उसका आत्मानुराग छूट नहीं सकता है, भले संसार के सभी लोग मिलकर उसकी हंसी उड़ायें।

विशेष—अपना आत्म-अस्तित्व जड़ दृश्य से सर्वथा भिन्न है। मेरे आत्मा में जगत है ही नहीं। मैं अनादिकाल से शरीर को ही अपना स्वरूप मानता रहा। आज इसका ज्ञान हुआ। मैं अपने आप का विस्मरण कर दुख-कांतार में भटकता रहा, ऐसा ज्ञान हो जाने पर साधक संसार से उचाट हो जाता है। उसको आत्म-विस्मरण कांटे के समान चुभता है। वह सदैव स्वरूप में निमग्न रहना चाहता है। सारा जड़ दृश्य छूट जाने वाला है, परन्तु मेरा अपना आपा आत्मा मेरे से कभी छूटने वाला नहीं है। अतएव साधक सदैव आत्मानुराग में रहता है।

रेखता-28

गगन में मगन है मगन में लगन है,
लगन के बीच में प्रेम पागै।
प्रेम में ज्ञान है ज्ञान में ध्यान है,
ध्यान के धरे से तत्त जागै॥
तत्त के जगे से लगै हरि नाम में,
पगै हरि नाम सतसंग लागै।
दास पलटू कहै भक्ति अबिरल मिलै,
रहै निसंक जब भर्म भागै॥ 28॥

शब्दार्थ—अबिरल= सघन, निरंतर।

भावार्थ—साधक आकाश के समान मन को शून्य करके अपने आप में मग्न हो जाता है और इसी मग्नता में उसकी लगन लगी रहती है। इसी लगन में उसका प्रेम पकता है। इस प्रेम में आत्मज्ञान होता है। फिर उसमें ध्यान जम जाता है। जब ध्यान दृढ़ हो जाता है तब आत्मतत्त्व का साक्षात्कार होता है। जब आत्मसाक्षात्कार होता है तब साधक हरिनाम में लगता है। आत्मा ही हरि है और वह उसका गुणगान करने लगता है। जो आत्मचिंतन और आत्मचर्चा में पगता है वह सत्संग में अधिक दृढ़ता से लग जाता है। पलटू साहेब कहते हैं कि उसके आत्मानुराग की भक्ति अखंड हो जाती है। वह शंकाहीन होकर आत्ममग्न होता है। मनुष्य निश्शंक तभी होता है जब उसके मन से द्वैत का—परोक्ष का भ्रम मिट जाता है।

रेखता-29

कफन को बाँधि कै करै तब आसिकी,
आसिक जब होय तब नाहिं सोवै।
चिंता बिनु आगि के जरै दिन राति जब,
जीवत ही जान से सता होवै॥
भूख पियास जग आस की छोड़ करि
आपनी आपु से आप खोवै।
दास पलटू कहै इसक मैदान पर,
देइ जब सीस तब नाहिं रोवै॥ 29॥

शब्दार्थ—आसिकी= आशिक़ी= प्रेम, आशिक होना। आसिक= आशिक़, प्रेमी। इसक= इश्क़, प्रेम।

भावार्थ—सिर पर कफन बांधकर तब आत्मस्थिति के लिए अनुराग करे। जब आत्मलीनता के लिए प्रेमी हुआ, तब कहीं भी मोह-नींद न ले। सांसारिक चिंता की आग से सर्वथा रहित होकर ज्ञान की आग में रात-दिन मन के विकारों को जलावे। जीवतजान से मृत हो जाय—जीते जी अहंकार शून्य हो जाय। सांसारिक आशाओं तथा जगत-भोग की भूख-प्यास को त्यागकर अपने विवेक-बल से अपने दैहिक अहंकार को खो दे। पलटू साहेब कहते हैं कि आत्मस्थिति के अनुराग-संग्राम में जब अपना सिर दे दिया, तब कभी पीछे न हटे।

रेखता-30

प्रेम की घटा से बुंद परै पटापट,
गरज आकास बरसात होती।
गगन के बीच में कूप है अधोमुख,
कूप के बीच इक बहै सोती॥
उठत गुंजार है कुन्ज की गली में,
फोरि आकास तब चली जोती।
मानसरोवर में सहस दल कँवल है,
दास पलटू हंस चुगै मोती॥ 30॥

शब्दार्थ—घटा= बादल। गुंजार= ध्वनि। कुंज= लता, वनस्पति से ढका।

भावार्थ—प्रेम के बादल से टपाटप बूंदे गिरती हैं। आकाश में प्रेम के बादल गरजते हैं और अखण्ड वर्षा होती है। आकाश के बीच में एक नीचे मुख का कुंआ है। वहां पर स्रोत बहता है। लताओं से ढकी हुई गली में ध्वनि उठती है, फिर आकाश को फोड़कर एक ज्योति प्रकट होती है। मानसरोवर में एक हजार दलों का कमल है। पलटू साहेब कहते हैं कि वहां हंस मोती चुगते हैं।

विशेष—हठयोग में माना जाता है कि सिर के अंदर का पोल आकाश है। वहां नीचे मुख का कुंआ है, जहां से झरना बहता है। वहां से अनाहतनाद उठता है। वहां ज्योति प्रकट होती है। वहां हजार दलों का कमल है जहां हंस मोती चुनता है। वस्तुत: यह सब वैसे ही काल्पनिक है जैसे गुदा से लेकर सिर तक मूलाधार आदि अष्ट कमलों का वर्णन है। पोस्टमार्टम में देखा जा सकता है कि शरीर में यह सब कुछ नहीं है। यह सब हठयोगियों की कल्पना है। उसी में से कुछ छींट को लेकर मनमौजी संत पलटू साहेब ने अपनी बानी में कह डाला है।

सचाई यह है कि जब मन संसार से पूर्ण निष्काम हो जाता है तब अनन्त निर्भय सुख का अनुभव होता है। इसके लिए देह की गलियों की कल्पनाओं में नहीं घूमना है, अपितु समस्त जड़ दृश्य से निष्काम होकर अपने आप में शांत हो जाना है।

रेखता-31

होय रजपूत सो चढ़ै मैदान पर,
खेत पर पाँच पच्चीस मारै।

काम औ क्रोध दुइ दुष्ट ये बड़े हैं,
ज्ञान के धनुष से इन्हैं टारै॥
कूद परि जाइ कै कोट काया मँहै,
आगि लगाय के मोह जारै।
दास पलटू कहै सोई रजपूत है,
लेहि मन जीति तब आपु हारै॥ 31॥

शब्दार्थ—रजपूत=राजपूत, क्षत्रिय। मैदान=युद्ध का मैदान, साधना का क्षेत्र।

भावार्थ—वह असली क्षत्रिय है, जो साधना के रणक्षेत्र में चढ़े और पांचों ज्ञानेन्द्रियों तथा शरीर की पचीसों प्रकृतियों को अपने वश में कर ले। काम और क्रोध में ये दोनों बड़े दुष्ट हैं। इन्हें आत्मज्ञान के धन्वा-बाण से मार गिराये। इसके बाद काया-किला पर कूदकर चढ़ जाय और उसमें वैराग्य की आग लगाकर मोह को पूर्ण जला दे। पलटू साहेब कहते हैं कि वही सच्चा क्षत्रिय है जो अपने मन को जीत लेता है, वह स्वयं सबसे हार जाता है—सबसे नम्र होकर पूर्ण विवाद रहित हो जाता है।

रेखता-32

महा दल मोह पर संत जन चढ़े हैं,
फौज बिबेक तैयार कीन्हा।
ज्ञान निस्सान को चढ़े बजाय कै,
हरावल छमा घर घाट चीन्हा॥
भक्ति देवान आचाह पैदर बना,
बिराग असवार से घेर लीन्हा।
दास पलटू कहै मोह दल साफ भा,
तोप संतोष छोड़ाइ दीन्हा॥ 32॥

शब्दार्थ—निसान=निशान, पताका, डंका। हरावल=फौज के आगे चलने वाले पहरेदार, वह थोड़ी सेना जो फौज के आगे चलती है। देवान=दीवान, बड़ा सैनिक। पैदर=पैदल, योद्धा सिपाही, सैनिक। असवार=सवार, घोड़े-हाथी आदि पर चढ़े हुए सैनिक।

भावार्थ—मोह की महा सेना अंतःकरण में विद्यमान है। उससे युद्ध करने के लिए संत जन उस पर चढ़ाई कर देते हैं। इसके लिए वे विवेक की

सेना तैयार करते हैं। वे आत्मज्ञान का डंका बजा कर मोह दल को नष्ट करने के लिए उस पर टूट पड़ते हैं। उनकी विवेक-सेना के आगे क्षमा चलती है जो विवेक-सेना का रक्षक है। वह मोह के घर-घाट को—रंग-ढंग को जानती है। वहां भक्ति मुख्य सैनिक है, निष्कामता पैदल सैनिक है। वैराग्य अपने तेज सवारी पर चढ़ कर मोह को घेर कर उसका नाश करने लगता है। पलटू साहेब कहते हैं कि इस प्रकार विवेक की सेना ने मोह-दल को मारकर मैदान साफ कर दिया। जब विवेक ने संतोष का तोप चलाया तब सर्वत्र शत्रुओं पर विजय हो गयी।

विशेष—मोह-दल को जीतने के लिए विवेक, आत्मज्ञान, क्षमा, भक्ति, निष्कामता, वैराग्य, संतोष आदि ही सहायक हैं।

रेखता-33

खैंचि समसेर तब पैठु रनछेत्र में,
करै ना देर सोइ साधु बंका।
काम दल जारि कै क्रोध को मारि कै,
रहै निर्संक ना करै संका॥
मनराव को पकरि कै ज्ञान से जकरि कै,
छिमा दै ढाल गढ़ लेत लंका।
पलटू सोई दास कहँ सुन्न में बास तब,
गैब घर बैठि के देत डंका॥ 33॥

शब्दार्थ—समसेर=शमशीर, शमशेर, तलवार। बंका=बांका, उत्तम। मनराव=मन राजा। जकरिकै=बांधकर। गैब=अदृश्य, आत्मशांति। डंका=विजय का बाजा।

भावार्थ—वही उत्तम साधु है जो आत्मज्ञान की तलवार खींचकर शीघ्र ही मोह को मार डाले। काम की सेना को ज्ञानाग्नि में जलाकर और क्रोध को मारकर निर्भय हो जाय। फिर भय न रह जाय। मन-राजा को पकड़ ले, और उसे आत्मज्ञान के बंधन में बांध ले और क्षमा के ढाल पर शत्रु के सारे आघात को रोककर काया रूपी गढ़ लंका पर विजय कर ले। पलटू साहेब कहते हैं कि वही सद्गुरु का शिष्य मनोविकारों से शून्य स्थिति में निवास कर तथा इन्द्रियातीत स्वरूपस्थिति में बैठकर आत्म-विजय का डंका बजाता है।

रेखता-34

ज्ञान दल छोहनी भालु वानर लिहे,
चढ़ा है छिमागढ़ जाय लंका।
प्रेम हनुमंत जब चला है गरजि कै,
दिहा गढ़ लाय बजाय डंका॥
मोह समुद्र को बाँधि बिबेक से,
उतरि गइ फौज ना तनिक संका।
हंकार सुनि रावना भागु ना बचैगा,
दास पलटू संग बीर बंका॥ 34॥

शब्दार्थ—छोहनी= छोहिनी, अक्षौहिणी, चतुरंगिनी सेना का एक परिमाण या विभाग, इसमें 1,09,350 पैदल, 65,310 घोड़े, 21,870 रथ और इतने ही हाथी होते हैं। बंका= बांका, उत्तम।

भावार्थ—ज्ञानी संत रूपी राम ने आत्मज्ञान की विशाल वानर-भालू सेना जो अक्षौहिणियों में है, लेकर तथा क्षमागढ़ से कूचकर अहंकार रूपी रावण के लंका पर धावा बोल दिया। जब प्रेम रूपी हनुमान गर्जना करके चला तो उसने मोह गढ़ लंका को डंका बजाकर भस्म कर दिया। मोह-समुद्र को विवेक से बांधकर राम-सेना निर्भय होकर उतर गयी। विवेक रूपी रामादल की गर्जना सुनकर मोहरूपी रावण भागकर बच नहीं सकता। पलटू साहेब कहते हैं कि विवेक-सेना के बड़े उत्तम सैनिक हैं।

विशेष—विवेक, वैराग्य, क्षमा आदि के सामने मोह, अहंकार आदि टिक नहीं सकते।

रेखता-35

राज तन में करै भक्ति जागीर लै,
ज्ञान से लरै रजपूत सोई।
छमा तरवार से जगत को बसि करै,
प्रेम की जुज्झ मैदान होई॥
लोभ औ मोह हंकार दल मारि कै,
काम औ क्रोध ना बचै कोई।
दास पलटू कहै तिलकधारी सोई,
उदित तिहुलोक रजपूत सोई॥ 35॥

शब्दार्थ—जागीर= वैभव। जुज्झ= युद्ध। तिलकधारी= चक्रवर्ती सम्राट।

भावार्थ—जो भक्ति रूपी वैभव लेकर शरीर में राज्य करता है और आत्मज्ञान की तलवार लेकर मोह से लड़ता है वही क्षत्रिय है। क्षमा रूपी तलवार चलाकर संसार के लोगों को अपने वश में कर ले और संसार के मैदान में प्रेम का युद्ध करे—सबसे प्रेम करे। लोभ, मोह, अहंकार, काम, क्रोधादि की सेना को ऐसा मार दे कि उनमें से कोई बचने न पावे। पलटू साहेब कहते हैं कि वही राजतिलकधारी सम्राट है और वही तीनों लोकों में प्रकट क्षत्रिय है।

विशेष—कामादि को मारकर जो त्याग, क्षमाभाव तथा प्रेम व्यवहार से जीवन व्यतीत करता है, वही क्षत्रिय है।

रेखता-36

गुरु के भेद को पाइ कै सिकिल करु,
उसी के सबद में गरक रहना।
ज्ञान का ढोल बजाय चौगान में,
कफन को बाँधि मैदान चढ़ना॥
आपने ख्याल में मगन दिन राति रहु,
जगत के भरम को दूरि करना।
दास पलटू कहै मुक्ति होइ जायेगी,
गुरु के इसिम पर ठौर मरना॥ 36॥

शब्दार्थ—सिकिल= सिकली, हथियार मांजकर साफ करना। गरक= ग़रक़, डूबा हुआ, लीन, तन्मय। चौगान= मैदान। इसिम= इस्म, नाम, संज्ञा।

भावार्थ—हे साधक! सद्‌गुरु के सत्संग से जड़-चेतन का भेद जानकर विवेक द्वारा उसे निरंतर मांजो और सद्‌गुरु के निर्णय वचनों को प्राप्त कर स्वरूपज्ञान में ही निरंतर लीन रहो। स्वरूपज्ञान का ढोल मैदान में बजाकर खुला निर्णय करके तथा सिर पर कफन बांधकर मोह-राजा से युद्ध करो। सांसारिक मोह जो भ्रम मात्र है, उसे दूर कर रात-दिन आत्माराम के चिंतन में डूबे रहो। पलटू साहेब कहते हैं कि यदि सद्‌गुरु के नाम पर—उनसे आत्मबोध प्राप्त कर अपनी जगह पर मर जाओ, तो तुम्हारी मुक्ति हो जायगी।

विशेष—गुरु के नाम पर मर जाओ अर्थात गुरु से आत्मबोध प्राप्त कर, देहाभिमान छोड़ दो। बस, मुक्ति ही है। मन मर गया, मुक्ति हो गयी।

रेखता-37

सत्त को जीन संतोष लगाम है,
गुरु ज्ञान को पाखर जाय डारा।
बिस्वास रकाब में जुगति की एड़ दै,
पाँच पच्चीस मवास मारा॥
पवन का घोड़ा सुरति असवार है,
प्रेम की ढाल है मर्म भाला।
बिबेक देवान इन्साफ पर बैठि कै,
मुक्ति को कैद जंजीर डाला॥ 37॥

शब्दार्थ—जीन=घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी, चारजामा काठी। पाखर=लड़ाई के हाथी-घोड़े की रक्षा के लिए उन्हें पहनायी जाने वाली लोहे की झूल। रकाब=घोड़ों की काठी का पावदान जिसमें पैर डालकर बैठने में सहारा लेते हैं। मवास=गढ़, दुर्ग।

भावार्थ—सत्य का जीन है, संतोष की लगाम है, गुरु का दिया हुआ आत्मज्ञान पाखर है, विश्वास का रकाब है, युक्ति का एड़ दिया और पांच-पचीस इन्द्रिय-प्रकृति के गढ़ पर विजय किया। पवन का घोड़ा है, मनोवृत्ति सवार है, प्रेम की ढाल और आत्मज्ञान के रहस्य का भाला है, विवेक न्याय करने वाला दीवान है। उसने जड़-चेतन-निर्णय रूप न्याय की गद्दी पर बैठकर मुक्ति को ऐसा अपना बना लिया जैसे किसी के पैर में जंजीर डाल कैद कर अपने पास रख लिया हो।

विशेष—जिसके जीवन में सत्य, संतोष, आत्मज्ञान, आत्मविश्वास, युक्ति, विवेक और न्याय है, वह सदा मुक्त है।

रेखता-38

ज्ञान समाज में जाय बैठे जबै,
कामदेव जाय तरवार झारी।
माया मोह का घोड़ा दौड़ावता,
संग लिये फौज मृग-नैनि नारी॥
वो तो भागि के दसवें द्वार लुका,
रिसियाय के हमने तान मारी।

पलटू जब ज्ञान समसेर खैंची,
तब कामदेव की फौज हारी॥ 38॥

शब्दार्थ—समसेर= शमशीर, शमशेर, तलवार।

भावार्थ—जब साधक ज्ञान के समाज में–साधना में बैठता है, तब काम–वासना वहां अपनी तलवार चमकाती है। वह उस समय माया–मोह का घोड़ा दौड़ाती है और मृगनयनी नारी का स्मरण करवाती है फिर भागकर दसवें द्वार में छिप बैठती है। मैंने उस पर क्रोध से तानकर तलवार चला दी। पलटू साहेब कहते हैं कि जब मैंने आत्मज्ञान की तलवार चलाई तो कामदेव की सेना मारी गयी।

विशेष—साधना की कच्ची अवस्था में साधक के मन में विषय-वासनाएं आती हैं, परन्तु जब वह निरंतर साधना द्वारा परिपक्व हो जाता है, तब वासनाएं समाप्त हो जाती हैं और साधक प्रशांत दशा में हो जाता है।

दसवां द्वार सिर का तालुमूल माना है। वासना वहां जाकर छिपती है, यह कथन की एक विधा है। वस्तुतः वासनाएं मन में ही रहती हैं। वे कभी प्रकट होती हैं और कभी अप्रकट। जब अखंड वैराग्य की स्थिति आती है, तब वासनाएं नष्ट हो जाती हैं।

8. संतोष परम सुख है

रेखता-39

गुरु जो दिया है सोई तू लिये रहु,
उसी में बहुत बिस्वास करना।
होयगा बहुत फिरि सबद जो लगेगा,
चित्त को चेति कै ध्यान धरना॥
चतुर जो होयगा करैगा कसब को,
बुंद ही बुंद सामुद्र भरना।
दास पलटू कहै सिफत हैं सुरति की,
और कोइ ख्याल में नाहिं परना॥ 39॥

शब्दार्थ—कसब=कस्ब, धनोपार्जन, तात्पर्य में अभ्यास। सिफत= सिफ़त, विशेषता, गुण। सुरति=मनोवृत्ति।

भावार्थ—हे साधक ! सद्गुरु ने जो तुम्हें स्वरूपबोध दिया है, उसी को ठीक से सम्हालकर रखे रहो। उसी में पूर्ण विश्वास करो। यदि सद्गुरु के निर्णय वचन तुम्हारे दिल में चोट कर गये, तो तुम्हारा ज्ञान पूरा हो जायेगा। तुम गुरु के ज्ञान को लेकर अपने मन में सावधान हो जाओ और स्वस्वरूप का ही अनुसंधान करो। जो समझदार होगा, वह गुरु से आत्मबोध पा जाने पर उस पर अभ्यास करेगा, अंतर्मुखता की कमाई करेगा। जैसे बूंद-बूंद से समुद्र भर जाता है, वैसे निरंतर अभ्यास करते-करते साधक पूर्ण अंतर्मुख होकर तथा मनोमय जगत से परे होकर प्रपंचशून्य आत्मा में लीन हो जाता है। पलटू साहेब कहते हैं कि मनोवृत्ति की विशेषता है कि वह जब अंतर्मुख हो जाती है तब पूरा काम बन जाता है। अतएव ऐ साधक ! स्वरूपस्थिति के अतिरिक्त विचार में नहीं रहना।

रेखता-40

संतोष के धरे से खाय गज पेट भरि
स्वान इक टूक को केतिक धावै।
संत की वृत्ति अजदहा की चाहिए,
चले बिनु फिरे आहार पावै॥
सिंह आहार को करत है सहज में,
स्यार दस बीस घर मूड़ नावै।
दास पलटू कहै और कछु ना करै,
भक्ति कै मूल संतोष लावै॥ 40॥

शब्दार्थ—गज= हाथी। अजदहा= अजगर, सर्प।

भावार्थ—हाथी संतोष करके एक जगह खड़ा रहता है और वह पेट भर खाने को पाता है, परन्तु कुत्ता रोटी के एक टुकड़े के लिए कितने ही द्वारों पर दौड़ता है। संत की वृत्ति अजगर की चाहिए। अजगर एक जगह पड़ा रहता है, परन्तु उसे वहीं अपनी खुराक मिल जाती है। संत साधना करे, भोजन की चिंता न करे। वह सहज ही मिल जायेगा। सिंह अपना भोजन सहज ही प्राप्त करता है, किन्तु सियार दस-बीस जगह मूड़ मारता है। पलटू साहेब कहते हैं कि साधक जीवन-निर्वाह की चिंता न करे। वह अपनी श्रेणी के अनुसार अपना कर्तव्य करता रहे और यह समझे कि भक्ति एवं आध्यात्मिक साधना में संतोष परम आवश्यक है।

रेखता-41

दृष्टि कच्छप केरी ध्यान जो लाइये,
अंडा सुरति से सेइ आवै।
तार मकरी गहे उतरि कै आवती,
उलटि के तार गहि फेरि जावै॥
चेटुका गिरा ज्यों अलल के पच्छ का,
जमी पर बीच में उलटि धावै।
दास पलटू कहै भृंगी ज्यों कीट को,
देत जियाइ त्यों चित्त लावै॥ 41॥

शब्दार्थ—कच्छप= कछुआ। चेटुका= बच्चा।

भावार्थ—जैसे मादा कछुआ अपने अंडे पानी से अलग जगह पर देकर अपनी सुरति से उनका ख्याल रखती है तथा सेवन करती है। मकड़ी अपने बनाये तार पर एकाग्रता से चढ़ती-उतरती रहती है। अलल पक्षी अपने अंडे उड़ते-उड़ते देती है और उसके बच्चे जमीन पर न गिरकर उलटकर आकाश में उड़ जाते हैं। भंवरा जैसे मरे हुए कीड़े को अपने शब्द सुनाकर जिला देता है, पलटू साहेब कहते हैं कि वैसे साधक अपनी मनोवृत्ति अंतर्मुख कर एकाग्रता से आत्मलीनता की साधना करे।

विशेष—भृंगी कीट का उदाहरण चलता है। वैसे मृत कीड़े को भंवरा जिला नहीं सकता। अलल पक्षी के अंडे का भी उदाहरण चलता है। वह कितना सच है, कहा नहीं जा सकता। खास बात है कि साधक तन्मयता से अंतर्मुख होने का काम करे।

9. कल्याणकारी उपदेश

रेखता-42

आतम सोई उपाधि का मूल है,
काम औ क्रोध फल फूल लागा।
लोभ औ मोह बहु भाँति साखा चली,
डार औ पात उठि कर्म जागा॥
संजम कुल्हारी से पेड़ को काटि कै,
डार औ पात सब सूखि जागा।

दास पलटू कहै मूल ना सीचिये,
बिना जल दिहे सब रोग भागा॥ 42॥

शब्दार्थ—आतम=आत्मा, तात्पर्य में अपने आप की भूल, स्वरूप की भूल। उपाधि= धोखा, दुख। संजम= संयम।

भावार्थ—अपने स्वरूप की भूल सभी दुखों की जड़ है। उसी में काम-क्रोधादि के फूल-फल लगते हैं। फिर लोभ-मोहादि अनेक शाखाएं फूटती हैं और उनमें कर्म के पत्ते जगते हैं। संयम की कुल्हाड़ी से स्वरूप-भूल का पेड़ काट देने से उसके डार-पात सब सूख जाते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि भव-वृक्ष का मूल है स्वरूप-भूल एवं आत्मविस्मरण। उसको साधक अपनी मनोवृत्ति से न सींचे तो जैसे जल से सींचे बिना पौधे सूख जाते हैं, वैसे अपने मन के रागात्मक स्मरण पाये बिना भव-वृक्ष सूख जायेगा।

रेखता-43

एक ही फाँस में बझे तिहुँ लोक सब,
बझे तिहुँ लोक इक संत छूटे।
एक ही रास्ता कर्म का बड़ा है,
गये उस राह को सभै लूटे॥
राह झाड़ी मँहै प्रेम के औघटे,
गये बचि संत नहिं रोम टूटे।
दास पलटू कहै संत की राह तजि,
कर्म की राह गे कर्म फूटे॥ 43॥

शब्दार्थ—फांस= फांसी, बंधन। प्रेम=मोह। औघटे= दुर्गम मार्ग, कठिन रास्ता।

भावार्थ—संसार के सारे मनुष्य एक ही रागात्मक कर्म की फांसी में फंसे हैं। इससे कोई निर्मोही संत छूटता है। एक ही रागात्मक कर्म का बड़ा रास्ता है। जो भी इस राह में चले, उन सबका आध्यात्मिक धन लुट गया। संसार का मोह कंटीला झाड़ी-झंखार और दुर्गम मार्ग है। संत इनसे अपने को बचा लेते हैं। उनका एक रोम भी नहीं टूटता—वे थोड़ा भी दुखी नहीं होते। पलटू साहेब कहते हैं कि जो मनुष्य संत का निर्मोह रास्ता छोड़ देता है और रागात्मक कर्म के रास्ते पर चलता है, उसके कर्म फूटे हैं।

रेखता-44

छोड़ि बेकाम को काम करु आपना,
गफलत माँहै दिन जात बीता।
धोख धन्धा करै मरै सिर पटकि कै,
राम के नाम से रहा रीता॥
ब्याज बट्टा मँहै लगा दिन रात तूँ,
चला तन हारि ब्योहार जीता।
दास पलटू कहै याद करु याद करु,
बोल बे बालके राम सीता॥ 44॥

शब्दार्थ—रीता= खाली।

भावार्थ—हे मनुष्य ! मोह-माया बढ़ाने का निरर्थक काम छोड़कर अपने आत्मकल्याण का काम करो। तेरे सारे दिन असावधानी में बीते जाते हैं। मोह-माया बढ़ाना रूप धोखे का धंधा करता है और चिंता-शोक में पड़कर सिर पटक-पटक मरता है। राम-नाम भी नहीं लेता। तू रात-दिन ब्याज-बट्टा का धंधा करके धन बढ़ाने में लगा है। सांसारिक व्यवहार में अपने को विजयी मानकर मानव-जीवन के कर्तव्य कल्याण-साधना को हार गया। पलटू साहेब कहते हैं कि हे मनुष्य ! तू अपने कल्याण-साधना की याद कर। ऐ बालक ! राम-सीता कह !

रेखता-45

पुन्न जो करै सो पुन्न को पाइहै,
पुन्न भे छिन्न मृत लोक आवै।
करम को जीव सो सदा करमै मँहै,
जनम औ मरन फिरि करम पावै॥
पड़ा वह रहै चौरासी के फेर में,
चौरासी को छोड़ि वह कहाँ जावै।
दास पलटू कहै द्वार दसएँ केरी,
राह में जाय सो मुक्ति पावै॥ 45॥

शब्दार्थ—छिन्न= क्षीण होने पर।

भावार्थ—जीव पुण्य कर्म करता है तो उसका फल उसे सुख मिलता है, परन्तु कर्मभोग समाप्त होने पर जीव मृत्युलोक में भटकता ही है। कर्म करने वाला जीव सदैव उसके शुभाशुभ फलों के भोगों में जन्मता-मरता है और बारम्बार कर्म करता है। कर्मी जीव चौरासी योनियों के चक्कर में ही पड़ा रहता है। वह उसे छोड़कर कहां जा सकता है? पलटू साहेब कहते हैं कि जब जीव दसवें द्वार में पहुंचता है तब वह जन्म-मरण के बधंन से मुक्त होता है।

विशेष—कुछ पुराने साधकों की मान्यता है कि सिर के तालुमूल में एक बारीक छिद्र है। वहां सदैव ध्वनि होती है। जो साधक उसके सुनने एवं साधना में लीन होता है, वह शरीर छोड़ते समय उसी द्वार से निकलता है, वही मुक्त होता है। परन्तु यह धारणा भावुकता ही है। मुक्ति है जगत-वासना छोड़कर आत्मलीनता। मन के क्षेत्र से उठकर स्वरूपलीनता मोक्षदशा है।

रेखता-46

दास कहाइ कै आस ना कीजिये,
आस जो करै सो दास नाहीं।
प्रेम तो एक जो लगा संसार में,
भक्ति गइ दूरि अब जक्त माहीं॥
चाहिए भक्ति को जक्त से तोरिये,
जोरिये जक्त से भक्ति जाही।
दास पलटू कहै एक को छोड़ि दे,
तरवार दुइ म्यान इक नाहिं चाही॥ 46॥

शब्दार्थ—दास कहाइ= सद्गुरु का शिष्य होकर।

भावार्थ—सद्गुरु का शिष्य कहलाकर सांसारिक भोगों की आशा न करो। जो सांसारिक भोगों की आशा करता है, वह सद्गुरु का शिष्य नहीं है। मन तो एक है। जब उसका प्रेम संसार में लगेगा तब भक्ति का प्रेम दूर हो जायेगा। वह जगत-वासना में ही डूब जायेगा। यदि भक्ति करना चाहते हैं तो मन को जगत से हटा लीजिए। यदि मन जगत के राग-रंग में जोड़ते हैं तो भक्ति नहीं चल सकती। पलटू साहेब कहते हैं कि भोग या भक्ति, दोनों में से एक को छोड़ना पड़ेगा। एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं।

विशेष—यहां भक्ति का अर्थ है—स्वस्वरूपानुसंधानम् भक्तिरित्यभि-धीयते। स्वस्वरूप का अनुसंधान भक्ति कहलाती है। 'भक्ति न जाने भक्त कहावै, तजि अमृत विष कैलिन सारा।'

रेखता–47

गाय बजाय के काल को काटना,
और की सुनै कछु आपु कहना।
हँसना खेलना बात मीठी कहै,
सकल संसार को बस्सि करना॥
खाइये पीजिये मिलै सो पहिरिये,
संग्रह त्याग में नाहिं परना।
बोलु हरि भजन को मगन ह्वै प्रेम से,
चुप्प जब रहौ तब ध्यान धरना॥
भेष भगवन्त के चरन को ध्याइ कै,
ज्ञान की बात से नाहिं टरना।
मिलै लुटाइये तुरत कछु खाइये,
माया औ मोह को ठौर मरना॥
दुक्ख और सुक्ख फिरि दुष्ट औ मित्र को,
एक सम दृष्टि इक भाव भरना।
दास पलटू कहै राम कहु बालके,
राम कहु राम कहु सहज तरना॥ 47॥

शब्दार्थ—ध्याइ कै= ध्यान करके।

भावार्थ—जब संत मिलें तब ज्ञान का गीत गाकर-बजाकर, दूसरे की सुनकर और अपना कहकर समय व्यतीत करो। हंसो, खेलो, मीठी बातें करो और अपने प्रेम-बरताव से साथियों तथा मिलने वालों को प्रसन्न रखो। जो कुछ मिले खाओ, पीयो, पहनो किन्तु संग्रह के मोह और त्याग के अहंकार में मत पड़ो। प्रेम से मग्न होकर हरिभजन गाओ और जब मौन होओ, तब ध्यान धारण करो। भेष-भगवान—साधुओं के चरणों का ध्यान करके रहना और आत्मज्ञान की बातों से कभी विचलित नहीं होना। जो कुछ मिले खाइये और

तुरन्त अन्य की सेवा में लगाइए। माया-मोह मन में आवे तो उसे उसी समय विवेक से मार दीजिए। दुख-सुख, शत्रु-मित्र में समता रखकर समान भाव से जीवन व्यतीत करो। पलटू साहेब कहते हैं, हे बालक ! राम कहो, राम कहो, राम कहो और संसार-सागर से सहज रहनी रखकर तर जाओ।

रेखता-48

तन मन धन सब आनि आगे धरै,
तेहू को नाहिं इतबार कीजै।
ज्ञानी औ चतुर को सबद ना दीजिये,
माया के जीव से सबद छीजै॥
जहाँ गौं मिला फिरि उलटि फिरि जायगा,
प्रीति कितनो करै परखि लीजै।
दास पलटू कहै प्रेमी जो सबद का,
तेहू को परखि कै सबद दीजै॥ 48॥

शब्दार्थ—गौं= दावं, अवसर।

भावार्थ—जो लोग शास्त्रों के ज्ञानी और बुद्धि के निपुण हैं, ऐसे लोगों को आत्मज्ञान के उपदेश देने के चक्कर में मत पड़ो। ऐसे लोग अपने तन, मन, धन सर्वस्व तुम्हारे चरणों में अर्पित करें, तो भी उन पर विश्वास न करो। जो मायावी जीव हैं, उनको उपदेश करने से उपदेश निष्फल जाता है। चतुर-चालाक लोग जहां अपना दावं देखेंगे, वे तुम्हारे उलटे हो जायेंगे, तुम्हारी निन्दा करने लगेंगे। ऐसे लोग तुमसे चाहे जितना प्रेम करें उनको परखने का प्रयत्न करो। पलटू साहेब कहते हैं कि जो निर्णय के प्रेमी हों, उनको भी परखकर उनकी स्थिर समझ जानकर उन्हें ज्ञानोपदेश करो।

रेखता-49

होहु सिष बालके काम करु बूझि कै,
कुबुधि को देखि कै दूरि भागौ।
बात है काम की बुरा ना मानिये,
कनक औ कामिनी दूरि त्यागौ॥
प्रीति ना कीजिये मोह में परहुगे,
छोड़ि कुसंग सतसंग लागौ।

दास पलटू कहै कर्म को मेटि कै,
सीस पर सबद कै दाग दागौ॥ 49॥

शब्दार्थ—सिष=शिष्य।

भावार्थ—हे प्यारे बच्चो ! सद्गुरु के शिष्य बनो, परंतु ठीक से समझ-बूझकर साधना करो। जो मनुष्य दुर्बुद्धि वाले हों, उनको समझकर उनसे दूर हट जाओ। मैं बड़े काम की बात कहने जा रहा हूं, बुरा मत मानना, कनक-कामिनी से भागकर उनसे दूर हट जाओ। ध्यान रखो, किसी से अधिक प्रेम न करो, अन्यथा मोह के जाल में पड़ जाओगे। अतएव कुसंग त्यागकर सत्संग में लगो। पलटू साहेब कहते हैं कि सारे रागात्मक कर्म त्यागकर अपने मन में निर्णय शब्दों को दृढ़ कर लो।

रेखता-50

कूद बे बालके कहर दरियाव में,
जीव की लालचै छोड़ु भाई।
ताकना नाहिं अब स्यार से सिंह ह्वै,
गुरु के चरन में चित्त लाई॥
आखिर धौं मरेगा कूद झड़ाक से,
कूदने सेती ना गम्य खाई।
तुझे क्या लाज है लाज है उसी को,
उसी के सीस दे भार नाई॥
बार ना बाँकिहै छोड़ु डगमगी को,
तनिक बिस्वास करु एक राई।
दास पलटू कहै कहर की लहर से,
बचैगा सोई जो कूदि जाई॥ 50॥

शब्दार्थ—कहर=क़हर, विपत्ति, आफत, मृत्यु। दरियाव=दरिया, नदी, समुद्र। धौं=भला। गम्य=ग़म, दुख, चिंता, परवाह।

भावार्थ—अबे बालक ! मृत्यु के समुद्र में कूद पड़। हे भाई ! जीने का लोभ छोड़ दे। अब तू सियार से सिंह हुआ है—सामान्य मनुष्य से साधक हुआ है। दुविधा में मत पड़। सद्गुरु की चरण-भक्ति में मन लगा। सोच भला, अंत में तो तू मरेगा ही, इसलिए आज ही मृत्यु के सागर में भड़ाक से

कूद जा। कूदने में परवाह मत कर। तुम्हें क्या लज्जा पड़ी है? तेरी लाज तो तेरे सद्गुरु को है। वह तुझे सम्हालेगा। अपना शीश उसी के चरणों में अर्पित करके अपना सारा भार उसी को दे दे। तू मन की डगमगाहट छोड़ दे। तेरा बाल भी बांका नहीं होगा। जरा, तू थोड़ा-सा एक रत्ती विश्वास तो कर। पलटू साहेब कहते हैं कि कहर की लहर से वही बचेगा जो कहर के सागर में बेझिझक कूद जायेगा।

विशेष—साधक मरने से डरे तो वह साधक कैसा? सारा अहंकार त्याग देना मरना है। जीने की इच्छा का त्याग उसमें सहज ही हो जाता है। जो जीने की इच्छा त्याग देता है, वह अमर आत्मा में स्थित हो जाता है, जो साधक शरीर में रहते हुए सब समय मन से शरीर त्यागे रहता है, वह सदा निर्भय अमृत रूप है।

रेखता-51

काछ जो काछिये नाच सोइ नाचिये,
काछ बिनु नाच ना तनिक भावै।
बाना है सिंह को चाल है सियार की,
रहा वह स्यार नहिं चाल पावै॥
भेष धरे हंस सुभाव है काग को,
हंस जब होय सुभाव जावै।
दास पलटू कहै काछ तो नाचि ले,
कथनी रहनी इक घाट आवै॥ 51॥

शब्दार्थ—काछ=पेड़ू और जांघ का जोड़, तात्पर्य में पहनाव, वेष। नाच=हाथ फैलाकर नाचना; तात्पर्य में आचरण, बरताव। बाना=वेष, पहनाव।

भावार्थ—जो वेष पहनो, वैसा आचरण करो। पवित्र आचरण के बिना वेष शोभा नहीं पाता। वह थोड़ा भी अच्छा नहीं लगता। वेष है साधु का और आचरण करता है मलिन, तो वह सिंह नहीं हो जायेगा, अपितु सियार ही रहेगा। आचरण के बिना वेष क्या करेगा? वेष तो हंस का धारण कर लिया और स्वभाव है कौआ का, तो वह नीर-क्षीर-विवेक न करके गंदगी पर मुंह मारेगा। जब वह हंस होगा, तब कौआ का स्वभाव छूटेगा। पलटू साहेब कहते हैं कि यदि तूने साधु का वेष धारण किया है, तो साधु-रहनी में रह। तब कथनी और करनी एक रास्ते पर आयेंगी।

रेखता–52

नाचना नाचु तो खोलि घूँघट कँहै,
खोलि के नाचु संसार देखै।
खसम रिझाव तो ओट को छोड़ि दे,
भर्म संसार को दूरि फेकै॥
लाज किसकी करै खसम से काम है,
नाचु भरि पेट फिर कौन छेकै।
दास पलटू कहै तुहीं सोहागिनी,
सोव सुख सेज तू खसम एकै॥ 52॥

शब्दार्थ—खसम= पति, स्वामी, आत्मा। ओट= परदा, झिझक। छेके= रोकेगा। सोहागिनी= पति वाली।

भावार्थ—हे मनोवृत्ति ! यदि नाचना है तो घूंघट खोलकर नाच—साधना करना है तो मोह-माया तथा लज्जा त्यागकर साधना कर। परदा खोलकर नाच, जिससे संसार के लोग देखें। यदि आत्मलीनता चाहे, तो अविद्या का परदा दूर कर दे और संसार की मोह-माया तथा लज्जा-शर्म का भ्रम दूर फेंक दे। तुझे संसार से क्या डरना है? तेरा काम तो आत्मलीनता से है। अतएव तू पूर्णरूप से आत्मलीनता की साधना कर, फिर तेरे को कौन रोक सकेगा। पलटू साहेब कहते हैं कि हे साधक की मनोवृत्ति, तू ही पति वाली होगी। तू अपने आत्मा रूपी पति से अभिन्न होकर सुख की शय्या पर सो जा—आत्मलीन हो जा।

रेखता–53

सुंदरी पिया की पिया को खोजती,
भई बेहोस तू पिया के कै।
बहुत सी पद्मिनी खोजती मरि गयीं,
रटत ही पिया पिया एक एकै॥
सती सब होत हैं जरत बिनु आगि से,
कठिन कठोर वह नाहिं झाँकै।
दास पलटू कहै सीस उतारि कै,
सीस पर नाचु जो पिया ताकै॥ 53॥

शब्दार्थ—सुंदरी= मनोवृत्ति। पिया= आत्मा। पद्मिनी= चार लक्षण वाली स्त्रियों में प्रथम, मनोवृत्ति।

भावार्थ—आत्मा की पत्नी मनोवृत्ति आत्मा को खोजती है; परन्तु हे मनोवृत्ति! तू आत्मा को छोड़कर अनेक पतियों की कल्पना करके अपने आत्मा-पति से अचेत हो गयी है। बहुत-सी उत्तम मनोवृत्तियां पति की खोज में थकित हो गयीं, परन्तु वे आत्मा से विमुख होकर अनेक पतियों की रट लगाये रह गयीं। सच्ची सती वह है जो बिना आग के प्रेम-विरह में जलती है। वह साधना की कठोरता की परवाह नहीं करती। पलटू साहेब कहते हैं कि हे मनोवृत्ति! अपने सिर को उतारकर जमीन पर रख दे ओर उसी पर चढ़कर नाच, तब पति तेरी तरफ दृष्टि फेरेगा।

विशेष—जब बोध हो कि आत्मा ही परमात्मा है और उसकी स्थिति प्राप्त करने के लिए देहाभिमान छोड़कर साधना में लगे, तब आत्म-साक्षात्कार होगा।

रेखता-54

जक्त के नाथ की जागती कला है,
रहै सब माहिं कोइ नाहिं जानै।
मरै सिर पटकि कै भटक से आपनी,
संत के बचन को नाहिं मानै॥
मोह औ माया से बीच परि गया है,
करम के बंध से भरम आनै।
दास पलटू कहै जीव सब वही है,
बेद बेदांत में खोजि छानै॥ 54॥

शब्दार्थ—जागती कला= चेतना, ज्ञान। भरम आने=भ्रम करता है। वही=ब्रह्म, परमात्मा।

भावार्थ—संसार के स्वामी की चेतना ही कला है। वह सबके शरीर में बैठा है, परन्तु कोई इस तथ्य को समझ नहीं पाता है। मनुष्य अपने स्वरूप की भूल से बाहर ईश्वर खोज-खोज कर भटक-भटक मरता है। वह विवेकवान संतों के वचनों को नहीं मानता है। जड़दृश्य की मोह-माया अपने आत्मबोध में आड़ा हो गयी है। सब जीव कर्म-बंधन में पड़े हैं, इसलिए भ्रमित हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि सब जीव वही ब्रह्म एवं परमात्मा ही हैं। यह सत्य वेद-वेदांत से भी छानकर निश्चित हुआ है।

रेखता-55

मुद्दा को पाइ कै करम को त्यागिये,
बिना मुद्दा नहीं करम त्यागै।
बस्तु को पाइ संसार तब छोड़िये,
गये दोउ दिसा से भीख माँगै॥
करम निःकरम यह दोऊ मति सार है,
बीच माँहि बहै तो कहाँ लागै।
दास पलटू कहै दोऊ को बूझि कै,
मरद जो होइ सो निकरि भागै॥ 55॥

शब्दार्थ—मुद्दा = मुद्दआ, उद्देश्य, लक्ष्य, गोल।

भावार्थ—आत्मा ही अपना परम तत्त्व है और उसमें लीनता ही जीवन का मुख्य उद्देश्य है, जब यह तथ्य निर्धारित हो जाय, तब कर्मों का त्याग करे। बिना आत्मलीनता उद्देश्य समझे कर्मों का त्याग न करे। जब स्वरूप-बोध रूपी अपनी वस्तु मिल जाय, तब संसार का त्याग करे। यदि आत्मबोध हुए बिना संसार का त्याग किया तो वह स्वरूपस्थिति तथा गृहस्थी के शुभ कर्म दोनों तरफ से जायगा और संसार की कामनाओं में भटकता फिरेगा। गृहस्थी में रहकर शुभ कर्म करना और विरक्त होकर कर्मों से ऊपर उठकर निष्काम पद स्वरूपस्थिति में ठहर जाना, ये दोनों मत अपनी-अपनी जगह पर ठीक हैं। यदि इन दोनों को छोड़कर कोई बीच में बहेगा, तो कहां ठहरेगा? पलटू साहेब कहते हैं कि हे साधक! दोनों को समझ ले और यदि त्याग में वीर है तो गृहस्थी छोड़कर भाग खड़ा हो।

रेखता-56

सुरति ताना करै पवन भरनी भरै,
माँड़ी प्रेम अँग अँग भीनै।
तत्तु फुलाय कै ज्ञान का कूच लै,
गुढ़ी छूटि जाय तब रहै झीनै॥
सुषमना राछ बैराग लपेटना,
सबद ढरकी चलै नाहिं छीनै।

तन करगह करै नरी तुरिया भरै,
दास पलटू सिरी साफ बीनै॥ 56॥

शब्दार्थ—सुरति= मनोवृत्ति। पवन= प्राणवायु। तत्तु= तत्त्व, जड़-चेतन। कूच= कूंचा। गुढ़ी= गुरची, ऐंठन, गांठ। सुषमना= सुषुम्ना, सुषुम्णा, ईडा और पिंगला के बीच की नाड़ी। राछ= ताने के तागे को उठाने-गिराने का औजार। ढरकी= जुलाहों का वह औजार जिससे वे बाने का सूत फेंकते हैं, भरनी। सिरी= ढरकी; करघा।

भावार्थ—मनोवृत्ति को ताना बना के, प्राणवायु को भरनी करे और प्रेम की मांड़ी चढ़ाकर अंग-अंग में भिगा दे। जड़-चेतन का निर्णय विकसित करके ज्ञान के कूच से साफ करे जिससे ग्रंथियां छूट जायं और झीना आध्यात्मिक वस्त्र बुने। सुषुम्णा को राछ बनावे, वैराग्य का लपेटना बनावे और निर्णय शब्दों की न क्षीण होने वाली ढरकी बनावे। शरीर को करघा बनावे और तुरिया को सूत की नरी बनावे। पलटू साहेब कहते हैं, तब करघा साफ कपड़े बीनेगा।

विशेष—प्राणायाम, मनोवृत्ति की स्थिरता, प्रेम, जड़-चेतन निर्णय, आत्मज्ञान, वैराग्य, निर्णय शब्दों का आदर आदि से आध्यात्मिक उन्नति होती है।

रेखता-57

तेल का कसब तमोली जो सीखेगा,
तेल से पान को दूरि त्यागै।
निरगुनी सरगुनी कसब दुइ जगत में,
आपने कसब में दोऊ जागै॥
बूझना नाहिं है और के कसब को,
और के कसब से दूरि भागै।
दास पलटू कहै कसब करु आपना,
और के कसब में आगि लागै॥ 57॥

शब्दार्थ—कसब= कस्ब, उपार्जन, धंधा, व्यवसाय।

भावार्थ—पान का धंधा करने वाला तमोली यदि तेल का धंधा सीखेगा तो उसके पान के धंधे में घाटा होगा। उसे चाहिए कि वह पान को तेल से दूर रखे। संसार में निर्गुण और सगुण दो उपासनाओं का धंधा है। दोनों अपने-

अपने धंधे में सावधान रहें। दूसरे के धंधे को समझने की आवश्यकता नहीं है अपितु दूसरे के धंधे से दूर भाग जाय। पलटू साहेब कहते हैं कि अपना धंधा करो। दूसरे के धंधे से क्या प्रयोजन !

विशेष—अपनी-अपनी उपासना में चले। दूसरे की उपासनाओं की टीका-टिप्पणी में न पड़े। हां, किसी को अन्य की उपासना सही लगे तो उसे समझकर उसी की उपासना में लग जाय।

10. साधु वेष को चेतावनी

रेखता-58

गुरु का सबद दोउ कान में मुद्रिका,
उनमुनी तिलक सिर तत्त ताखी।
प्रेम का चोलना सत्त सेल्ही बनी,
मान कौ मर्दि कै करै खाखी॥
संतोष खुराक बिबेक की फावड़ी,
हरि नाम के अमल को रहै चाखी।
दास पलटू कहै होय बिज्ञान जब,
बेद कुरान सब भरैं साखी॥ 58॥

शब्दार्थ—सेल्ही=ऊन आदि की माला। खाखी=मिट्टी, धूल, राख।

भावार्थ—गुरु के निर्णय शब्द दोनों कानों की मुद्रिका है, संसार से विरक्ति माथे का तिलक है, तत्त्व-विचार दृष्टि है, प्रेम का अंगरखा है, सत्य की माला है, अभिमान का त्याग खाक लगाना है, संतोष भोजन है, विवेक की फावड़ी है और हरिनाम की आदत का रसपान है। पलटू साहेब कहते हैं कि जब आत्मसाक्षात्कार होता है तब उसकी प्रामाणिकता वेद-पुराण भी सिद्ध करते हैं।

रेखता-59

यार फक्कीर तू परा किस ख्याल में,
पाँच पच्चीस सँग तीस नारी।
एक तुम छोड़िया तीस ठो संग में,
होत अस ज्ञान से नर्क भारी॥

तीस के कारणे भीख तू माँगता,
एक ने कवन तकसीर पारी।
दास पलटू कहै खेल यह ना बदो,
छुटै जब तीस तो छोड़ प्यारी॥ 59॥

शब्दार्थ—ठो=संख्यावाचक शब्द, अदद। तकसीर=त्रुटि; अपराध। न बदो=न निश्चय करो।

भावार्थ—ऐ मित्र त्यागी! तू किस विचार में है? तेरे साथ की पांच ज्ञानेन्द्रियों और पचीस प्रकृतियों की गंदी आदतें नहीं गयी हैं। ये तीसों स्त्रियां तेरे साथ लगी हैं। तुमने केवल एक स्त्री छोड़ी, किन्तु तीस स्त्रियों का राग नहीं गया है। तुमने एक छोड़ा किंतु तीस का राग नहीं छोड़ा। ऐसे ज्ञान नाम के अज्ञान में तो भारी नरक है। तू तीस के कारण नाना कामनाएं कर रहा है, फिर घर की एक स्त्री ने क्या बिगाड़ा था जो उसको छोड़ दिया। पलटू साहेब कहते हैं कि यह तुम्हारा निर्णय सही नहीं है। जब पांच ज्ञानेन्द्रियों और पचीस प्रकृति के विषयों के राग छूट जायं, तब घर की पत्नी को छोड़।

रेखता-60

संसार सुख छोड़ि कै भया फक्कीर तू,
भया फक्कीर क्या स्वाद पाया।
पेट छूटा नहीं भीख क्या माँगता,
पाँच पच्चीस सँग लगी माया॥
दारा एक तुम तजी घर बीच में,
पाँच पच्चीस को संग लाया।
दास पलटू कहै क्या नफा तोहि मिला,
राम का नाम जो नाहिं आया॥ 60॥

शब्दार्थ—दारा=स्त्री।

भावार्थ—तू संसार के सुख को छोड़कर फकीर हुआ है, फकीर होकर फकीरी का क्या आनन्द पाया? पेट तो तेरा छूटा नहीं। भिक्षा क्या मांगता है ? पांच-पचीस की आसक्ति की माया लगी है। तूने घर की एक पत्नी छोड़ दी, किन्तु पांच-पचीस की आसक्ति लेकर घर से आया है। पलटू साहेब

कहते हैं कि तूने क्या लाभ पाया है। राम का नाम तेरे जीवन में चरितार्थ नहीं हुआ—पूर्ण विषय-विरक्ति होकर आत्मलीनता नहीं हुई?

विशेष—पलटू साहेब तथा समस्त निर्गुणी संत भिक्षा मांगना उचित नहीं मानते। दूसरी बात है कि देह की विषयासक्ति छोड़कर घर का त्याग करना चाहिए। घर की स्त्री छोड़ दी और विरक्त बनकर अन्य स्त्रियों को देखकर ललचाता है तो ऐसा साधुवेष कलंक है। अतएव विषय-मोह छोड़कर घर छोड़ना चाहिए।

रेखता-61

यार फक्कीर तू बाँधु फाका कँहै,
करो संतोष यह अर्ज मेरी।
रहो बेफिकर ह्वै बाँधि कफनी कँहै,
पहिरि के बैठु जा प्रेम बेरी॥
करो फराख दिल फहम टुक कीजिये,
फरक संसार से पीठ फेरी।
दास पलटू कहै फकर फारिग हुआ,
फटी हजूर में फरद तेरी॥ 61॥

शब्दार्थ—फाका=भूखा रह जाना, उपवास। फराक=फ़राख, विशाल, उदार। फहम=समझ, ज्ञान। फरक=अलगाव, दूरी। फकर=फकीर, संत। फारिग=फ़ारिग़=जिसने किसी काम से छुट्टी पा ली हो, स्वतंत्र, मुक्त। हजूर=हुजूर, कचहरी। फरद=फर्द, आरोप-पत्र।

भावार्थ—हे मित्र फकीर! तू समय से उपवास रह जाने का निश्चय कर, किन्तु भीख न मांग। मेरा तुझसे यह विनय है कि तू संतोष धारण करे। तूने साधुवेष रूपी कफन बांध रखा है, तो तू दुनिया से निश्ंचित हो जा। तू अंतर्मुखता में प्रेम कर और उसकी बेड़ी पहनकर अपने आप में स्थित हो जा। दिल को उदार रख और जरा, आत्मज्ञान की समझ रख। सांसारिक कामनाओं से दूर होकर उनसे पीठ दे दे। पलटू साहेब कहते हैं कि जब संत संसार से पूर्ण निष्काम होकर निश्ंचित हो गया, तब हे फकीर! तू समझ ले कि कर्मबंधन की कचहरी से तेरे नाम का मोह-माया रूपी आरोप-पत्र फट गया और तू संसार से पूर्ण मुक्त हो गया।

रेखता-62

फकीर के बालके गुसा ना कीजिये,
गुसा फकीर को नाहिं अच्छा।
बात मीठी कहौ नीक सबको लगै,
भेष भगवन्त की पकरि पच्छा॥
रहनि ऐसी रहौ बहुत गरीब ह्वै,
सकल संसार मिलि करै रच्छा।
दास पलटू कहै बहुत चुचुकारि कै,
बचन को मानि अब लेहु बच्चा॥ 62॥

शब्दार्थ—पच्छा= पक्ष। चुचुकारि कै= पुचकार कर, प्रसन्न करके।

भावार्थ—हे फकीर का बालक! हे साधु! क्रोध मत कर। साधु को क्रोध करना शोभा नहीं देता। तुम ऐसी मीठी बानी बोलो कि सबको मीठी लगे। तुमने भगवान का वेष पहन रखा है, तो इसकी लाज रख। ऐसी रहनी में रहो, जिसमें अत्यन्त अकिंचनता रहे—पूर्ण निष्कामता और विनम्रता रहे, फिर पूरा संसार मिलकर तुम्हारी रक्षा करेगा। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं बहुत पुचकारकर तुम्हें कहता हूं, हे बच्चा! मेरी बात अब मान लो।

रेखता-63

यार फक्कीर फकीरी जो कीजिये,
किसी की नाहिं परवाह करना।
साहिब का होइ अब होयगा कौन का,
उसी के नाम पर ठौर मरना॥
परवाह इक उसी की जिसी का भया तू,
उसी के द्वार से नाहिं टरना।
दास पलटू कहै मजा जब मिलैगा,
हाजिर हजूर संतोष धरना॥ 63॥

शब्दार्थ—परवाह= चिंता। साहिब= सद्‌गुरु। हाजिर हजूर= हाज़िर हुज़ूर, उपस्थित, वर्तमान में प्राप्त।

भावार्थ—हे मित्र फकीर! यदि तू फकीरी करता है, तो किसी बात की चिंता न करना। तू सद्‌गुरु का हो गया है, फिर अब अन्य किसका होकर

रहेगा। अब तू सद्‌गुरु के उपदेश के अनुसार उनकी शरण में रहकर अहंता-ममताहीन हो जा, दुनिया से मर जा। तू जिसकी शरण में हो गया है, उसी सद्‌गुरु का ध्यान रख और उसी के उपदेश के अनुसार चल। उसके द्वार से अब नहीं टरना। पलटू साहेब कहते हैं कि जब तेरे को अंतर्मुखता का अखंड आनन्द मिलेगा, तब तू हर वर्तमान में, प्राप्त परिस्थिति में संतुष्ट रहेगा।

11. ज्ञान

रेखता-64

ज्ञान का चाँदना भया आकास में,
मगन मन भया हम लखि पाया।
दृष्टि के खुले से नजर सब आ गया,
लखा संसार यह झूठि माया॥
जीव औ ब्रह्म के भेद को बूझि कै,
सबद की साच टकसार लाया।
दास पलटू कहै खोलि परदा दिया,
पैठि के भेद हम देखि आया॥ 64॥

शब्दार्थ—मगन= लीन। टकसार= प्रामाणिकता।

भावार्थ—जब आत्मज्ञान का प्रकाश हृदय-आकाश में हुआ, तब मेरा मन आत्मा में लीन हो गया। मैंने आत्मसाक्षात्कार कर लिया। जब विवेक की दृष्टि खुल गयी, तब सबकी वास्तविकता दृष्टि में आ गयी। संसार को देखा कि इसकी सारी चमक-दमक झूठी है। जीव और ब्रह्म का भेद समझ में आ गया कि वह भिन्न नहीं है—अपितु जीव ही ब्रह्म है। निर्णय शब्दों की प्रामाणिकता का बोध हुआ। पलटू साहेब कहते हैं कि अविद्या का परदा हटा दिया और अपने आप में पैठकर स्वयं का साक्षात्कार कर लिया।

रेखता-65

छोड़ि कै ज्ञान को होय विज्ञान जब,
सत्त के सबद का सोई दागी।
सुन्न समाधि में ध्यान को लाइ कै,
सहज का ख्याल सोइ बीतरागी॥

गगन के बीच में तत्त में मगन है,
अविरल भक्ति उर जासु जागी।
तुरीयातीत ह्वै चित्त जब इक भयो,
रैन दिन मगन है प्रेम पागी॥
जागती जोति में रहै गरकाब ह्वै,
सबद के बीच में सुरति लागी।
दास पलटू कहै संत सोई चक्रवै,
भया अद्वैत जब भर्म भागी॥ 65॥

शब्दार्थ—ज्ञान= आत्मज्ञान की समझ। विज्ञान= आत्मज्ञान में लीनता। दागी=दाग, चिह्न, लक्षण। वीतरागी= निर्मोह। गगन= हृदयाकाश। मगन= मग्न, लीन। अविरल= निरंतर। तुरियातीत= संकल्पशून्य दशा। जागती जोति= ज्योतित आत्मा, ज्ञान स्वरूप चेतन। गरकाब= ग़रकाब, डूबा हुआ। चक्रवै= चक्रवर्ती सम्राट।

भावार्थ—आत्मज्ञान की समझ से ऊपर उठकर जब आत्मलीनता हो गयी, यही सत्य शब्दों को समझने का लक्षण है। संकल्प शून्य हो गया, यह निर्विषय मन की दशा ही ध्यान की स्थिति है। जो सहज समाधि में सब समय मग्न है, वही वैराग्यवान संत है। हृदयस्थ आत्मतत्त्व के बोध में सब समय डूबा है, तब उसकी अखंड स्वरूपस्थिति रूपी निरंतर भक्ति जग गयी। चित्त एकाग्र होकर जब संकल्पशून्य दशा आ गयी, तब साधक रात-दिन आत्मलीन हो आत्मप्रेम में ही पगा रहता है। वह निरन्तर ज्योतित आत्मा में ही लीन रहता है; क्योंकि उसकी मनोवृत्ति आत्मज्ञानपरक शब्दों में लग गयी है। पलटू साहेब कहते हैं कि वही संत चक्रवर्ती सम्राट है जिसका द्वैत भ्रम मिटकर अद्वैत हो गया, असंग हो गया।

रेखता-66

छोड़ि कथनी कँहै ज्ञान से जुदा रहु,
रैन औ दिवस क्या पढ़ै गीता।
केतिक पंडित मुए नरक में सिधारते,
लोभ और मोह बसि रहा रीता॥

बिना रहनी रहे मुक्ति ना मिलेगी,
काम औ क्रोध को नाहिं जीता।
दास पलटू कहै बैठु सतसंग में,
आपु में देखि ले राम सीता॥ 66॥

शब्दार्थ—कँहै= को। रीता= खाली, शून्य।

भावार्थ—बक-बक करना छोड़ दे और ज्ञान का जो बोझा लादे घूमता है उसको भी फेंक दे। तू रात-दिन गीता क्या पढ़ता है? कितने ही पंडित पढ़-पढ़ कर मर गये और नरक में ही गये। वे लोभ और मोह में पड़कर अच्छी रहनी से शून्य ही रहे। सदाचारपूर्वक अंतर्मुख हुए बिना वासनाओं से छुटकारा नहीं मिलेगा। यदि काम-क्रोध को पूर्णतया नहीं जीता तो ज्ञान क्या लाभ देगा? पलटू साहेब कहते हैं, हे मनुष्य! विवेकवान संतों के सत्संग में बैठ और अंतर्मुख हो जा और अपने में राम-सीता देख ले। परम तत्त्व तू खुद है।

रेखता-67

हम बासी उस देस के पूछता क्या है,
चाँद ना सुरुज ना दिवस रजनी।
तीन की गम्मि नहिं नाहिं करता करै,
लोक ना बेद ना पवन पानी॥
सेसु पहुँचै नहीं थकित भइ सारदा,
ज्ञान ना ध्यान ना ब्रह्म ज्ञानी।
पाप ना पुन्न ना सरग ना नरक है,
सुरति ना सबद ना तीन तानी॥
अखिल ना लोक है नाहिं परजंत है,
हद्द अनहद्द ना उठै बानी।
दास पलटू कहै सुन्न भी नाहिं है,
संत की बात कोउ संत जानी॥ 67॥

शब्दार्थ—तीन तानी= तीन गुणों का जाल। परंजत= पर्यन्त, सीमा।

भावार्थ—तू मेरा पता क्या पूछता है? मैं उस देश का निवासी हूं जहां चंद्रमा, सूर्य, दिन, रात, त्रिगुण, कर्ता का कर्म, लोक, वेद, पवन, पानी, शेष,

शारदा, ज्ञान, ध्यान, ब्रह्मज्ञानी, पाप, पुण्य, स्वर्ग, नरक, सुरति, शब्द, तीनों गुणों का जाल, अखिल ब्रह्माण्ड, सीमा, हद, अनहद, वाणी, शून्य आदि कुछ नहीं है। पलटू साहेब कहते हैं कि संत की बात कोई संत ही जान सकता है।

विशेष—चेतन आत्मा एवं निज स्वरूप में कोई जड़ दृश्य नहीं है। वह प्रपंच-शून्य है जो देह-गेहादि समस्त जड़ दृश्यों का मोह छोड़कर आत्मलीन रहता है, वह उस देश का निवासी है जहां प्रपंच शून्यता है।

रेखता-68

हद्द अनहद्द के पार मैदान है,
उसी मैदान में सोय रहना।
पैर दक्खिन करै सीस उत्तर धरै,
सबद की चोट सम्हारि सहना॥
ज्ञान औ ध्यान दोउ थकहिंगे हारि के,
सहज समाधि में तत्त महना।
चन्द औ सूर उहँ पहुँचि ना सकहिंगे,
खुसी के लोक में सोक दहना॥
तानि चादर कँहै करो आराम तुम,
बचन को मानि कै गाँठि गहना।
दास पलटू कहै दूर की बात है,
बूझि के किसी से नाहिं कहना॥ 68॥

शब्दार्थ—महना = मथना, विचार करना। दहना = जला देना।

भावार्थ—अपनी उच्चतम आत्मस्थिति हद-अनहद से परे शांति का मैदान है। उसी मैदान में सो जाओ। पैर दक्षिण और सिर उत्तर करके—मृत्यु काल की याद करके शांति से सोओ। ज्ञान के शब्दों को सम्हाल अभ्यास करना। वहां ज्ञान-ध्यान थककर हार जाते हैं और हर क्षण सहज समाधि में आत्मतत्त्व का विचार चलता है। वहां चांद-सूर्य की पहुंच नहीं है। इस आत्मलोक में प्रसन्न रहकर शोक को जला देना। इन वचनों को मानकर इन्हें अपनी गांठ में बांध लो और निश्चिंतता की चादर ओढ़कर हर समय सहज समाधि में विश्राम करो। पलटू साहेब कहते हैं कि यह जगत-ज्ञान के पहुंच

के बाहर की बात है। इसको स्वयं समझकर उसका आचरण करना और किसी अनधिकारी से यह बात नहीं कहना।

11. मन का विस्तार

रेखता-69

मनै को राज है एक तिहुँ लोक में,
तेहि के अमल में डंड लागै।
पाँच मोसील मिलि लगे घर घर मँहै,
मारि औ पीटि के रोज माँगै॥
चोरी कै भीख लै देत हैं दंड सब,
अमल तो एक फिर कहाँ भागै।
दास पलटू कहै मच्यो अंधेर है,
बसै सतसंग यहि अमल त्यागै॥ 69॥

शब्दार्थ—अमल=अधिकार, शासन। मोसील=वसूलने वाले, टैक्स लेने वाले।

भावार्थ—एक मन का ही तीनों लोकों में शासन है। उसके शासन में सब जीवों को दंड देना पड़ता है। आंख, नाक, कान, जीभ और चाम, ये पांच ज्ञानेन्द्रियां जीवों से कर वसूलने वाले हैं जो सबकी देह में रोज मारपीट कर टैक्स वसूलते हैं। सब जीव विषय-भोग रूपी चोरी का भोग करते हैं और दंड देते हैं। एक मन का सब पर अधिकार है, तो लोग उससे भागकर कहां जायेंगे? पलटू साहेब कहते हैं कि इस मन के राज्य में चारों तरफ अंधेर एवं गुंडागर्दी मची है। कल्याणार्थी को चाहिए कि मन के अधिकार से छूटने के लिए सत्संग में निवास करे।

रेखता-70

मुलुक सरीर में भया नवाब मन,
लोभ औ मोह देवान जाके।
अमल दस दिसि किहा फौज को राखि कै,
काम औ क्रोध सीपाह बाँके॥

पाप तहसील वोसूल होने लगी,
कुमति खजानची रहे ता के।
दास पलटू कहै पाँच पच्चीस को,
भया अख्त्यार बेइमान पाके॥ 70॥

शब्दार्थ—नवाब=शासक। देवान=दीवान=वजीर, मंत्री। अमल=अधिकार। सीपाह=सिपाह, सेना। बांके=वीर। तहसील=वसूली, उगाही। पाके=पक्के।

भावार्थ—शरीर रूपी राज्य में मन शासक हो गया। उसके लोभ और मोह मंत्री हैं। मन-शासक ने अपनी सेना से जीवन की दशों दिशाओं में अधिकार जमा लिया। काम-क्रोधादि उसकी सेना के वीर सिपाही हैं। मन जीवन में पाप की वसूली कराने लगा—भोगलिप्सा दुराचार कराने लगा। मन-राजा का कोषाध्यक्ष कुबुद्धि है। पलटू साहेब कहते हैं कि पांच ज्ञानेन्द्रियां और पचीस प्रकृतियों का शरीर-राज्य में अधिकार हो गया जो पक्के बेईमान हैं।

रेखता-71

इधर से उधर तू जायगा किधर को,
जिधर तू जाय मैं उधरआवों।
कोस हज्जार तू जाय चलि पलक में,
ज्ञान की कुटी मैं उहैं छावों॥
सुमति जंजीर को गले में डारि कै,
जहाँ तू जाय मैं खींच लावों।
दास पलटू कहै मारि हौं ठौर में,
जहाँ मैदान में पकरि पावों॥ 71॥

शब्दार्थ—सुमति=अच्छी बुद्धि, विवेक।

भावार्थ—हे मन! तू इधर से उधर जाता है, परन्तु तू किधर जायेगा? तू जिधर जायेगा मैं उधर आकर तुझे पकड़ूंगा। तू पलक मारते ही हजार कोस की दूरी पर भाग जाता है। मैं वहीं आकर आत्मज्ञान की कुटी छा दूंगा। मैं तुम्हारे गले में विवेक की जंजीर डालकर, कहीं भी जाय, खींच लाऊंगा। पलटू साहेब कहते हैं कि मैदान में खदेड़कर, जहां पकड़ पाऊंगा, वहीं मैं तुम्हें मार दूंगा।

13. माया

रेखता–72

माया के फंद से बचा ना कोऊ है,
माया ने किहा संसार सोगी।
सुर नर मुनि फिर उलटि गे आइ कै,
छोड़ि बैराग फिरि भये भोगी॥
संन्यासी बैरागी उदासी औ सेवरा,
सेख दुरबेस औ जती जोगी।
दास पलटू कहै बूझि हम देखिया,
बिना बिबेक सब भेष रोगी॥ 72॥

शब्दार्थ—सेवरा= सेवड़ा, जैनी। दुरबेस= दरवेश, फकीर। जती= यती, त्यागी।

भावार्थ—माया के बंधनों से कोई बचता नहीं है। माया ने ही संसार के लोगों को शोकग्रस्त कर दिया है। सुर, नर, मुनि और वैरोगी धर्म के चोंगे में आकर पुन: उलटकर भोगी हो गये। संन्यासी, वैरागी, उदासी, जैनी, शेख, दरवेश, त्यागी, योगी, सब पीछे माया में लिपट जाते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि मैंने समझकर देखा है, विवेक न होने से सब वेषधारी मानस रोगी बने बैठे हैं।

विशेष—जो भी असावधान होगा, विवेक छोड़ देगा, वही माया में लिपट जायेगा। अतएव सदैव विवेक का आश्रय लेकर रहे।

रेखता–73

माया की लहर संसार सब मगन है,
खाय भरि पेट भरि नींद सोया।
राम को नाम नहिं चेत सपनेहु किहा,
सुभग तन पाइ कै बृथा खोया॥
मोर और तोर के परा झकझोर में,
काम औ क्रोध का बीज बोया।

दास पलटू कहै देखि संसार को,
बैठि के महूँ भरि पेट रोया॥ 73॥

शब्दार्थ—मगन= मग्न, डूबा। महूँ= मैं भी, मैं।

भावार्थ—माया की लहर में सारा संसार डूबा है। वह पेट भर खाता है और नींद भर सोता है। वह राम के नाम के फलस्वरूप अपने आत्मा में, स्वप्न में भी, सावधान नहीं होता है। इतना उत्तम मानव-शरीर पाकर व्यर्थ खो देता है। वह राग-द्वेष के आंदोलन में पड़ा काम-क्रोधादि के बीज बोता है। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं इस संसार की दशा देखकर बैठकर पेट भर रोता हूं।

रेखता-74

माया कलवारिनी देत बिष घोरि कै,
पिये बिष सबै ना कोऊ भागै।
संसार बौराइ गा भया बेहोस सब,
लेत नँगियाय ना कोऊ जागै॥
अमल बाँका बड़ा छुटै ना चोसका,
जीव के संग जब मुहें लागै।
एक ठौ परै हैं धूरि में लोटते,
दास पलटू एक चोखि माँगै॥ 74॥

शब्दार्थ—कलवारिनी= शराब बनाने वाली। गा= गया। नंगियाय= सब कुछ लूट लेती है। अमल= आदत। बांका = प्रिय। चोसका= चसका, स्वाद। एक ठौ= एक व्यक्ति। चोखि= चूसना, स्वाद लेना।

भावार्थ—माया मोह की शराब बनाकर और उसमें उन्मत्तता का विष घोलकर लोगों को पिला रही है। उसे पीकर सब उन्मत्त हैं। कोई उससे हटकर भाग नहीं रहा है। संसार के लोग माया की शराब पीकर पागल होकर अचेत हो गये हैं। माया ने सबका सब कुछ लूट लिया है। कोई उससे सावधान नहीं हो रहा है। माया की आदत बड़ी मीठी लगती है। जब मनुष्य के मुंह में उसका स्वाद लग जाता है, तब छूटता नहीं है। पलटू साहेब कहते हैं कि एक तो माया की मदिरा पीकर धूल में पड़ा लोटता है और दूसरा उसका स्वाद लेना चाहता है।

रेखता–75

माया है राम की लगैगी दौरि कै,
यार फक्कीर सम्हारि रहना।
लोभ औ मोह की बात ना मानिये,
भूख औ नींद जरूर सहना॥
भली औ बुरी संसार सब कहैगा,
गुरु के सबद की ओट गहना।
दास पलटू कहै समय पर बोलिये,
बात सब छोड़ि दे फास कहना॥ 75॥

शब्दार्थ—ओट= आधार। फास= खुलासा, स्पष्ट, साफ ।

भावार्थ—हे मित्र फकीर! यह माया राम की है। दौड़कर तुम्हें लग जायगी, अतएव तू अपने को सम्हालकर रखना। लोभ-मोह की बात न मानना। भूख और नींद सहने की आदत अवश्य रखना। संसार के लोगों में तुम्हें कोई अच्छा कहेगा और कोई बुरा कहेगा। तुम सद्गुरु के निर्णय वचनों का आधार लेकर सब सह लेना। पलटू साहेब कहते हैं कि वाक्य-संयम रखकर समय पर बोलना, परंतु सारी अनर्गल बातें छोड़कर साफ कहना।

विशेष—कोई अलग बैठा राम या ईश्वर अपने पास माया रखता हो और उसे वह सब पर दौड़ाकर सबको नरकगामी बनाता हो; यह बात विवेकयुक्त नहीं है। जब राम या ईश्वर शुद्ध-बुद्ध है तब वह अपने पास माया क्यों रखेगा और उससे किसी को नरकगामी क्यों बनायेगा। यदि वह ऐसा है तो वह यमराज से भी खराब है। क्योंकि यमराज तो जीवों को कर्मफल मात्र देता है, अपनी ओर से किसी को बिना कर्म के फल नहीं देता है।

वस्तुत: हर व्यक्ति राम है। उसकी अपनी भूल से बनायी माया है और वह है मोह। राम की माया राम पर ही कूदकर चढ़ती है। अतएव अलग किसी राम को न दोष देकर स्वयं को सम्हालना चाहिए। सबकी माया उनकी अपना-अपनी बनायी है। जो सावधान हो जायेगा, उसकी माया मर जायगी।

रेखता–76

भाग रे भाग फक्कीर के बालके
कनक औ कामिनी बाघ लागा।

मारि तोहि लेहिंगे पड़ा चिल्लायगा,
बड़ा बेकूफ तू नाहिं भागा॥
सिंगी ऋषि हू से तो मारि लिये,
बचे ना कोऊ जो लाख त्यागा।
दास पलटू कहै बचैगा सोई जो,
बैठि सतसंग दिन राति जागा॥ 76॥

शब्दार्थ—बेकूफ= बेवकूफ़, मूर्ख।

भावार्थ—हे फकीर के बालक! भाग रे भाग! कनक और कामिनी दो बाघ तेरे को खाने के लिए तैयार हैं। ये तेरे को मार लेंगे और तू पड़ा चिल्लाता रहेगा। तू बड़ा मूर्ख है यदि इनसे दूर नहीं होता है। वन में रहने वाले ऋष्य शृंग को भी तो माया ने मार गिराया। बड़े-बड़े त्यागी भी इससे नहीं बचे। पलटू साहेब कहते हैं कि वही माया से बचेगा जो निरंतर सत्संग में रहकर सावधान रहेगा।

रेखता-77

पूरब ठाकुरद्वारा पच्छिम मक्का बना,
हिन्दू और तुरुक दुइ ओर धाया।
पूरब मूरति बनी पच्छिम में कबुर है,
हिन्दू औ तुरुक सिर पटकि आया॥
मूरति औ कबुर ना बोलै ना खाय कछु,
हिन्दू औ तुरुक तुम कहा पाया।
दास पलटू कहै पाया तिन्ह आप में,
मुये बैल ने कब घास खाया॥ 77॥

शब्दार्थ—मक्का= अरब का प्रसिद्ध नगर जिसमें मुसलमानों का काबा तीर्थ है। कबुर= कब्र।

भावार्थ—पूर्व ठाकुरद्वारा है और पश्चिम मक्का का काबा है। हिन्दू और मुसलमान इन दोनों तरफ दौड़ते हैं। मंदिर में पत्थर की मूर्ति है और काबा में भी पत्थर का पिंड है। हिन्दू और मुसलमान उनमें सिर पटककर लौट आते हैं। मूर्ति और कब्र न बोलते हैं और न कुछ खाते हैं। हे हिन्दू-मुसलमानो! तुमने वहां क्या पाया? पलटू साहेब कहते हैं कि जिन्होंने सत्य पाया वे अपने आप ही में पाये। मरे हुए बैल ने कब घास खाया?

13. निन्दक

रेखता-78

संत की निंदा को करत जो देखिये,
कान को मूँदि ले पाप लागै।
पाप के लगे से नरक में जायगा,
त्राहि कै त्राहि कै दूरि भागै॥
मित्र जो होय तो दुष्ट सम जानिये,
संत की निन्दा सुनि दूरि त्यागै।
दास पलटू कहै कहै औ सुनै जो,
नरक के बीच में भीख माँगै॥ 78॥

शब्दार्थ—त्राहि= बचाओ, रक्षा करो।

भावार्थ—यदि कोई संतों की निन्दा करता हुआ दिखे, तो तू अपने कान मूंद ले, अन्यथा तेरे तुझको लगेगा। पाप लगने पर तू नरक में जायेगा; अतएव तू संत-निन्दक की जगह से बचाओ-बचाओ कहकर दूर भाग जा। यदि संत-निन्दक अपना मित्र है तो उसे दुष्ट समझे। संत की निन्दा करने वाले को दूर से ही त्याग दे। पलटू साहेब कहते हैं कि जो संत की निन्दा करता या सुनता है, वह नरक में जाकर भीख मांगता है।

रेखता-79

देखि निंदक कँहै करौं परनाम मैं,
धन्य महराज तुम भक्ति धोया।
किहा निस्तार तुम आइ संसार में,
भक्त कै मैल बिन दाम खोया॥
भयो परसिद्ध परताप से आपके,
सकल संसार तुम सुजस बोया।
दास पलटू कहै निन्दक के मुए से,
भया अकाज मैं बहुत रोया॥ 79॥

शब्दार्थ—निस्तार= कल्याण।

शब्दार्थ—यदि कोई मेरी निन्दा करता है तो मैं उसे देखकर उसको प्रणाम करता हूं, और उससे कहना चाहता हूं कि हे महाराज ! तुम धन्य हो। तुमने मेरे मल को धोकर मेरी भक्ति उज्ज्वल कर दी है। तुमने संसार में आकर मेरा उद्धार किया। तुमने मुझ भक्त का मनोमैल बिना दाम लिये धो दिया। तुम्हारे प्रभाव से मैं संसार में प्रसिद्ध हो गया हूं। तुमने मेरी निन्दा करके संसार में मेरा सुयश फैलाया है। पलटू साहेब कहते हैं कि जब मेरा निन्दक मर गया, तब मुझे लगा कि अब मेरी बुराई कौन धोयेगा। अब तो मेरा अकाज हो रहा है। अतएव मैं बहुत रोया।

14. मिश्रित उपदेश

रेखता-80

काम औ क्रोध को आगि बिनु जारि कै,
महादल मोह मैदान टारा।
पाप औ पुन्न के भरम को छोड़ि कै,
गगन के बीच इक जोति बारा॥
जीव अमृत पिवै चुवै आकास से,
जुक्ति से नाथिया नाग कारा।
दास पलटू कहै संत सो अमर हैं
उलटि कै पकरि तिहुँ काल मारा॥ 80॥

शब्दार्थ—नाग कारा= काला नाग, अहंकार।

भावार्थ—काम और क्रोध को बिना भौतिक आग के ज्ञानाग्नि में जला दिया और युद्ध के मैदान में मोह के महादल को मार गिराया। पाप और पुण्य-कर्म के भ्रम से ऊपर उठ गया और हृदयाकाश में आत्मज्ञान की ज्योति जला दी। हृदयाकाश की आत्मस्थिति से अमृत चूता है। उसे साधक पीता है और साधना-युक्ति से अहंकार रूपी काले नाग को नाथकर उसे वश में कर लिया। पलटू साहेब कहते हैं कि ऐसे संत अमर आत्मस्थिति प्राप्त करते हैं। वे संसार से लौटकर अंतर्मुख हो जाते हैं, इसलिए भूत, भविष्य तथा वर्तमान रूप तीनों काल उसके लिए समाप्त हो जाते हैं।

विशेष—गगन से अमृत चूना, काला नाग नाथना आदि के भिन्न भी अर्थ हो सकते हैं; किन्तु कुल मिलाकर अर्थ है कि वह संत आत्मविजयी हो जाता है।

रेखता-81

पाँच ने सकल संसार को बसि किया,
लोभ औ मोह देवान जा के।
काम औ क्रोध मसलहतिका बे दोऊ,
पाप औ पुन्न सीपाह वा के॥
उजुरख्वाही नहीं गई रैयत सबै,
मुलुक में मारि के किया साके।
दास पलटू कहै देखि इस अमल को,
भागि मैं संत की सरन ताके॥ 81॥

शब्दार्थ—देवान= दीवान, मंत्री। मसलहतिका= सलाहकार। सीपाह= सैनिक। उजुरख्वाही= उज्रख़्वाही, शिकायत करने की इच्छा। साके= शाका, संवत; रोब, दबदबा। अमल= शासन, हुकूमत।

भावार्थ—पांच ज्ञान-इन्द्रियों ने पांचों विषयों में बहकर संसार के जीवों को अपने वश में कर लिया है। लोभ और मोह उनके मंत्री हैं; काम और क्रोध उनके सलाहकार हैं और पाप-पुण्य उनके सैनिक हैं। इसी का परिणाम है कि पूरी प्रजा की—मानव मात्र की शिकायत करने की इच्छा नहीं मिटी—सब हर क्षण शिकायत में पड़े हैं। इन मानसिक मनोविकारों ने संसार में सबको मारपीट कर उन पर अपना रोब एवं दबदबा कर लिया है। पलटू साहेब कहते हैं कि मनोविकारों का सर्वत्र शासन देखकर मैंने भागकर संतों की शरण ले ली।

रेखता-82

ज्ञान ना ध्यान ना जोग ना जुगति है,
मुक्ति चेरी भई द्वार ठाढ़ी।
तीरथ ना बरत ना दान ना पुन्न है,
परी जमराज पर चोट गाढ़ी॥
पूजा अचार ना नेम ना धर्म है,
लेन को आये बैकुंठ बाड़ी।
दास पलटू कहै राह सब छोड़ि कै,
सहज की राह इक संत काढ़ी॥ 82॥

शब्दार्थ—बैकुंठ बाड़ी= बैकुंठ का घर, स्वर्ग।

भावार्थ—पलटू साहेब कहते हैं कि ज्ञान, ध्यान, योग, युक्ति, तीर्थ, व्रत, दान, पुण्य, पूजा, आचार, नियम, धर्म आदि से परे संतों ने एक सहज-साधना का रास्ता निकाल लिया है जिसके फल में बैकुंठ से मेरा बुलावा आ गया है और मुक्ति सेविका बनकर द्वार पर खड़ी है; क्योंकि सहज-साधना की भारी चोट से वासनारूपी यमराज मारा गया है।

विशेष—सहज साधना है उठते-बैठते हर समय मन का साक्षी बनकर रहना, मन में न बहना। इसका फल मन की पवित्रता रूपी स्वर्ग और सर्वत्र अनासक्ति रूपी मोक्ष अपने आप फलते हैं। परंतु यहां तक पहुंचने के लिए नियम-धर्म में चलना ही होगा।

रेखता-83

सुरति जमुना बही ज्ञान मथुरा बसा,
गोकुला ग्राम बिस्वास पाया।
संत जसोदा देवकी सतगुरु,
नन्द वसुदेव जब प्रेम आया॥
जीव औ ब्रह्म श्री कृष्न बलदेव जी,
कंस हंकार को मारि नाया।
विवेक बृन्दावन छिमा को कदम है,
गऊ औ ग्वाल जिय बीच दाया॥
सनेह की राधिका सील की गोपिका,
तत्त माखन लिहे छीनि खाया।
ध्यान सिर मुकुट धै सबद की काछनी,
कछे है लाल जी रहस छाया॥
लगन के कुन्ज में मगन गोपाल जी,
टेर के सुनत आनंद धाया।
दास पलटू कहै गगन के बीच में,
नाद की बाँसुरी सोर लाया॥ 83॥

शब्दार्थ—नाया= फेंक दिया। कदम= कदम का वृक्ष। तत्त= तत्त्व, जड़-चेतन निर्णय, आत्म तत्त्व। काछनी= घुटनों तक कसकर पहनी हुई धोती

जिसमें दोनों लांगे पीछे खुसी हों। कुंज=वृक्षों-लताओं आदि से ढका या घिरा स्थान।

भावार्थ—स्थिर मनोवृत्ति यमुना है। ज्ञान मथुरा है। विश्वास गोकुल गांव है। संत यशोदा ओर सद्‌गुरु देवकी हैं। प्रेम नन्द और वसुदेव हैं। जीव और ब्रह्म श्री कृष्ण और बलराम हैं। कंस अहंकार है जिसे उन्होंने मार फेंका है। विवेक वृन्दावन है। क्षमा कदम का वृक्ष है। जीव मात्र के प्रति दया करना गायें और ग्वाले हैं। शुद्ध स्नेह राधिका है, शील गोपिका है। आत्मतत्त्व ही माखन है जो छीनकर खाने योग्य है। ध्यान ही कृष्ण का मुकुट है। निर्णय शब्द की काछनी है। शांति ही व्यापक रास है। अध्यात्म में लगन ही कुंजगली है। उसी में साधक-गोपाल अनाहतनाद की वंशी बजाता है। पलटू साहेब कहते हैं कि गगन के बीच में नाद की वंशी शोर मचाती है।

विशेष—मस्तमौला पलटू साहेब ने आध्यात्मिक साधना में कृष्ण चरित का वर्णन कर डाला है।

रेखता-84

भक्त से द्रोह करि कोऊ ना बचा है,
किया जिन द्रोह सो सबै हारा।
पंडवा पाँच जिताय भारत कँहै,
गहा गज ग्राह जल बीच मारा॥
गये दुरबासा अंबरीख ब्रत टारने,
छुटा है गैब से चक्र धारा।
दास पलटू कहै हेत प्रहलाद के,
खंभ को फोरि कै उद्र फारा॥ 84॥

शब्दार्थ—गैब से=शून्य से। उद्र=वोद्र, उदर, पेट।

भावार्थ—भक्त से वैर करके कोई दुख से बच नहीं सकता। जिन्होंने भक्त से वैर किया, वही हार खाया। दुर्योधन ने पांडवों से वैर किया तो श्री कृष्ण ने महाभारत युद्ध में कौरवों को मरवाकर पांडवों को जिता दिया। जल में ग्राह ने गजराज का पैर पकड़कर उसे मारना चाहा तो विष्णु भगवान ने उसे मारकर गजराज को बचा लिया। दुर्वासा मुनि ने भक्त अंबरीष पर क्रुद्ध होकर उन्हें नीचा दिखाना चाहा तो विष्णु का चक्र शून्य से आकर उनके पीछे लग गया। अंततः अबरीष से ही क्षमा मांगने पर उनका दुख मिटा। पलटू साहेब

कहते हैं कि हिरण्यकश्यपु से प्रहलाद को बचाने के लिए विष्णु ने हिरण्य-कश्यपु का पेट फाड़ दिया।

विशेष—किसी से वैर करना अपना पतन करना है, और सही आदमी से वैर करके तो अपना पतन रखा-रखाया है। गज-ग्राह की कहानी तो काल्पनिक ही है। प्रहलाद की कहानी में भी अतिरंजना है। दुर्वासा के पीछे चक्र का घूमना भी काल्पनिक है। सार है कि दूसरे से द्रोह करने वाला पतित होता है और संत-भक्त से द्रोह करके तो पतन है ही।

रेखता-85

सील की अवध सनेह का जनकपुर,
सत्त की जानकी ब्याह कीता।
मनहिं दुलहा बने आपु रघुनाथ जी,
ज्ञान कै मौर सिर बाँधि लीता॥
प्रेम बारात जब चली है उमँगि कै,
छिमा बिछाय जनवाँस दीता।
भूप हंकार के मान को मर्दि कै,
धीरता धनुष को जाय जीता॥
सुरति औ सबद मिलि पाँच भँवरा फिरे,
माँग सेंदुर दिहा राग बीता।
संतोष दै दायजो तत्त पुष्पांजली,
जनक जी बुद्धि बिनवंत कीता॥
किहा है बिदा यह दिहा आसीस है,
लोभ औ मोह से रहौ रीता।
दसएँ महल पर अवधपुर कोहबरे,
दास पलटू सूतै राम सीता॥ 85॥

शब्दार्थ—जनवांस= जनवास, बरातियों के ठहरने की जगह। दायजो= दहेज। तत= आत्मतत्त्व का बोध। बिनवंत= विनय। कोहबरे= देव-पितर का घर।

भावार्थ—शील अवध है। स्नेह जनकपुर है। सत्य जानकी है। मन स्वयं रघुनाथ जी दूल्हा बना है। उसके सिर पर ज्ञान का मोर बंधा है। प्रेम

बारात उत्साहित होकर चली। क्षमा बरातियों के ठहरने का स्थान बनी। धैर्य ने मान-मद रूप राजाओं का मर्दन कर धनुष तोड़ दिया। मनोवृत्ति और सार शब्द मिलकर पांच या सात भांवरि किये। वैराग्य का सेंदुर सत्य-सीता के माथे पर लगा दिया। संतोष दहेज दिया गया और आत्मज्ञान की पुष्पांजलि दी गयी। बुद्धि रूपी जनक ने विनय-वंदना की। उसने आशीर्वाद देकर विदा किया। आशीर्वाद है कि लोभ और मोह से सदैव दूर रहो। दसवें महल पर अवधपुर का देव-पितर मंदिर है। पलटू साहेब कहते हैं कि वहीं राम-सीता सोते हैं।

विशेष—पूरा राम विवाह देह में ही बता दिया गया है। सिर का तालुमूल दसवां द्वार कहा जाता है। संतों का कुछ समूह वहीं आत्मा का निवास मानता है। वस्तुतः दसों इन्द्रियों के व्यवहार से ऊपर सीता-राम का—मनोवृत्ति तथा आत्मा का संगम है। आत्मस्थिति इन्द्रियातीत है।

रेखता-86

बाम्हन तो भये जनेउ को पहिरि कै,
बाम्हनी के गले कुछ नाहिं देखा।
आधी सूद्रिन रहै घरै के बीच में,
करै तुम खाहु यह कौन लेखा॥
सेख की सुन्नति से मुसलमानी भई,
सेखानी की नाहिं तुम कहौ सेखा।
आधी हिन्दुइनि रहै घरै के बीच में,
पलटू अब दुहुन के मारु मेखा॥ 86॥

शब्दार्थ—लेखा=हिसाब, ढंग, विधान। सुन्नति=सुन्नत, प्रथा, प्रणाली, मुहम्मद साहेब का किया हुआ; मुसलमानों की वह प्रथा जिसमें बालक की शिश्न-इन्द्रिय का ऊपरी चाम काटा जाता है, ख़तना। मेखा=मेख़, खूंटा, कील, कांटी। मारु मेखा=उपेक्षा कर दो।

भावार्थ—लोग जनेऊ पहनकर ब्राह्मण बनते हैं, परन्तु ब्राह्मणी जनेऊ नहीं पहनती। अतएव वह शूद्रा ही रही जो अर्धांगिनी कही जाती है। हे ब्राह्मण कहे जाने वाले लोग! तुम उसी शूद्रिन का बनाया तथा परोसा भोजन नित्य खाते हो। यह तुम्हारा क्या विधान है? मुल्ला का खतना होने से वे मुसलमान बने हैं, परन्तु उनकी बीबी का तो कुछ नहीं हुआ। वह तो गैर मुसलमान ही

रही। कहो मुल्ला ! तुम आधा मुसलमान तथा आधा गैर मुसलिम ही रहे। मुल्ला के घर में आधा हिन्दुआनी ही रही। पलटू साहेब कहते हैं कि ब्राह्मण और मुल्ला दोनों के बरताव उपेक्षा करने योग्य हैं।

रेखता-87

सुन्य के सिखर पर अजब मंडप बना,
मन और पवन मिलि करै बासा।
एक से एक अनेक जंगल जहाँ,
भँवर गुंजार इक भरै स्वासा॥
नाम सागर भरा झिलिमिलि मोती झरै,
चुनै कोई प्रेम रस हंस खासा।
दास पलटू परै जबै दिब दृष्टि में,
जरै सब भर्म तब छुटै आसा॥ 87॥

शब्दार्थ—खासा= सही, सत्य। दिब दृष्टि= ज्ञान दृष्टि।

भावार्थ—शून्य के शिखर पर अद्‌भुत मंडप बना है। वहां मन और पवन मिलकर निवास करते हैं। वहां एक से एक सुरम्य वन हैं। वहां भंवरों की गूंज है और एक श्वास भरता है। वहां नाम का सागर भरा है और झिलमिल मोती झरता है। उस प्रेम-रस को कोई सही हंस चुगता है। पलटू साहेब कहते हैं कि जब ज्ञान दृष्टि में वह पड़ता है, तब सब भ्रम जल जाता है और जगत की आशा छूट जाती है।

विशेष—ऊपर कुछ हठयोग की क्रिया का चमत्कारी वर्णन है। खास बात है कि जब आत्मज्ञान होता है और संसार का मोह पूरा मिट जाता है, तब जीव सदैव आनन्दमय रहता है।

रेखता-88

नासूत मलकूत जबरूत माना,
लाहूत की लज्जत जाय चक्खा।
लामकान पर बैठि के जी,
रोसन जमीर फक्कीर पक्का॥
असमान रखाना खुलि गया,
दिल रूह बोलै हक्का पक्का।

पलटू दास कहै मुझे नजर आवै,
हर वक्त चिहार तरफ मक्का॥ 88॥

शब्दार्थ—लज्जत=स्वाद। लामकान=घररहित, शून्य। रोसनजमीर= रोशन ज़मीर, बुद्धिमान, समझदार। रखाना =रख़ना, खिड़की। रूह=आत्मा। हक्का=ईश्वर की सौगंध। हक्का-बक्का=पवित्र सत्य। चिहार=चारों तरफ। मक्का=अरब का नगर जो मुसलमानों का पवित्र तीर्थ है।

भावार्थ—नासूत, मलकूत, जबरूत को माना और जाकर लाहूत का आनन्द लिया। ऐ जी! बुद्धिमान पक्का फकीर शून्य में जा बैठा। फिर आसमान की खिड़की खुल गयी। इसलिए हृदय में बैठा आत्मा पवित्र सत्य का अनुभव करने लगा। पलटू साहेब कहते हैं कि मुझे सब तरफ पवित्र मक्का दिखता है।

रेखता-89

कनफटा सिरजटा नखी ठाढ़ेसुरी,
सैयद सेख दुरवेस हाजी।
मौनी जलसैनी पँचअगिन जे तापते,
करैं उपवास फिर खायँ भाजी॥
जोगी औ जती पौहारी ऊरध मुखी,
माया के कारन सब दगाबाजी।
दास पलटू कहै झूठ से दूर है,
एक ही साच में राम राजी॥ 89॥

शब्दार्थ—पौहारी = पयहारी, केवल दूध पीकर रहने वाला।

भावार्थ—कान फाड़कर रहने वाले, सिर पर जटा रखने वाले, नख बढ़ाने वाले, ठाढ़ेश्वरी, सैयद, शेख, दरवेश, हाजी, मौनी, जलशयनी, पंचाग्नि तापने वाले, उपवास रहकर फिर भाजी खाने वाले, योगी, त्यागी, दूधाहारी, ऊर्ध्वमुखी आदि में कितने संपत्ति और स्वामित्व पाने के लिए दगाबाजी एवं छल-कपट करते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि आत्मशांति असत्य व्यवहार से दूर हो जाती है। एक सत्य का सरल व्यवहार करने से आत्म-शांति मिलती है।

रेखता-90

तुरुक लै मुरदा को कब्र में गाड़ते,
हिन्दू लै आगि के बीच जारैं।
पूरब वै गये हैं वै पच्छूँ को,
दोऊ बेकूफ है खाक टारैं॥
वै पूजै पत्थर को कबर वै पूजते,
भटक कै मुए दै सीस मारैं।
दास पलटू कहै साहिब है आप में,
अपनी समझ बिनु दोऊ हारैं॥ 90॥

शब्दार्थ—बेकूफ= बेवकूफ़, नासमझ।

भावार्थ—मुसलमान मुरदा को कब्र में गाड़ते हैं और हिन्दू आग में जलाते हैं। एक पूर्व मुख कर मालिक को पुकारता है और दूसरा पश्चिम मुख करके पुकारता है। दोनों ही धूल की रस्सी बटते हैं। एक पत्थर की पिंडी पूजता है और दूसरा कब्र पूजता है। दोनों पत्थर-पानी और शून्य में सिर पटकते हैं और भटक-भटक कर मरते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि परमात्मा या अल्लाह तो मनुष्य का आत्मा है; परन्तु सही समझ हुए बिना दोनों बहिर्मुख होकर जीवन बरबाद करते हैं।

झूलना

16. गुरुदेव और आत्मज्ञान

झूलना-1

सतगुरु साहिब जब मिहर करी, तब ज्ञान का दीपक बारा है जी।
भर्म अँधेरा छूटि गया, दसहूँ दिसि भा उजियारा है जी॥
रैन दिवस टूटै नाहीं, लागी ज्यों तेल की धारा है जी।
पलटू कहै मोहिं दीख परा, घट घट में ठाकुरद्वारा है जी॥

शब्दार्थ—मिहर= मेहर, मेह्र, कृपा।

भावार्थ—सद्‌गुरु साहेब ने जब कृपा की, तब आत्मज्ञान का दीपक जला दिया। फिर सारे भ्रम का अंधकार नष्ट होकर पूर्ण प्रकाश हो गया। अब आत्मज्ञान स्मरण तैलधारा वत निरंतर चलता है और कभी उसमें अंतर नहीं पड़ता है। पलटू साहेब कहते हैं कि अब मुझे दिखता है कि सब शरीर देव-मंदिर हैं और उनमें विराजमान चेतन जीव परमात्मा हैं।

झूलना-2

सतगुरु ऐसा तलास कीजै, ज्यों सिकलीगर का मसकला।
तुरत जौहर निकारि देवै, इक लहमा पकरि के खूब मला॥
दिल का मुरचा सब दाग छुटा, तरवार बनी ज्यों झलझला।
पलटू नामर्द से मर्द हुआ, तब बाँधि तरवार सिपाह चला॥

शब्दार्थ—मसकला= सिकलीगरों का औजार जिससे छूरे आदि मांजकर उसे साफ करते तथा धारदार बनाते हैं। जौहर= रत्न, सारतत्त्व, चमक, उत्तमत्ता, वीरता; यहां अर्थ है आत्मज्ञान की चमक। लहमा= लम्हा, पल, क्षण। झलझला= चमकती हुई।

भावार्थ—हे कल्याणार्थी ! ऐसे सद्‌गुरु की खोज करो जो तुम्हारे मन को मांजकर उसमें आत्मज्ञान की चमक वैसे ही ला दे, जैसे सिकलीगर मसकला से छुरे को मांजकर उसे चमकदार तथा धारदार बना देता है। फिर साधक का सारा मानसिक विकार छूटकर उसका मन वैसे चमकदार हो जाता है जैसे चमकती तलवार। फिर साधक विषयासक्ति की कायरता त्यागकर वीर हो जाता है। वह योद्धा ज्ञान की तलवार बांधकर मोह सेना से लड़ने के लिए निकल पड़ता है।

झूलना-3

कटाच्छ कै हमरी ओरि ताको, सतगुरु करौ दाया है जी।
जड़ चेतन दोउ लागि रहे, जबर तेरी माया है जी॥
कुछ जोग जुगत बतलाय दीजै, जासे सोधौं मैं काया है जी।
पलटू तुम दीनदयाल बड़े, सतगुरु सेती सब पाया है जी॥

शब्दार्थ—कटाच्छ= कटाक्ष, तिरछी निगाह, थोड़ी नजर। माया= शक्ति।

भावार्थ—हे सद्‌गुरु ! मेरी ओर आप थोड़ी निगाह फेरकर देखने की कृपा करें। जड़ और चेतन दोनों की गांठ पड़ी है—चेतन जड़ में उलझा

है। हे सद्‌गुरु! आपकी ज्ञानशक्ति महान है। आप मुझे कुछ योग और युक्ति बता दीजिए, जिनसे मैं अपनी काया शोधकर तथा जड़ाशक्ति से पार होकर निर्मल हो जाऊं। पलटू साहेब कहते हैं कि हे सद्‌गुरु! आप दीनों पर दया करने वाले महान हैं। मैंने कल्याण का सारा ज्ञान सद्‌गुरु से ही पाया है।

झूलना-4

पूरब पुन्न भये परगट, सतसंग के बीच में जाय परी।
आनंद भयो जब संत मिले, वही सुभ दिन वहि सुभ घरी॥
दरसन करत त्रयताप मिटे, बिनु कौड़ी दाम मैं जाय तरी।
पलटू आवागवन छुटा, रज चरनन की जब सीस धरी॥

शब्दार्थ—पूरब पुन्न= पूर्व जन्मों के पुण्य संस्कार।

भावार्थ—मेरे पूर्व जन्मों के शुभ संस्कार उदय हुए, जिनके जोर से मैं विवेकवान संतों के सत्संग में लग गया। जब संत मिले, तब उनके ज्ञान से मन के सारे दुख मिटकर अखंड आनन्द छा गया; अतएव संत-मिलन के दिन और घड़ी ही शुभ हैं। संतों के दर्शन करने से मेरे तीनों ताप मिट गये और बिना कौड़ी तथा बिना दाम दिये, मैं दुख से पार हो गया। पलटू साहेब कहते हैं कि जब मैंने संतों की चरण-रज सिर पर रखी और उनसे आत्मबोध पाया, तो भवसागर से मुक्त हो गया।

झूलना-5

पराई चिता की आग महैं, दिन राति जरै संसार है जी।
चौरासी चारिउ खान चराचर, कोऊ न पावै पार है जी॥
जोगी जती तपी संन्यासी, सबको उन डारा जारि है जी।
पलटू मैं हूँ जरत रहा, सतगुरु लीन्हा निकारि है जी॥

शब्दार्थ—जती= यती, त्यागी।

भावार्थ—संसार के लोग दूसरे की चिता की आग में रात-दिन जलते हैं—दूसरों के गुणों-दोषों के ऊहापोह में दुखी रहते हैं। मन की व्यर्थ उलझनों में जीव चौरासी—चारों खानियों के चक्कर काटते हैं, कोई उनसे पार नहीं जाता है। योगी, यती, तपस्वी, संन्यासी आदि सबको मन की अविद्या ने जला

डाला है। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं अविद्या की आग में जलता रहा; सद्गुरु ने मुझे उस आग से निकाल लिया।

झूलना -6

इक नाम अमोलक मिलि गया, परगट भये मेरे भाग हैं जी।
गगन की डारि पपिहा बोलै, सोवत उठी मैं जागि हौं जी॥
चिराग बरै बिनु तेल बाती, नहिं दीया नहिं आगि है जी।
पलटू देखि के मगन भया, सब छुट गया तिर्गुन दाग है जी॥

शब्दार्थ—गगन की डारि=संकल्प-शून्य की स्थिति में। तिर्गुन= त्रिगुण—सत, रज, तम।

भावार्थ—आत्मज्ञान परिचायक अनमोल एक सतनाम मिल गया। इससे भाग्य प्रकट हो गया। संकल्प शून्य की स्थिति में अनुभ्व-पपीहा बोलता है। उसका अनुभव कर मैं दृश्य-मोह से जग गया। अब बिना तेल, बत्ती, दीपक और आग के आत्मज्ञान के अनुभव का दीपक निरंतर जलता है। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं आत्मस्थिति के प्रगाढ़ अनुभव में लीन हो गया और आत्मसाक्षात्कार होने पर प्रकृति के तीनों गुणों के दाग धुल गये।

झूलना-7

हमने यह बात तहकीक किया, सबमें साहिब भरपूर है जी।
अपनी समुझ कुआँ कै पानी, क्या नियरे क्या दूरि है जी॥
गाफिल की ओर से सोइ गया, चेतन को हाल हजूर है जी।
पलटू इस बात को नहिं मानै, तिस के मुँह में परै धूर है जी॥

शब्दार्थ—तहकीक=परख। हाल हजूर=वर्तमान में स्थित, अपरोक्ष।

भावार्थ—मैंने इस सत्य की जांच-परख कर ली है कि सब देहों में परमात्मा स्थित है। किसी कुआं में पानी गहरे में होता है और किसी में निकट, वैसे कोई देर में समझता है और कोई जल्दी। यह अपनी समझ का अंतर है। जो मनुष्य आत्मज्ञान से असावधान होकर परमात्मा को बाहर खोजता है, वह अविद्या की नींद में सो गया है और जो अपने चेतन आत्मा के बोध में है, उसको परमात्मा स्वयं प्रत्यक्ष स्वस्वरूप है। पलटू साहेब कहते हैं कि जो इस परम सत्य को नहीं स्वीकारता है, उसके मुंह में धूल पड़ती है।

17. संत और साधु

झूलना-8

बादसाह का साह फकीर है जी, नौबत गैब का बाजता है।
ज्ञान ध्यान की फौज को साधि के जी, सबर के तख्त पर गाजता है॥
लाहूत खजाना मारफत का, सिर नूर का छत्र बिराजता है।
पलटू फकीर का घर बड़ा, दीन दुनियाँ दोऊ भीख माँगता है॥

शब्दार्थ—साह=शाह, मूल, स्वामी, महान। नौबत=मांगलिक बाजा। गैब=ग़ैब, अदृश्य। सबर=सब्र, संतोष। गाजता=प्रसन्नता से गर्जता है। लाहूत=शून्य, प्रपंच-शून्य। मारफत=मारफ़त, जरिया, वसीला, ज्ञान; अध्यात्मज्ञान। नूर=ज्योति, ज्ञानज्योति।

भावार्थ—सांसारिक बादशाह का भी स्वामी विरक्त निष्काम संत है। उसके जीवन में अदृश्य का मांगलिक बाजा हर समय बजता है—भीतर निश्िंचतता का नाद हर समय उठता है। वह आत्मज्ञान और संकल्पों का त्याग रूपी ध्यान की सेना से संपन्न होकर संतोष के सिंहासन पर अखंड आनन्द में मग्न रहता है। अध्यात्मज्ञान का खजाना प्रपंचशून्य स्थिति है, केवल दशा। उसके सिर पर आत्मज्ञान का ज्योति रूपी राजछत्र शोभायमान होता है। पलटू साहेब कहते हैं कि फकीर का घर बड़ा है—वह अपनी अनन्त आत्मिक स्थिति में रहता है; किन्तु मजहबी और दुनिया के लोग कामनाबद्ध होकर भोग और स्वामित्व की भीख मांगते हैं।

झूलना-9

अनुभै परगास भया जिसको, तिसही की बात प्रमान है जी।
भीतर के सब खुलि गये पट, पक्का उसी का ज्ञान है जी॥
तीन लोक प्रविर्ति की बात कहैं, वा का तेज कैसा जैसे भान है जी।
पलटू जगत से पीठि देवै, नहिं संत होना औसान है जी॥

शब्दार्थ—अनुभै=अनुभव, आत्मसाक्षात्कार का ज्ञान। प्रविर्ति=प्रवृत्ति, प्रवाह, बहाव। औसान=आसान, सरल।

भावार्थ—आत्मसाक्षात्कार का अनुभव-प्रकाश जिसके जीवन में हुआ, उसी की बात प्रमाणित होती है। जिसके मन के सारे परदे, सारे अज्ञान हट गये, जो दृश्य-मोह रहित स्वरूपस्थ है, उसी का ज्ञान पक्का है। वह सारे

संसार को निरंतर प्रवाहमान रूप देखता और कहता है जैसा कि वह है। ऐसे जड़-दृश्य-मोह से पार संत का ज्ञान सूर्यवत एकरस होता है। पलटू साहेब कहते हैं कि संत संसार से पूर्ण निष्काम होकर अंतर्मुख होते हैं। संत होना सरल नहीं है।

झूलना-10

सील सनेह सीतल बचन, यही संतन की रीति है जी।
सुनत कै प्रान जुड़ाय जावै, सब से करते वे प्रीति हैं जी॥
चितवनि चलिन मुसक्यानि नवनि, नहिं राग दोष हारि जीति है जी।
पलटू छिमा संतोष सरल, तिन कौ गावै स्त्रुति नीति है जी॥

शब्दार्थ—स्त्रुति= श्रुति, वेद।

भावार्थ—शील, स्नेह, मीठे वचन यही संतों का व्यवहार है। संतों की बातें सुनकर मन शीतल हो जाता है। संत सबसे प्रेम करते हैं। उनके देखना, चलना, मुस्कराना आदि विनम्रतायुक्त होते हैं। उनके मन में न राग है न द्वेष है, न हार है और न जीत है। पलटू साहेब कहते हैं कि संत के जीवन में क्षमा, संतोष और सरलता सद्गुण होते हैं। वेद भी संतों की यही नीति बताते हैं।

झूलना-11

आसिक इसक पर जो भये, वे नहिं चाहैं करामात है जी।
उनको सोरसार नहीं भावै, वे मस्त रहैं दिन रात है जी॥
नहिं भूख लगै नहिं नींद आवै, नहिं पीवत हैं नहिं खात हैं जी।
पलटू हम बूझि बिचारि देखा, वही साहिब की जाति है जी॥

शब्दार्थ—आसिक= आशिक़, इश्क एवं प्रेम करने वाला। इसक= इश्क, प्रेम। करामात= बड़प्पन, चमत्कार, दिखावा। सोरसार= शोरगुल, हल्ला-गुल्ला। साहिब= सद्गुरु, परमात्मा। जाति= जात, जाति, कुल, वंश; व्यक्तित्व; अस्तित्व; स्वयं, खुद।

भावार्थ—जो मनुष्य आत्मस्थिति के प्रेम में डूबे हैं, वे चमत्कार जैसी झूठी बातों को कभी पसंद नहीं कर सकते। उनको झांसा देकर भीड़ बटोरना और हल्ला-गुल्ला अच्छा नहीं लगता। वे आत्मलीनता में रात-दिन डूबे रहते हैं। उनको न भूख लगती है, न नींद आती है, न वे पीते हैं और न खाते हैं।

पलटू साहेब कहते हैं कि मैंने समझ-विचार कर देख लिया है कि वे ही सद्‌गुरु के वंश हैं अथवा परमात्म स्वरूप हैं।

विशेष—देहधारी होने से जीवन्मुक्त भी खाते-पीते, सोते-जागते हैं। सार अर्थ है, उनकी इन सब बातों में स्पृहा नहीं रह जाती है।

झूलना-12

राजा रंक को एक जानै, तिसी का नाम फकीर है जी।
कंचन औ कांच में भेद नहीं, लखे और की पीर है जी॥
सादी गमी कुछ एक नहीं, संतोष का मुलुक जगीर है जी।
पलटू अस्तुति निंदा एकै, सोई रोसन-जमीर है जी॥

शब्दार्थ—सादी =शादी, खुशी, आनन्दोत्सव, विवाह। गमी= ग़मी, शोक की दशा। जागीर=ऐश्वर्य। रोसनजमीर= रोशन ज़मीर, बुद्धिमान, समझदार, विवेकी।

भावार्थ—उसी को फकीर कहना चाहिए जो राजा और रंक को एक समान समझे। सोना और कांच में समान बुद्धि रखे और दूसरे के दर्द को समझे। उसके जीवन में न आनन्दोत्सव है और न शोक है। उसका तो संतोष ही अपना देश और ऐश्वर्य है। पलटू साहेब कहते हैं कि वह अपनी निन्दा और स्तुति एक समान समझता है। ऐसा संत रोशन जमीर है—परम विवेकी है।

झूलना-13

जंगल के बीच मंगल करै, किसी की नहिं परवाह है जी।
सबर के तख्त पर जाय बैठा, अजब फकीर बादसाह है जी॥
चाहना की एक राह मूँदी, सौ ओर से निकरी राह है जी।
पलटू परालबध मोदी भई, वोही करती निरबाह है जी॥

शब्दार्थ—सबर= सब्र, संतोष। अजब= अद्‌भुत। परालबध= प्रारब्ध। मोदी= परचूनिया; दाल-चावल आदि बेचने वाला।

भावार्थ—फकीर जंगल के बीच में मंगल करता है। उसको किसी बात की चिंता नहीं रहती। वह संतोष के तख़्त पर जा बैठता है। फकीर अद्‌भुत बादशाह है। उसने इच्छा का एक रास्ता बन्द कर दिया, तो उसकी सेवा में सैकड़ों रास्ते से चीजें आने लगीं। पलटू साहेब कहते हैं कि उसका प्रारब्ध ही

उसको निर्वाह की वस्तुएं देने वाला परचूनिया बन जाता है। प्रारब्ध के बल से उसकी जीवन-यात्रा चलती रहती है।

झूलना-14

कोई जोग जुगत की साधना में, कोई बैराग लै ढूँढ़ता है।
कोई साखी सबद बनाय कहै, जोरि जोरि बैठि कै गूँथता है॥
कोई भाँग धतूरा खाइ के जी, गुफा में बैठि के झूमता है।
कोई बेद पुरान सिद्धांत पढ़ै, कोई बैठि के निर्गुन गूनता है॥
कोई उदासी बनि बन बन फिरै, कोई घायल होइ के घूमता है।
पलटू फकीर की राह जुदी, इन बातों के ऊपर थूकता है॥

शब्दार्थ—घायल= बिरही, वियोगजनित पीड़ा में।

भावार्थ—कोई योग और युक्ति की साधना करता है। कोई वैरागी बनकर परमात्मा को ढूंढ़ता है। कोई साखी-शब्द बनाने के लिए अच्छर-मात्रा जोड़-जोड़कर उन्हें बैठाता है। कोई भांग-धतूरा खाकर गुफा में बैठा झूमता है। कोई वेद-पुराण आदि के सिद्धान्तों को पढ़ता है। कोई बैठकर निर्गुण का मनन करता है। कोई उदासी बनकर वन-वन भटकता है और कोई ईश्वर के विरह में घायल बना घूमता है। पलटू साहेब कहते हैं कि फकीर का रास्ता अलग है। वह उक्त बातों की उपेक्षा कर अपने आप में मस्त रहता है।

झूलना-15

कवायद असमान के बीच होवै, दिल फहम से मारि गिरावता है।
बंदूक हवा करि दीठ गोली, दम को साधि चलावता है॥
गूमठ में जब जाय लगा, मुराकबे नजर में आवता है।
खिड़की पारे जब निकरि गया, पलटू दुरबेस कहावता है॥

शब्दार्थ—कवायद= क़वायद, कायदे, नियम; व्याकरण; सेना के युद्ध नियमों के अभ्यास की क्रिया। फहम= समझ। गूमठ= गुंबज मुराकबे= मुराक़बा, आशा करना; रक्षा करना; ध्यान करना। दुरबेस= दरवेश, फकीर।

भावार्थ—जब अंत:करण-आकाश में मोह की सेना को मारने के लिए विवेक-सेना का अभ्यास होता है तब सच्ची समझ दिल की मोह-सेना को मारकर गिरा देती है। विचारों की हवा एवं प्रवाह बंदूक है और ज्ञानदृष्टि गोली

है। साधक अपने श्वास को साधकर एवं साहस कर उन्हें चलाता है। जब मन के गुंबज में ज्ञान की गोली जाकर लगी तब लक्ष्य में ध्यान जम जाता है। जब अविद्या की खिड़की तोड़कर मोह से बाहर निकल गया, पलटू साहेब कहते हैं तब वह दरवेश कहलाता है।

झूलना-16

दीद बर दीद नजर आवै, तिसको साँच करि जानिये जी।
इस दिल सेती फहम करै, उसको तब जाइ पहिचानिये जी॥
इस दिल की रूह असमान मँहै, लाहूत के बीच में आनिये जी।
पलटू ना जाहिर बात करै, उसकी बात को मानिये जी॥

शब्दार्थ—दीद बरदीद= सामने, प्रत्यक्ष। फहम= समझ। लाहूत= शून्य, प्रपंचशून्य।

भावार्थ—जो विवेक से सच ठहरे उसी को मानना चाहिए। जब अपने हृदय में सच्ची समझ होगी तभी वह सत्य की पहचान कर पायेगा। हृदय-स्थित आत्मा का तब साक्षात्कार होता है जब प्रपंचशून्य की स्थिति आती है। पलटू साहेब कहते हैं कि उसी की बात वजनदार होती है, अतएव उसी की बात पर ध्यान दो जो अंतर्मुख है।

18. वैराग्य

झूलना-17

धरम करम सब छोड़ि दिया, छोड़ी जगत की आस है जी।
और कछू अब नहिं भावै, संतन के संग बिलास है जी॥
अस्तुति निन्दा को पीठि दिया, सनमुख सबद में बास है जी।
पलटू अधोमुख कूप मँहै, दीया जरै आकास है जी॥

शब्दार्थ—बिलास= आनन्द।

भावार्थ—धर्म-कर्म सब छोड़ दिया और जगत की सारी आशाएं छोड़ दीं। अब अन्य कोई बात अच्छी नहीं लगती, अपितु निरंतर संतों की संगत में आनन्द उत्सव है। मिलने वाली स्तुति-निन्दा से निष्फिक्र हो गया। अब सामने निर्णय शब्दों के अनुसार जीवन का आचरण है। पलटू साहेब कहते हैं कि अंतर्मुख कूप में आत्मज्ञान का दीपक रात-दिन जल रहा है।

झूलना-18

पाँच भूत जो बस्सि किया, तो का लै राम को करना जी।
आपुइ वह राम जी होइ गया, जियत भया जब मरना जी॥
संसार कँहै जब पीठि दिया, तब का संसार से तरना जी।
पलटू जब इन्द्री बस्सि किया, तब का मुक्ती लै करना जी॥

शब्दार्थ—पाँच भूत= आंख, नाक, कान, जीभ और चाम अथवा काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा भय।

भावार्थ—जब पांच ज्ञानेन्द्रियों एवं मनोविकारों पर पूर्ण विजय हो गयी, तब बाहर से ईश्वर को लेकर क्या करना है ? निष्काम मनुष्य स्वयं परमात्मा हो गया। जब वह जीते जी मर गया—अहंकार-शून्य हो गया। जब संसार का मोह सर्वथा छूट गया, तब अब संसार से क्या तरना रह गया ? पलटू साहेब कहते हैं कि जब इन्द्रिय और मन पूर्ण अपने वश में हो गये तब अब बाहर से मुक्ति लेना क्या रहा ?

झूलना-19

भूले मन को समझाय लीजै, सतसंग के बीच में जाय के जी।
अबकी बेर नहिं चूकना है, सुन्दर मानुष तन पाइ के जी॥
ज्ञान ध्यान की बात को बूझि लीजै, मन में कुछ ठीक ठहराइ के जी।
पलटू गगन के बीच मारै, सुरति कमान चढ़ाय के जी॥

शब्दार्थ—बेर= बार, समय। कमान= धनुष।

भावार्थ—हे मनुष्यो! सत्संग में जाकर अपने भूले हुए मन को आत्मज्ञान के विषय में समझा लीजिए। कल्याणदायी मनुष्य शरीर मिला है, अतएव अबकी बार असावधान नहीं होना है। आत्मा का ज्ञान करो और संकल्पों को छोड़कर अपने आप शांत रहना रूपी ध्यान की बात समझ लो और इसे मन में दृढ़ कर लो। पलटू साहेब कहते हैं कि मनोवृत्ति के धनुष पर ध्यान का बाण चढ़ाकर मारो और मन गगन के समान शून्य हो जाय।

झूलना-20

चढ़ी नाम की भाठी चुवै प्रेम प्याला, पीना सोई सराब है जी।
मजलिस दुर्वेस की मतवारी, जिकिर खाना कबाब है जी॥

साहिब मासूक आसिक बंदा, नमक में जैसे आब है जी।
पलटू खुदाय की राह यही, और करना अजाब है जी॥

शब्दार्थ—मजलिस= सभा, समाज, जलसा। दुर्वेस= दरवेश, फकीर, संत। जिकर= जिक्र, चर्चा, सत्संग। साहिब= स्वामी, आत्मा। मासूक= माशूक़= प्रियतम। आसिक= आशिक़= प्रेमी, साधक। आब= पानी। अजाब = अज़ाब, पाप।

भावार्थ—आत्मज्ञान के संज्ञा स्वरूप सतनाम की भाठी से आत्मानुभव का रस चूता है और उसे प्रेम के प्याले में भरकर साधक पीता है। यही सच्ची शराब है। फकीरों की सभा में आत्मज्ञान की मस्तानगी का सत्संग चलना ही कबाब का खाना है। आत्मा प्रियतम है, साधक प्रेमी है, जैसे नमक में स्वाभाविक जल है। पलटू साहेब कहते हैं कि खुदा से मिलने का यही रास्ता है। इसके अलावा बात करना पाप है।

विशेष—आत्मा परमात्मा एवं खुदा है। विषय-प्रेम छोड़कर आत्मा में प्रेम करना सच्ची साधना है। आत्मज्ञानी फकीरों की सभा में इसी की चर्चा और साधना करना साधक का कर्तव्य है।

19. दिखावा छोड़कर सच्ची साधना करना चाहिए

झूलना-21

संतन के बीच में टेढ़ रहैं, मठ बाँधि संसार रिझावते हैं।
दस बीस सिष्य परमोधि लिया, सबसे वह गोड़ धरावते हैं॥
संतन की बानी काटि के जी, जोरि जोरि के आपु बनावते हैं।
पलटू कोस चार के गिर्द में जी, सोई चक्रवती कहावते हैं॥

शब्दार्थ—परमोधि लिया= समझा लिया।

भावार्थ—ऐसे साधुवेषधारी होते हैं जो संतों के बीच में कटु व्यवहार करते हैं। वे मठ स्थापित करके संसार के लोगों को अपने हावभाव से रिझाने में लगे रहते हैं। दस-बीस मनुष्यों को समझा-बुझाकर और उन्हें शिष्य बना कर सबसे अपने पैर पुजवाने के चक्कर में पड़े रहते हैं। वे संतों की वाणियों में से काट-काट कर अपने नाम से कविता बनाते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि वे चार कोस के बीच में अपने आप को लोगों द्वारा चक्रवर्ती सम्राट-बड़का आचार्य कहलाते हैं।

झूलना-22

पैदा भया मुट्ठा बाँधे, फिरि हाथ पसारे जायगा जी।
जने चारि के काँधे चढ़ि चाले, आखिर को फेरि पछितायगा जी॥
दुनियाँ दौलत इहाँ छूटै, उहाँ मार घनेरी खायगा जी।
पलटू जब बूझि है धरमराजा, उहाँ तब क्या बतियायगा जी॥

शब्दार्थ—बतियायगा= बात करेगा।

भावार्थ—मनुष्य मुट्ठी बांधकर पैदा होता है और हाथ पसारकर मरता है और चार लोगों के कंधे पर चला जाता है। ऐसे लोग साधन-भजन बिना अंत में पश्चाताप में डूबकर मरते हैं। दुनिया और दौलत यहीं छूट जाती है। आगे चलकर अपने दुष्कर्मों के परिणाम में नाना दुख भोगता है। पलटू साहेब कहते हैं कि जब यमराज पूछेगा तब वहां वह क्या बात करेगा ?

विशेष—यम कोई व्यक्ति नहीं है। वस्तुतः बुरा कर्म करके जीव परिणाम में दुख पायेगा।

झूलना-23

सच्चे साहिब के मिलने को, मेरा मन लीहा बैराग है जी।
मोह निसा में सोय गई, चौंक परी उठि जाग है जी॥
दोउ नैन बने गिरि के झरना, भूषन बसन किया त्याग है जी।
पलटू जीयत तन त्यागि दिया, उठी बिरह की आगि है जी॥

शब्दार्थ—निसा= निशा, रात्रि।

भावार्थ—आत्मा रूपी परमात्मा सच्चा स्वामी है। उसमें स्थित होने के लिए मैंने वैराग्य धारण किया है। मैं मोह की रात्रि में सो रहा था, परन्तु सद्गुरु के उपदेश से चौंककर जाग गया। मेरे नेत्रों से उसी प्रकार आंसू झरते हैं जिस प्रकार पर्वत के झरने। मैंने सब प्रकार के शृंगार का त्याग कर दिया है। पलटू साहेब कहते हैं कि देह में रहते-रहते शरीर को त्याग दिया और आत्म-विरह की उठी आग में सब मोह जल गया।

झूलना-24

सोरहो सिंगार बनाइ कै जी, झमकि झमकि चली प्यारी।
सजन के रूप को देखि कै जी, झुकि झुकि परै जस मतवारी॥

तन मन की सुधि सब जाति रही, हिये में लगी प्रेम चोट भारी।
पलटू जान्यो मैं आपु को जी, अभिगति की है इक गति न्यारी॥

शब्दार्थ—अभिगति= अविगत, अज्ञेय, अविनाशी।

भावार्थ—जैसे एक युवती सोलहों शृंगार बनाकर और छम्म-छम्म पैर रखते हुए अपने पति के पास जाय, वैसे कल्याणार्थी मनोवृत्ति अपने को सब तरफ से समेट कर आत्मोन्मुख होती है और आत्मसाक्षात्कार कर आत्मस्थिति में मस्त होकर डूब जाती है। ऐसे साधक को अपने तन-मन की सुधि खो जाती है। उसके हृदय में आत्मानुराग की भारी चोट लगी है। पलटू साहेब कहते हैं कि मैंने अपने आप को जाना जो इन्द्रियों से अज्ञेय और अविनाशी है। इसकी दशा संसारिकता से पृथक है।

झूलना-25

लगन जिसी से लागि रही, काज उसी से सरा है जी।
सब लोक की लाज को तोरि डारे, उसी के घर करो डेरा है जी॥
मेरे मन में कुछ डेर नाहीं, हँसैगा लोग बहुतेरा है जी।
पलटू घूँघट को खोलि डारो, समरथ सतगुरु का चेरा है जी॥

शब्दार्थ—सरा है= बना है। डेर= डर, भय। चेरा= दास।

भावार्थ—सच्चे सद्‌गुरु से प्रेम लगा है; उसी से मेरा काम बनेगा। मैंने सारे लोक-लाज के बंधनों को तोड़कर फेंक दिया और सद्‌गुरु की शरण में अपना डेरा डाल दिया है। मेरे मन में कोई भय नहीं है। संसार के लोग मेरा अच्छी तरह मजाक उड़ा लें। पलटू साहेब कहते हैं कि मैंने जगत-मोह का परदा हटा दिया है और मैं समर्थ सद्‌गुरु के चरणों का गुलाम बन गया हूं।

झूलना-26

साहिब के दास कहाय यारो, जगत की आस न राखिये जी।
समरथ स्वामी को जब पाया, जगत से दीन न भाखिये जी॥
साहिब के घर में कौन कमी, किस बात को अंतै आखिये जी।
पलटू जो दुख सुख लाख परै, वहि नाम सुधारस चाखिये जी॥

शब्दार्थ—आखिये= आखना, कहना, देखना, चाहना।

भावार्थ—सद्‌गुरु का सेवक कहलाकर जगत के भोगों की आशा न करो। जब ज्ञान-वैराग्य संपन्न समर्थ सद्‌गुरु को पा गया तो संसारी लोगों से

कुछ कामना रखकर उनसे दीन वचन न बोलिये। सद्गुरु की शरण में क्या कमी है ? किस वस्तु के लिए अलग से याचना करे ? पलटू साहेब कहते हैं कि अपने ऊपर चाहे लाखों सुख-दुख द्वन्द्व आवें, उनकी उपेक्षा करके सतनाम के फलस्वरूप आत्मस्थिति का अमृत-रस पान करे।

झूलना-27

पहिले संसार से तोरि आवै, तब बात पिया की पूछिये जी।
तरवार दुइ ठो है म्यान एकै, किस भाँति से वामें कीजिये जी॥
मीठे प्याले को दूर करो, करू प्रेम पियाला पीजिये जी।
पलटू जब सीस उतारि धरै, तब राह पिया की लीजिये जी॥

शब्दार्थ—करू= कड़वा।

भावार्थ—हे साधक की मनोवृत्ति ! पहले सांसारिक भोगों की कामनाएं हृदय से निकाल दो, इसके बाद आत्मा-पति से मिलने की बात पूछो। तलवार दो हो और म्यान एक, तो किस प्रकार से उन्हें उसमें रखेंगे ? संसारी भोग जिसे आज तक मीठा प्याला मान रखा है उसे दूर कर दो और अंतर्मुखता का कड़वा प्याला पीयो। पलटू साहेब कहते हैं कि जब सिर को उतारकर धर दे—सारा अहंकार विसर्जित कर दे, तब आत्मस्थिति एवं अंतर्मुखता का रास्ता पकड़ा जा सकता है।

झूलना-28

फहम की फौज बनाई के जी, सुरति कमान चढ़ाइ लीता।
बख्तर प्रेम का पहिनि के जी, गम फील सबर निसान कीता॥
आकिल के बान छुड़ाइ के जी, दुर्मति के दल को मारि लीता।
खुदी खूब कुफर को मारि के जी, पलटू दुरवेस मैदान जीता॥

शब्दार्थ—फहम= समझ, ज्ञान। सुरति =मनोवृत्ति। कमान= धनुष। बख्तर= कवच। गम= ग़म, शोक, चिंता। फील= फ़ील, हाथी। सबर= सब्र, संतोष। आकिल= आक़िल, अक्लवाला, बुद्धिमान। खुदी= अहंकार। कुफर = कुफ़्र, बुराई। दुरवेस= दरवेश, संत, फकीर।

भावार्थ—ज्ञान की सेना बनायी, मनोवृत्ति का धनुष चढ़ाया, प्रेम का कवच पहना, संतोष के हाथी पर चढ़कर शोक-चिंता को मार गिराया। बुद्धिमान ने बुद्धि का बाण छोड़कर दुर्बुद्धि की सेना को मार डाला। पलटू

साहेब कहते हैं कि फकीर ने अपने अहंकार रूपी बुराई को मारकर मानस-युद्ध के मैदान में विवेक को विजयी बना दिया।

झूलना-29

उसी सावज को मारना जी, न हाड़ न माँस न चाम स्वासा।
पूँछ न पाँव न मुख वाके, उसी का सालन बनै खासा॥
मुरदा के मारे वह मरै, जीवत बधिक की नाहिं आसा।
पलटू जो सावज मारि खावै, तिसी का आवागवन नासा॥

शब्दार्थ—सावज= साउज, वह जानवर जिसका शिकार किया जाय। सालन= रसादार तरकारी। खासा= अच्छा।

भावार्थ—हे साधक! उसी पशु को मारना जिसमें हड्डी, मांस, चाम, श्वास, पूछ, पांव, मुख आदि नहीं है। वह है रागात्मक मन। उसी की रसादार अच्छी तरकारी बनती है। वह मुरदा के मारे मरता है। जीवित बधिक द्वारा उसके मारे जाने की आशा नहीं करना चाहिए। अहंकार-शून्य साधक ही मन को मार सकता है, अहंकारी नहीं। पलटू साहेब कहते हैं कि जो साधक मन को मारकर खा जाय—मन पर पूर्ण विजयी हो जाय, उसी का आवागमन नष्ट होता है।

झूलना-30

बनिया यह बानि ना छोड़ता है, फिर फिर पसँगा मारता है।
केतक बार तैं चोट खाया, उस याद को फेर बिसारता है॥
खारी के बीच में खाँड़ डारै, दुरमति को नाहिं मिटावता है।
पलटू केता समझाय देखा, तिस पर भी नाहिं सम्हारता है॥

शब्दार्थ—बानि= आदत। खारी= नमक। खांड़= शकर।

भावार्थ—बनिया अपनी यह आदत नहीं छोड़ता है। वह बारंबार तौलते समय दूसरों को ठगने के लिए पसंगा मारता है। हे बनिया! तू कितनी ही बार अपनी गंदगी के कारण चोट खाया है, उस दुखद स्थिति को भूल जाता है। तू नमक-शकर मिलाकर उसे शकर के भाव में बेचना चाहता है। तू अपनी दुर्बुद्धि को नहीं दूर करता। पलटू साहेब कहते हैं कि कितना ही समझाकर देखा गया, किन्तु तिस पर भी बनिया अपने को नहीं सम्हालता है।

विशेष—यहां बनिया का रूपक है। बात है मन की; 'यह मन बनिया बानि न छोड़े।' मन अपनी जिस करनी से दुख पाता है, उसी को पुनः करता है। दृढ़ विवेक का मतलब है गलती न दोहराये। इसी से सुधार आता है।

झूलना-31

बिन मूल कै झाड़ इक ठाढ़ि रहा, तिस पर आ बैठे दुइ पच्छी।
इक तो गगन में उड़ि गया, इक लाय रहा बकु ध्यान मच्छी॥
गगन में जाइ के अमर भया, वह मरि गया चारा जिन भच्छी।
पलटू दोऊ के बीच खेलै, तिहि बात है आदि अनादि अच्छी॥

शब्दार्थ—मूल= जड़। झाड़= वृक्ष, पेड़।

भावार्थ—बिना जड़ के एक वृक्ष खड़ा है, वह है शरीर। एक समान शरीर रूपी वृक्ष पर दो पक्षी बैठे हैं जो मूलतः समान हैं; उनमें से एक भोगों से निष्काम होकर आत्मस्थिति के आकाश में उड़ गया और दूसरा मछली खाने के लिए बगुले की तरह कपटपूर्ण ध्यान लगाता है—सांसारिक भोगों की लालसा में डूबा है। एक तो आत्मस्थिति के आकाश में उड़कर अमर स्थिति पा गया और दूसरा जिसने सांसारिक भोगों का स्वाद लिया, वह अपनी स्थिति से गिर गया। पलटू साहेब कहते हैं कि उक्त दोनों की स्थिति जानकर जो त्याग का उत्तम फल जानता है और त्याग से रहता है, उसकी स्थिति सदा उत्तम रहती है।

विशेष—उक्त झूलना का भाव ऋग्वेद के 'द्वा सुपर्णा' मंत्र की याद दिलाता है, जो इस प्रकार है—"सुंदर पंख के दो पक्षी हैं जो साथ-साथ रहते हैं और मित्र हैं। ये एक ही समान वृक्ष पर चिपके बैठे हैं। उनमें से एक वृक्ष के फल के स्वाद को चखता है, परन्तु दूसरा नहीं चखता। वह केवल देखता रहता है।" मूल मंत्र इस प्रकार है—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति॥

(ऋग्वेद, मंडल 1, सूक्त 164, मंत्र 20)

झूलना-32

माया संसार को जीति आई, संसार चला सब हारि है जी।
जोगी जती औ सिद्ध तपी, उनको भी लेती मारि है जी॥

उनके निकट नहीं आवै, जिनके बिबेक बिचार है जी।
पलटू संतन से वह डरती, वे फेंकि मारैं पैजारि है जी॥

शब्दार्थ— पैजारि=पैज़ार, जूता।

भावार्थ—माया संसार के लोगों पर विजय करती आयी है और संसार के सब लोग माया से हार गये हैं। यहां तक कि कितने योगी, त्यागी, सिद्ध, तपस्वी को भी माया मार गिराती है। जिनके मन में विचार-विवेक है, माया उनके पास नहीं फटकती। पलटू साहेब कहते हैं कि माया संतों से डरती है। यदि माया संतों के पास पहुंचे तो वे उसे जूते फेंककर मारते और खदेड़ते हैं।

झूलना-33

मोटी माया तो सब तजै, मेंही नहीं तजि जात है जी।
ओही उनकी खोराक भई, मोटै रहै दिन राति है जी॥
पलटू जो मेंही माया तजै, वोही साहिब की जाति है जी॥

शब्दार्थ—मोटी माया=घर, धन, प्राणी-पदार्थ। मेंही=महीन; झीनी माया, मान-बड़ाई। जाति=वंश, अनुगामी।

भावार्थ—मोटी माया तो बहुत लोग त्याग देते हैं, परन्तु झीनी माया मान-बड़ाई त्यागना कठिन होता है। मान-बड़ाई ही अभिमानी की खुराक होती है। उसी से वे रात-दिन फूले घूमते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि जो झीनी माया मान-बड़ाई का त्याग करता है, वही सद्‌गुरु का सच्चा अनुगामी है, परमात्म स्वरूप है।

झूलना-34

जक्त की प्रीति को देखि लिया, नाहक को लोग ठगात हैं जी।
स्वारथ के हेतु से प्रीति करैं, दौलत बेटा मँगात हैं जी॥
लम्बी दंडवतै आप करैं, दगाबाज की प्रीति कहात है जी।
पलटू इनसे सम्हारि रहौ, तेरे मन को चोर लगात है जी॥

शब्दार्थ—दगाबाज=दग़ाबाज़, धोखा देकर लूटने वाला, छली।

भावार्थ—संसारियों के प्रेम को देख लिया गया है। लोग संसार के झूठे प्रेम में पड़कर व्यर्थ ही ठगे जाते हैं। संसार में लोग अपने भौतिक स्वार्थ के लिए प्रेम करते हैं। पुत्र भी पिता से धन पाने के लिए प्रेम करता है। जो बहुत

लम्बी दंडवत करता है, वह धोखा देकर लूटने वाला होता है। पलटू साहेब कहते हैं कि हे कल्याणार्थी! ऐसे अंध स्वार्थियों से सावधान रहो। ये तुम्हारे मन को चुराने वाले ठग हैं।

झूलना-35

इलम पढ़ा पर अमल नहीं, अमल बिनु इलम खाक है जी।
इलम पढ़ै औ अमल करै, उसके हम तौ मुस्ताक हैं जी॥
बेहद्द कथै औ हद्द रहै, उसका तो मुँह नापाक है जी।
पलटू गुफ्तन सोई दीदन, वह तो मारफत की नाक है जी॥

शब्दार्थ—इलम= इल्म, ज्ञान। अमल= आचरण। खाक= ख़ाक, मिट्टी। मुस्ताक= मुश्ताक़, उत्सुक, अभिलाषी, अनुगामी। बेहद= उच्च आध्यात्मिक स्थिति। हद्द= दुनियादारी। गुफ्तन= गुफ़्तन, कथन, कथनी। दीदन= दर्शन, साक्षात्कार, रहनी। मारफत= मारफ़त, अध्यात्म ज्ञान।

भावार्थ—ज्ञान की बात तो पढ़ ली, किन्तु उसका जीवन में प्रयोग नहीं है, तो प्रयोग के बिना ज्ञान मिट्टी है। जो ज्ञान पढ़े और उसका जीवन में प्रयोग करे, मैं उसका अनुगामी हूं। बात तो उच्च अध्यात्म स्थिति की करे और जीवन दुनियादारी में रहे, उसकी वाणी अपवित्र है। पलटू साहेब कहते हैं कि जो कथन में हो, वही रहनी में हो, तो उसका आचरण आध्यात्मिक ज्ञान का उच्च शिखर है।

झूलना-36

स्यार की चाल को छोड़ बे बालके, आपु को खूब दरिआफ कीजै।
सिंह है तुही तहकीक कर आप में, स्यार के संग को छोड़ दीजै॥
अहार तो कीजिये आपु से मारिकै, और कै मारा ना कधी लीजै।
पलटू तू सिंह ह्वै गरज बे हाँक दै, पकरि गजराज धै पाँव मींजै॥

शब्दार्थ—दरिआफ= दरियाफ़्त, ज्ञात, मालूम। तहकीक= तहक़ीक, जांच-पड़ताल, अनुसंधान, निश्चित।

भावार्थ—अबे बालक साधक! सियार जैसी कायरता की चाल छोड़ दे। अपने आप को ठीक से समझ ले कि तू कौन है। तू तो शुद्ध चेतन है, परमात्मा है। तू अपने आप का अनुसंधान कर। तू सिंह है, वीर है; सियार एवं कायर मत बन। स्वयं परिश्रम करके भोजन कर, दूसरे के सामने हाथ

मत पसार। पलटू साहेब कहते हैं कि तू सिंहवत वीर है। अबे साधक! गरजते हुए हांक दे। तू मन रूपी हाथी के पैर पकड़कर उसे मींज दे।

झूलना-37

दुनिया कँहै जब तरक किया, कुछ दीन की लज्जत टोवना है।
काम क्रोध पकरि कै मारि डारौ, खुदी खूब के ताईं खोवना है॥
यारो इस बात की लाज करौ, संतोष का तोसा पोवना है।
पलटू साहिब के घर माहीं, टुक पाँव पसारि के सोवना है॥

शब्दार्थ—तरक=तर्क, त्याग। दीन=परमार्थ। लज्जत=स्वाद, आनन्द। टोवना=स्पर्श करना, अनुभव करना। खुदी=ख़ुदी, अहंकार। खूब =अच्छा, भला। तोसा=तोशा, वह खाद्य पदार्थ जो यात्रा में रखा जाय, पाथेय, कलेवा, खाने-पीने की चीज। पोवना=तैयार करना।

भावार्थ—साधक सारहीन संसार के भोगों का त्याग करता है। तब वह परमार्थ के स्थिर आनन्द का अनुभव करता है। हे साधक! काम-क्रोधादि को पकड़कर उन्हें मार डालो। याद रखो, अपने स्थिर कल्याण के लिए अपने अहंकार को खो देना है। ऐ मित्रो! अपने त्याग-मार्ग की लाज रखो। जीवन-यात्रा के लिए संतोष का भोजन तैयार करना है। पलटू साहेब कहते हैं कि सद्गुरु की शरण में पांव पसारकर निश्ंचितता की नींद सोना है।

झूलना-38

पहिले फना फिर सेख होवै, कदम मुरसिद को पाइके जी।
तब फना फिल्लाह होवै, मारफत मकान ठहराइ के जी॥
मुरसिद मुरीद पर मिहर करै, लाहूत को देइ पहुँचाइ के जी।
पलटू हूहू आवाज आवै, रूह खास दीदन उहाँ जाइ के जी॥

शब्दार्थ—फना=फ़ना=नाश, मृत्यु। सेख=शेख़, मुहम्मद साहब के वंशजों की उपाधि; मुसलमानों के चार वर्ग—शेख, सैयद, मुगल, पठान में से पहला—शेख; मुसलमानों का गुरु। मुरसिद=मुरशिद, सद्गुरु। फिल्लाह= वस्तुतः, अनुभव। मारफत=मारफ़त, अध्यात्मज्ञान, आत्मज्ञान। मुरीद= शिष्य। मिहर=मेह्र, कृपा। लाहूत=कल्याण दशा। हूहू=ईश्वर का संक्षिप्त नाम। रूह=आत्मा। दीदन=दर्शन, साक्षात्कार।

भावार्थ—सद्गुरु की शरण में रहकर उनकी सेवा-भक्ति करते हुए साधना करे और पहले जीते जी मर जाय, तब धर्मोपदेशक गुरु बने। तब जीवतमृत की दशा—अहंकार-शून्यता की दशा प्रमाणित होती है, अनुभव में आती है जब आत्मज्ञान की स्थिति में साधक ठहर जाता है। सद्गुरु शिष्य पर कृपा करके उसे कल्याण की दशा में पहुंचने का उपदेश दे। पलटू साहेब कहते हैं कि आत्मस्थिति का बोध ही ईश्वर की आवाज है, यह तब होता है जब आत्मा स्वयं उस संकल्पशून्य स्थिति में पहुंचकर आत्मसाक्षात्कार करता है।

झूलना-39

संग्रह त्याग दोऊ को छोड़ि देवै, तब बात पड़ैगी ठीक है जी।
अस्तुति निन्दा काँच कंचन में, भेद राखै नहिं नेक है जी॥
चार बरन आसरम धरम, ये भी गाड़ी की लीक हैं जी।
पलटू सब सेती जुदा रहै, येही बात तहकीक है जी॥

शब्दार्थ—नेक= भला, उत्तम। तहकीक= तहक़ीक़, निश्चित, ठीक।

भावार्थ—मोक्ष-इच्छुक संग्रह के लोभ से और त्याग के अहंकार से दूर रहे, तब उसका मन शांत रहेगा। स्तुति तथा निन्दा और कांच एवं कंचन में समता रखे तभी उसका कल्याण होगा। चार वर्ण और चार आश्रम ये भी गाड़ी की लीक की तरह बनी बनायी परिपाटी है। पलटू साहेब कहते हैं कि इन घरौंदों से अलग रहना ही ठीक रास्ता है।

झूलना-40

घर घर से चुटकी माँगि के जी, छुधा कौ चारा डारि दीजै।
फूटा इक तुम्बा पास राखौ, ओढ़न को चादर एक लीजै॥
हाट बाट महजित में सोय रहौ, दिन रात सतसंग का रस पीजै।
पलटू उदास रहौ जक्त सेती, पहिले बैराग यहि भाँति कीजै॥

शब्दार्थ—महजित= मसजिद।

भावार्थ—घर-घर से रोटी के टुकड़े मांगकर भूख को चारा डाल दो। पानी पीने के लिए साथ में एक फूटा तुंबा रखो और ओढ़ने की एक चादर। रास्ते, बाजार तथा मस्जिद-मंदिर में कहीं सो जाओ और रात-दिन सत्संग से आत्मज्ञान की चर्चा का रस पीयो। पलटू साहेब कहते हैं कि हे साधू! संसार से उदास रहो। पहले इसी तरह वैराग्य करो।

झूलना-41

बासी टुकड़ा को माँगि खाना, महजित के बीच में सोवना जी।
ऊपर इक चिथरा ओढ़ि लेना, अंदर को साफ करि धोवना जी॥
दिल में आवै सो कहि देना, उस बात को नाहिं गोवना जी।
पलटू गुजर गुजरान गई, सिर खोलि के फिर क्या रोवना जी॥

शब्दार्थ—गोवना= छिपाना। गुजर= बीत जाना। गुजरान= निर्वाह।

भावार्थ—हे साधु ! बासी रोटी के एक टुकड़े को मांगकर खा लेना और मस्जिद-देवालय आदि में सो जाना। शरीर पर एक फटी चादर ओढ़ लेना और मन को पूर्ण स्वच्छ रखना। हृदय में जो बात सच लगे उसे बिना छिपाये कह देना। पलटू साहेब कहते हैं कि शरीर का निर्वाह होकर समय बीत जायेगा। सिर खोलकर जब वैराग्य-पथ में कूद पड़ा है, तब शिकायत और चिंता-फिक्र करने की बात कहां रही ?

झूलना-42

हमता ममता को दूरि करै, यही तो मूल जंजाल है जी।
चाह अचाह को छोड़ि देवै, यहि सहज सुभाव की चाल है जी॥
मोर औ तोर बिकार छूटै, सब से मिलै हर हाल है जी।
पलटू जिन बासना बीज भूना, वो ही साहिब का लाल है जी॥

शब्दार्थ—हर हाल= प्रत्येक दशा, सब समय।

भावार्थ—मैं-मेरा एवं अहंकार-ममता को दूर करता रहे, क्योंकि अहंता-ममता ही फंसाने वाली है। संपत्ति और स्वामित्व की चाहना न रखे और चाहनाहीन होने का अहंकार न करे। यही सहज साधना की रहनी है। मेरा है, तेरा है, ऐसा मनोविकार छोड़ दे और सबसे सब दशा में मेल-जोल एवं समता रखे। पलटू साहेब कहते हैं कि जिसने वासना-बीज को आत्मज्ञान की प्रज्वलित अग्नि से भून दिया, वही सद्गुरु का दुलारा शिष्य है।

झूलना-43

मेरी मेरी तू क्या करै, मेरी मँहै अकाज है जी।
साहिब सब काम सँभारि लेवै, मेरी से आवै बाज है जी॥
जिसका तू दास कहावता है, तिसको इस बात की लाज है जी।
पलटू तू मेरी छोड़ि देवे, तीनि लोक तेरा राज है जी॥

शब्दार्थ—बाज= दूर होना, छोड़ देना।

भावार्थ—मेरा है, मेरा है, ऐसा क्या करता है ? दुनिया की चीजों को मेरी मानना अपना पतन करना है। तू अहंता-ममता छोड़ दे, सद्गुरु तेरा सब काम सम्हाल लेगा। तू जिसका सेवक कहलाता है, उसको तुझे सम्हालने की लज्जा है। पलटू साहेब कहते हैं कि तू संसार की सारी अहंता-ममता छोड़ दे, फिर पूरा संसार तेरा राज्य है।

झूलना-44

हवा कँहै खामोस करै, नाक आँख कान मुँह मूँदि भाई।
तब नूर तजल्ली दीद करै, असमान की खिरकी खोलि नाई॥
खिरकी की राह निकरि जावै, सुनै हक हक आवाज पाई।
पलटू दीगर को नेस्त करै, होय खुद अहद इस भाँति जाई॥

शब्दार्थ—हवा= वातावरण। खामोस= ख़ामोश, चुप, मौन, शांत। नूर तजल्ली= नूरे तजल्ली, आध्यात्मिक प्रकाश, आत्म-साक्षात्कार। दीद= देखादेखी, दर्शन, दीदार। खोलि नाई= खोलकर फेंक दिया। हक हक =हक़ हक़, सत्य-सत्य। दीगर= अन्य, दूसरा, अनात्म। नेस्त= जो न हो; तात्पर्य में नकार देना, त्याग देना। खुद= ख़ुद, स्वयं। अहद= पक्का, निश्चय।

भावार्थ—हे भाई ! वातावरण शांत रखे और नाक, आंख, कान, मुंह, शिश्न आदि इन्द्रियों का पूर्ण संयम रखे। तब आत्मज्ञान के प्रकाश का साक्षात्कार होता है। हृदयाकाश की अविद्या का किवाड़ खोलकर फेंक दे और विवेक की खिड़की से निकलकर बाहर हो जाय, तब अंतरात्मा से सत्य की आवाज सुनाई देगी। पलटू साहेब कहते हैं कि अनात्म का त्याग करे; तब इस प्रकार साधक स्वतः स्वरूप के पक्का निश्चय में दृढ़ हो जायेगा।

झूलना-45

जब मैं नाहीं तब वह आया, मैं ना वह यह कौन मानै।
गूँगे ने गुड़ खाइ लिया, जबान बिना क्या सिफत आनै॥
दरियाव औ लहर तो दोय नहीं, समा औ रोसनी कौन छानै।
पलटू भगवान की गति न्यारी, भगवान की गति भगवान जानै॥

शब्दार्थ—मैं= देहाभिमान। वह= परम सत्य। जबान= जीभ। सिफत= सिफ़त, विशेषता, गुण। दरियाव= दरिया, समुद्र। समा= शमा, दीपक। रोसनी = रोशनी, प्रकाश।

भावार्थ—जब मेरा देहाभिमान नष्ट हो गया, तब सत्य की स्थिति हुई— 'जब मैं नाहीं, तब वह आया।' किन्तु 'मैं न वह'—'मैं' प्रत्यक्ष देहाभिमान नहीं तथा 'वह' परोक्ष सत्य नहीं, अपितु अपना स्वतः आत्म-अस्तित्व रहा। 'यह कौन माने ?' यह तो वही अनुभव करेगा जो उस स्थिति का अनुभवी है। मैं का अहंकार मिट जाना परमात्मस्थिति है। गूंगा गुड़ खाने के बाद उसका स्वाद नहीं बता सकता। जीभ के बिना गुड़ की विशेषता क्या कह सकता है ? समुद्र और लहर दो नहीं, दीपक की लौ और प्रकाश दो नहीं, इसी प्रकार आत्मा-परमात्मा दो नहीं। पलटू साहेब कहते हैं कि परमात्मा की दशा विलक्षण है। परमात्मा की दशा परमात्मा ही जानता है।

विशेष—समुद्र और उसकी लहर का उदाहरण दिया जाता है। परन्तु यह सब भ्रम ही पैदा करता है। समुद्र और लहर दोनों विकारी हैं। वस्तुतः आत्मा ही परमात्मा है, परन्तु यह अनुभव तब होता है जब देहाभिमान सर्वथा मिट जाता है।

झूलना-46

साहिब मोर कुछ एक नाहीं, जो है सो सब कुछ तोर है जी।
मुझको इस बात की नाहिं खबर, आगे परा मुझे भोर है जी॥
इस हमता ममता के कारन, तुमसे भये हम चोर है जी।
पलटू अब मुझको चेत परा, तेरा नहिं कहै मन मोर है जी॥

शब्दार्थ—भोर= भुलावा।

भावार्थ—हे सद्गुरु! मेरा कुछ एक पदार्थ भी नहीं है, जो कुछ है वह सब आपका है; किन्तु इस सत्य का मुझे कोई पता नहीं था। इसलिए मुझसे भूल होती रही। इस अहंता-ममता के ही कारण मैं आपके सामने चोर सिद्ध हुआ। पलटू साहेब कहते हैं कि अब मैं समझ पाया कि मेरा मन पूर्णतया आपको समर्पित नहीं है।

झूलना-47

बड़ा भया तौ क्या भया, जो दिल का नाहिं उदार है जी।
बड़ा सबसे समुद्र भया, पानी पड़ा वो खार है जी॥

समुद्र सेती इक कूप भला, पिये सकल संसार है जी।
पलटू सबसे छोट भया, सोई सबका सिरदार है जी॥

शब्दार्थ—सिरदार= सरदार, शासक, अगुआ, श्रेष्ठ।

भावार्थ—कोई बड़ा कहलाने से बड़ा नहीं होता, अपितु उदार हृदय से समता-सेवा करने वाला बड़ा होता है। समुद्र सदा से बड़ा है, परन्तु उसका पानी खारा है। समुद्र की अपेक्षा एक छोटा कुंआ अच्छा है जिसका पानी संसार के सब लोग पीते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि जो मनुष्य अपने को सबसे छोटा मानता है, वह सबसे श्रेष्ठ हो जाता है।

झूलना-48

पात पात कै आपा लुटाय देवै, पाछे फूलै परास है जी।
कदली बाँस मँहै जब फर लागा, फिर नहिं कुछ उस की आस है जी॥
जियत मरै तन त्यागि देवै, सहै जगत उपहास है जी।
पलटू पहिले यह करि लेवै, तब जाय सतगुरु के पास है जी॥

शब्दार्थ—परास= पलास। कदली= केला।

भावार्थ—पलास का वृक्ष जब अपने सब पत्ते गिरा देता है, तब फूलों से लद जाता है। केले और बांस जब फलते हैं, तब उसके बाद वे नष्ट हो जाते हैं। फिर उनसे फल की आशा नहीं की जा सकती। साधक जीते जी मर जाय—सारा अहंकार छोड़ दे, देहाभिमान त्याग दे और संसार से प्राप्त उपहास निर्विकार भाव से सह ले। पलटू साहेब कहते हैं कि जब पहले ऐसी रहनी बना ले, तब सद्गुरु के पास जाय।

झूलना-49

जाय संत सेवा में लागि रहै, यही धर्म जिग्यास है जी।
तन मन सेती जब नाहिं टरै, करै चरन में बास है जी॥
दीन दयाल हैं संत बड़े, जो पुजवैं मन की आस है जी।
पलटू जो संत उपदेस करै, सोई कीजै विस्वास है जी॥

शब्दार्थ—धर्म जिग्यास= धर्म जिज्ञासा, धर्म जानने की अभिलाषा।

भावार्थ—साधक संतों के पास जाकर उनकी सेवा में लग जाय। यही धर्म को समझने का लक्षण है। तन-मन अर्पित करके उनकी शरण से न हटे,

अपितु उनके चरणों की शरण में ही निवास करे। संत दीनों पर दया करने वाले हैं। वे मुमुक्षु को सत्योपदेश देकर उसे कल्याण पथ में अग्रसर होने का बल देते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि संत जो उपदेश करें, उन पर विश्वास करके वैसा आचरण करे।

झूलना-50

जिसे चोट लगी है ज्ञान की जी, तिसको नहीं कुछ भावता है।
आठ सिधि नौ निधि भईं आइ खड़ी, तिस को वह दूरि बहावता है॥
संसार कँहै दै पीठि बैठा, अपने मन को खूब रिझावता है।
पलटू जहँ मन की गम्मि नहीं, तहँ वह जोति जगावता है॥

शब्दार्थ—रिझावता है= प्रसन्न करता है। गम्मि= गम, पहुंच।

भावार्थ—जिसे आत्मज्ञान की चोट लग जाती है, उसको अन्य कुछ अच्छा नहीं लगता। आठ सिद्धियां और नौ सिद्धियां उसके सामने हाथ जोड़े भले खड़ी रहें, परन्तु उनको वह दूर खदेड़ देता है। वह संसार की तरफ पीठ देकर अंतर्मुख हो जाता है और अपने मन को स्वरूपस्थिति में लीन करता है। पलटू साहेब कहते हैं कि जहां मन की पहुंच नहीं होती है, वह उस आत्मस्वरूप में निर्विकल्प स्थिति की ज्योति जलाता है।

झूलना-51

कर्म बिना नहिं ज्ञान होवै, कर्म कँहै नहिं निंदिये जी।
फल कारन ज्यों झाड़ फूलै, फूल झरि जाय फल लीजिये जी॥
पाछे सेती बेटा होवै, पहिले मुसक्कत कीजिये जी।
पलटू पहिले जब ऊख बोवै, पाछे सेती रस पीजिये जी॥

शब्दार्थ—मुसक्कत= मशक़्क़त, श्रम, मेहनत।

भावार्थ—पवित्र कर्म से अंतःकरण पवित्र होकर आत्मज्ञान होता है; अतएव शुद्ध कर्म के बिना ज्ञान नहीं होता है। इसलिए कर्म की निन्दा न कीजिए। पेड़ में फूल लगकर उनसे फल होते हैं, फूल झड़ जाते हैं। पहले परिश्रम करके पुत्र पाला जाता है, पीछे वह माता-पिता की सेवा करता है। मनुष्य पहले ईख बोता है, उसे सींचता, गोड़ता, खाद देता तथा रक्षा करता है, तब पीछे उसे उसका मीठा रस पीने को मिलता है।

झूलना-52

जो गया साहिब के खोजने को, सो आपै गया हेराय है जी।
समुँदर के बीच में बुन्द परा, उसी में गया समाय है जी॥
पानी लहरि लहरि पानी, को भेद सकै अलगाय है जी।
पलटू हरफ मसी दोय नाहीं, यह बात ले ठीक ठहराय है जी॥

शब्दार्थ—हरफ=हरफ़, वर्णमाला का अक्षर, लिखावट। मसी=मसि, स्याही, रोशनाई।

भावार्थ—जो परमात्मा को खोजने गया, वह स्वयं खो गया। समुद्र में बुंद पड़ी तो वह उसमें समा गयी। पानी लहर है और लहर पानी है। दोनों में भेद कौन कर सकता है ? पलटू साहेब कहते हैं कि अक्षर और स्याही दो नहीं है। यह तथ्य ठीक समझ लो कि आत्मा-परमात्मा दो नहीं हैं।

विशेष—समुद्र-बुंद, पानी-लहर दोनों विकारी हैं। इसलिए ये उदाहरण उपयुक्त नहीं हैं, किन्तु इनकी कहावत चलती है। वस्तुतः परमात्मा को खोजने का मतलब है अपना माना हुआ सब कुछ खो देना। जब देहादि सारे अनात्म का अहंकार खो गया, तब आत्मा स्वयं परमात्मा है। आत्मा से अलग कोई परमात्मा नहीं है। सारे अनात्म का मोह छोड़ देने पर आत्मा स्वयं परमात्मा है।

झूलना-53

मुक्ति मुक्ति सब खोजत हैं, मुक्ति कहो कहँ पाइये जी।
मुक्ति के हाथ औ पाँव नहीं, किस भाँति सेती दिखलाइये जी॥
ज्ञान ध्यान की बात बूझिये, या मन को खूब समझाइये जी।
पलटू मुये पर किन्ह देखा, जीवत ही मुक्त हो जाइये जी॥

शब्दार्थ—सेती=से।

भावार्थ—मुक्ति-मुक्ति कहकर सब उसे खोज रहे हैं। कहो भला, मुक्ति कहां मिलेगी ? मुक्ति के न हाथ हैं और न पांव हैं। किस प्रकार वह दिखाई देगी ? हे मुक्ति इच्छुक ! संतों से आत्मज्ञान और ध्यान की बात पूछो और अपने मन को खूब समझाकर उसे शुद्ध करो और अंततः संकल्पशून्य एवं दृश्य-अभाव करो। जब मन स्ववश हो गया, मर गया, हलचल बंद हो गयी, यही मुक्ति है। पलटू साहेब कहते हैं कि मरने के बाद मुक्ति किसने पायी ? जीते जी मुक्त हो जाओ।

विशेष—जीवन में उलझे रहकर मरने के बाद मुक्ति पाने की आशा भुलावा है। जीते जी मन उद्वेग-शून्य हो गया, सारी इच्छाएं बुझ गयीं, यही मुक्ति है। जो आज मुक्त है वह आगे सदा मुक्त है।

झूलना-54

उठै झनकार गगन के बीच में, लगा दिन राति इक रंग है जी।
टूट तहँ लगी है सुरति और निरति की, तान गावै सबद सोहंग है जी॥
सहज के खेल में जोति हीरा बरै, नहीं कोइ दूसरा संग है जी।
पलटू महल अठएँ ऊपर गई, हवास देखि के दंग है जी॥

शब्दार्थ—गगन= खोपड़ी। सोहंग= सोऽहम्, सः अहम्, वह मैं। अठएँ ऊपर= आठ चक्रों के ऊपर। आठ चक्र गुदा से लेकर खोपड़ी तक हैं, वे हैं मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा, सहस्रसार तथा सुरति कमल। हवास= होश, ज्ञान। दंग= विस्मित, चकित, स्तब्ध, आश्चर्यान्वित।

भावार्थ—ब्रह्माण्ड (खोपड़ी) में अनाहतनाद की झनकार उठ रही है। रात-दिन एक समान उसकी गति है। वहां सुरति-निरति का—मनोवृत्ति की लीनता का क्रम लगा है। वहां सोऽहम् शब्द का तान गाया जा रहा है। यह आत्मज्ञान की सहज-साधना में ज्ञान का हीरा प्रकाशित होता है। शुद्ध आत्मस्थिति में द्वैत नहीं रहता। वह असंग दशा है। पलटू साहेब कहते हैं कि जब आठों चक्रों के ऊपर गया, तब वहां के ज्ञान का अनुभव पाकर चकित रह गया।

झूलना-55

उस देस की बात मैं कहता हूँ, असमान के बीच सुलाख है जी।
बादसाह उसी के बीच बैठा, सूझि परै बिनु आँख है जी॥
सुरुख तो उसका चिहरा है, आफताब तसद्दुक लाख है जी।
पलटू वहँ हू हू अवाज आवै, उसमें मेरा दिल मुस्ताक है जी॥

शब्दार्थ—सुलाख= सुराख, छेद। सुरुख= सुर्ख़, लाल। आफताब= आफ़ताब, सूर्य। तसद्दुक= न्योछावर। मुस्ताक= मुश्ताक़, उत्सुक।

भावार्थ—मैं उस देश की बात कहता हूं जहां खोपड़ी के बीच में एक छेद है। बादशाह आत्मा उसी के बीच बैठा है। भौतिक आंखों के बिना वह

दिखता है। उसका चेहरा लाल है। लाखों सूर्य उस पर न्योछावर करने योग्य हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि वहां हू-हू की आवाज आती है। उसके लिए मेरा मन उत्सुक है।

विशेष—आठ चक्र रूपी महल काल्पनिक है। अनाहतनाद नसों की झनकार है। यह आरंभिक साधना में मन रोकने का एक आधार मात्र है। इसके आगे सोऽहम् का भाव उत्तम है कि जिसे मैं खोजता हूं वह मैं हूं।

खोपड़ी के तालुमूल के छेद में आत्मा बैठा है और वह लाल रंग का है, यह कल्पित धारणा है। आत्मा रंग-रूप रहित ज्ञान मात्र है। हू-हू की आवाज भी कल्पित है।

झूलना-56

प्रतिबिंब अकास को देखा चहै, भरै घट में उसका भास है जी।
उसी घट को फिर फोरि डारै, आखिर को रहै अकास है जी॥
इस भाँति से जड़ सरीर मँहै, चेतन करै परगास है जी।
पलटू सरीर का नास होवै, चेतन का नाहीं नास है जी॥

शब्दार्थ—परगास= प्रकट, उजाला, ज्ञानस्वरूप।

भावार्थ—आकाश का प्रतिबिम्ब देखने की इच्छा हो तो जल से भरे हुए घड़े में उसका आभास देखा जा सकता है। यदि उस घट को फोड़ दे तो आकाश नहीं फूटता है, अपितु घट में पड़े हुए आकाश के प्रतिबिम्ब का नाश होता है। इसी प्रकर जड़-शरीर में चेतन आत्मा रहता है और उसका ज्ञान उसमें प्रकाश करता है। पलटू साहेब कहते हैं कि शरीर का नाश होता है, चेतन का नाश नहीं होता।

विशेष—आकाश शून्य है। उसका प्रतिबिम्ब नहीं होता। जल में जो दिखता हुआ प्रतिबिम्ब है जिसे आकाश का प्रतिबिम्ब कहा जाता है, वह आकाश में फैले हुए गर्दा-गुब्बार का, जड़कणों के घनाकार का प्रतिबिम्ब है, आकाश का नहीं। यह सत्य है कि शरीर का नाश होता है, चेतन आत्मा का नहीं।

झूलना-57

अपने सरूप को जिन्ह पाया, वह जाय रहा भवपार है जी।
असाध को साधि चेतन्न किया, भीतर बाहर उजियार है जी॥

जीव ब्रह्म की गाँठि को खोलि डारा, निरवार लिया सब सार है जी।
पलटू कुछ भूख पियास नहीं, उसी नाम का एक अधार है जी॥

शब्दार्थ—असाध= असाध्य, अति कठिन। निरवार= निर्णय।

भावार्थ—जो मनुष्य अपने चेतन स्वरूप को समझकर उसमें स्थित हो गया, वह संसार-सागर से पार हो गया। आज तक मन का सुलझना असंभव लगता था, उसे सुलझाकर पूर्ण शांत कर लिया और सावधान कर लिया। अब भीतर-बाहर के सारे व्यवहार ज्ञान-प्रकाश में होने लगे—भीतर मन शांत है और बाहर व्यवहार सुलझा है। जीव और ब्रह्म के अबोध की ग्रंथि को विवेक से खोल डाला और निर्णय हो गया कि जीव स्वयं ब्रह्म है, सार-सत्य स्वरूप है। पलटू साहेब कहते हैं कि स्वस्वरूप का बोध होते ही संसार की कोई इच्छा नहीं रह गयी। स्वरूपज्ञान में ही निरंतर स्थिति हो गयी।

झूलना-58

उस घर का भेद न कोउ जानै, जहँवा सेती जिव आवता है।
सब खोजत खोजत मूइ गये, उस घर का भेद न पावता है॥
अधबीच सेती सब लोग फिरे, उक्ती सेती ठहरावता है।
पलटू हम ने तहकीक किया, सब और का और बतावता है॥

शब्दार्थ—सेती= से। मूइ गये= मर गये। उक्ती= उक्ति, कथन, वाणी। तहक़ीक़= जांच-पड़ताल, अनुसंधान।

भावार्थ—जीव जहां से आते हैं, उस स्थान का रहस्य कोई नहीं जानता। इस तथ्य को खोजते-खोजते सब मर गये, उसका पता कोई नहीं पाता है। आधे बीच से ही सब लौट पड़ते हैं। केवल वाणी के बल से अपनी-अपनी कल्पना को खड़ी करते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि मैंने अनुसंधान करके देखा, तो लगा कि सब मतवादी विभिन्न काल्पनिक बातें करते हैं।

विशेष—कोई ऐसा स्थान नहीं है जहां सब जीव रहते हों और वहां से संसार में आते हों। जड़-चेतन दोनों नित्य हैं। दोनों सब समय रहते हैं। अविनाशी चेतन वासना-वश देह धरते-छोड़ते रहते हैं। जो जीव सब वासना छोड़ देता है, वह अपने आप में स्थित हो जाता है और सदैव के लिए मुक्त हो जाता है।

झूलना–59

बेद पुरान पंडित बाँचै, करता अपनी दूकान है जी।
अरथ को बूझि के टीका करै, माया में मन बिकान है जी॥
औरन को परमोध करै, खाली आपना मकान है जी।
पलटू कागद में खोजत है, साहिब कहीं लुकान है जी॥

शब्दार्थ—परमोध= प्रबोध, ज्ञान। लुकान= छिपा।

भावार्थ—पंडित वेद-पुराण पढ़ते हैं और धर्म की अपनी दुकान करते हैं। मूल के अर्थ को समझकर टीका करते हैं, परन्तु उनका मन माया में बिका है। वे दूसरे को तो ज्ञान देते हैं, परन्तु उनका अपना हृदय ज्ञान से खाली है—मन पवित्र नहीं है। पलटू साहेब कहते हैं कि लोग पोथी-पत्रा में खोजते हैं। क्या परमात्मा कहीं छिपा बैठा है ?

झूलना–60

और को मैं नहिं जानता हौं, निंदक साहिब मेरा है जी।
जिन्ह ने मेरी नजात किया, करौं कदम में डेरा है जी॥
धोबी होय करि साफ करै, ऐसा गुरु हम हेरा है जी।
पलटू उन्हैं दंडौत करै, वोही साहिब हम चेरा हैं जी॥

शब्दार्थ—साहिब= स्वामी, गुरु। नजात= निजात, मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा।

भावार्थ—मैं अन्य को नहीं जानता हूं। मेरी निन्दा करने वाला मेरा गुरु है। उसी ने मुझे मुक्ति दिलायी है; इसलिए उसके कदमों में झुकता हूं। मैंने अपना ऐसा गुरु खोजा है जो धोबी बनकर मेरा मल धोता है। पलटू साहेब कहते हैं कि मैं अपने निन्दक का साष्टांग–आठों अंगों—सिर, हाथ, पैर, आंख, जांघ, हृदय, वचन और मन से प्रणाम करता हूं। मेरा निन्दक मेरा गुरु है, मैं उसका दास हूं।

झूलना–61

संतन की निंद न कीजिये जी, संतन की निंद में नाहिं भला।
चौरासी भोग वह भोगि आया, चौरासी भोगन फेरि चला॥
संतन को कुछ परवाह नहीं, अपने पाप सेती वह आप जला।
पलटू उसका जो मुँह देखै, तिस का भी मुँह फिर होय काला॥

शब्दार्थ—निन्द= निन्दा। सेती= से।

भावार्थ—संतों की निन्दा मत करो। संतों की निन्दा करने से भलाई नहीं होगी। जीव चौरासी चक्कर का भोग कर आया है। यदि आज मन मैला करेगा तो पुनः चौरासी चक्कर में घूमेगा। संतों को तो इसकी चिन्ता नहीं रहती है कि हमें कोई क्या कहता है ? वस्तुतः निन्दक अपने मन की खराबी की आग में स्वयं जलता है। पलटू साहेब कहते हैं कि निन्दक का समर्थक भी नीची गति को जाता है।

झूलना-62

भजनीक जो होय सो भजन करै, भजनीक के बीच में हम नाहीं।
भजन में जाइ के बैठि रहै, अब कौन करै आवाजाही॥
लोन की डेरी फिर कौन खावै, जब जाय परी वह सिंधु माहीं।
पलटू कहकहा जिन्ह झाँका, उनको अब आवना क्या चाही॥

शब्दार्थ—भजनीक= भजन गाकर उपदेश करने वाला। भजन= सेवा, आराधना; स्वत्व; विभाजन; आत्मस्थिति। डेरी= डली। कहकहा= क़हक़हा, खिलखिलाकर हंसना; जोर की हंसी; चीन की दीवार जो उत्तरी जातियों के आक्रमण से बचने के लिए पंद्रह सौ मील लम्बी बनवायी गयी थी। यह सात आश्चर्यों में गिनी जाती है। यहां अर्थ है आत्मस्थिति की मस्ती।

भावार्थ—भजन गानेवाले या कीर्तन करनेवाले वह सब करें। मैं उनके बीच का जीव नहीं हूं। मैं जाकर भजन में बैठ गया हूं। सदैव स्वतः स्वरूप में लीन हूं। अब कौन भजन-कीर्तन में आवाजाही करे ? जब नमक की डली समुद्र में गल गयी तब उसे कौन खावे ? पलटू साहेब कहते हैं कि स्वरूपस्थिति के अखंड आनन्द का जिनको निरंतर अनुभव हो रहा है, उनको अब क्या पाना शेष रह गया ?

झूलना-63

द्वादस आँगुर बैठे चलै, चलत अठारह जाय है जी।
सूते के ऊपर तीस आँगुर, चौसठि मैथुन को थाह है जी॥
जती तपी की आठ आँगुर, जोगी की चारि ठहराव है जी।
जिसके भीतर बाहर नाहीं, तेहि काल कधी नहिं खाय है जी॥
पलटू आठ आँगुर जाय भीतर को, वाकी देह नहीं नसाय है जी॥

शब्दार्थ—आँगुर= अंगुल।

भावार्थ—बैठे हुए मनुष्य का बारह अंगुल, चलते हुए का अठारह अंगुल, सोने वाले का तीस अंगुल, मैथुन के समय चौसठ अंगुल, यती तथा तपस्वी का आठ अंगुल, योगी का चार अंगुल श्वास बाहर चलता है। जो मनुष्य देह के भीतर-बाहर की कल्पना छोड़कर स्वरूपलीन है, वह काल से मुक्त है। पलटू साहेब कहते हैं कि जिसका श्वास आठ अंगुल भीतर चलता है उसकी देह नष्ट नहीं होती।

विशेष—शब्द के अनुसार अर्थ कर दिया गया है। इसका विषय इन पंक्तियों के लेखक को अनुभूत नहीं है। स्वरूपलीन काल से मुक्त है, यह यथार्थ है, क्योंकि वह कालातीत अमर आत्मा में लीन है। आठ अंगुल श्वास भीतर चले तो उसकी देह अमर हो जाती है, यह बात समझ में नहीं आती है, क्योंकि देह सबका नश्वर है।

झूलना-64

भूत पिसाच जो पूजत हैं, फिर फिर होवै वै भूत है जी।
भूत जोनि भरमत फिरैं, उनका वही आकूत है जी॥
गुबरैला फूल पै ना बैठे, वो जा बैठे गुह मूत पै जी।
पलटू कुल रीति नहीं छोड़ै, जहाँ बाप गया तहाँ पूत है जी॥

शब्दार्थ—आकूत= अभिप्राय।

भावार्थ—जो मनुष्य भूत-पिशाच पूजते हैं, वे बारंबार भूत-पिशाच ही होते हैं। वे भूत-प्रेत की योनि में भटकते-फिरते हैं, क्योंकि उनकी मानसिकता का यही अभिप्राय है। गोबर का कीड़ा फूलों पर नहीं बैठता है। वह मल-मूत्र पर ही बैठता है। पलटू साहेब कहते हैं कि संसारी लोग अपने कुल की बुरी रीति नहीं छोड़ते। जहां पिता गया, वहीं पुत्र जाता है।

विशेष—भूत-प्रेत केवल भ्रम है। इनकी कोई योनि नहीं है। भूत-प्रेत पूजने वाले अज्ञान में भटकते हैं। जब भूत-प्रेत की योनि है ही नहीं तब उसमें कोई जायेगा क्या!

झूलना-65

पंडित अच्छर को बूझि गया, फिर नहिं पोथी वह बाँचैगा।
भिच्छुक सेती बादसाह भया, वह नहिं भिच्छा को जाचैगा॥

मूरति की सूरति आप भया, मूरति आगे क्या नाचैगा।
पलटू जगत की चाल भूलै, जब अपने रंग में राचैगा॥

शब्दार्थ—सेती= से। जांचैगा= मांगेगा।

भावार्थ—जब पंडित अच्छर के अभिप्राय स्वरूप अक्षय निज स्वरूप आत्मा को समझ गया, तब वह पोथियों में नहीं उलझेगा। वह तो विषय-कामना की दरिद्रता से छूटकर निष्काम स्वरूपस्थिति की गद्दी का बादशाह हो गया। अब वह सांसारिक भोगों की भीख नहीं मांगेगा। जो देवमूर्ति का स्वरूप स्वयं हो गया, वह जड़-मूर्तियों के सामने क्या नाचेगा ? पलटू साहेब कहते हैं कि जब साधक अपने आत्मभाव में लीन हो गया, तब उसकी सांसारिकता की चाल भूल जाती है।

झूलना-66

चोर साह का काला मुँह करिके, जंगल के बीच में सोवना जी।
चुपचाप अकेले बैठि रहना, दिन रात काया को सोधना जी॥
जहँ बापु माई की गम्म नहीं, रोवना नाहीं हँसना जी।
पलटू जगत से दूरि रहौ, जान बूझि नाहक क्यों फँसना जी॥

भावार्थ—चोर और साहू की उपेक्षा करके जंगल में सोना, और अकेला शांत हो बैठकर रात-दिन अपने तन-मन के विकारों को निकालते रहना। स्वरूपस्थिति में माता-पिता की पहुंच नहीं है। वहां रोना-हंसना दोनों नहीं है। पलटू साहेब कहते हैं कि सांसारिक मायाजाल से दूर रहो। जान-समझ लेने के बाद भी व्यर्थ बंधनों में क्यों फंसना ?

झूलना-67

चलाचली की राह मँहै, भली भला कुछ कीजिये जी।
आखिर को मरना ठीक हुआ, दुख नाहिं किसी को दीजिये जी॥
जिसमें परस्वारथ होय सकै, उस ज्ञान को घोरि के पीजिये जी।
पलटू कारिख को धोय डारै, चंदन का टीका लीजिये जी॥

शब्दार्थ—कारिख= तन-मन-वचन की मलिनता। चंदन= सद्गुण।

भावार्थ—जगत चला-चली की राह है। यहां से चल देना है; इसलिए जो बन सके भलाई का काम कीजिए। अंततः शरीर और संसार आज-कल में छोड़ देना है, इसलिए किसी प्राणी को दुख न दीजिए। ऐसे ज्ञान का प्याला

घोलकर पीजिए जिससे दूसरे का कल्याण कर सको। पलटू साहेब कहते हैं कि तन, मन तथा वाणी के दुष्कर्मों को विवेक से धो डालो और सद्‌गुण रूपी चंदन का जीवन में लेपन करो।

झूलना-68

दुरवेस उधर की बात कहौ, जिससे हुआ दुरवेस है जी।
कौन चीज तू देखि आया, सो बात कहौ संदेस है जी॥
काला पियरा या सुरख देखा, केहि रँग कौने भेष है जी।
पलटू वह मेरा पीर भाई, जिन्ह जाय देखा वह देस है जी॥

शब्दार्थ—दुरवेस= दरवेश, फकीर, संत। सुरख= सुर्ख़, लाल। पीर= गुरु।

भावार्थ—हे दरवेश ! जिस उद्देश्य को लेकर तुम दरवेश हुए हो, उसकी बात बताओ। तुमने क्या अनुभव किया, उसका मुझे उपदेश करो। जिसका तुमने दर्शन किया है, वह काला है कि पीला अथवा लाल है ? उसका क्या रंग तथा कैसा वेष एवं स्वरूप है ? पलटू साहेब कहते हैं कि हे भाई ! जिसने आत्म-देश का अनुभव किया है, वह फकीर मेरा पीर है, गुरु है।

विशेष—सच्चा संत एवं फकीर मन को संकल्पशून्य कर आत्मलीन रहता है। उसमें न कोई रूप है और न रंग। वह तो प्रपंचशून्य आत्मसत्ता एवं स्व-अस्तित्व मात्र है।

अरिल

20. सद्‌गुरु और संत

अरिल-1

तिरगुन रोग प्रचंड जगत सब मरि गया।
औषद पीसें करम कारगर ना भया॥
अधिक अधिक गरुवाय दुक्ख लिये खोयगा।
अरे हाँ पलटू सतगुरु मिलै जो बैद नीक तब होयगा॥ 1॥

शब्दार्थ—तिरगुन= त्रिगुण—रज, सत और तम। नीक= अच्छा, नीरोग।

भावार्थ—जड़ प्रकृति के तीनों गुणों का रोग सब देहधारियों को लगा है और वे उसी में घुल-घुल कर मरते हैं। लोग कर्मकांड के बाह्याडंबर की औषध घोटकर पीते हैं, परन्तु वह रोग दूर करने में सफल नहीं होता। बल्कि कर्मजाल में फंसकर भवरोग का बोझा अधिकाधिक बढ़ता है। इसी दुख में पड़े-पड़े सब जीव अपने को धोखे में खोते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि जब सद्गुरु रूपी वैद्य मिले, तब जीव भवरोग से मुक्त होता है।

अरिल-2

जो कोइ चाहै नाम तो नाम अनाम है।
लिखन पढ़न में नाहिं निःअच्छर काम है॥
रूप कहौ अनरूप पवन अनरेख ते।
अरे हाँ पलटू गैब दृष्टि से संत नाम वह देखते॥ 2॥

शब्दार्थ—गैब दृष्टि= प्रपंच-शून्य दृष्टि। निःअच्छर= वर्ण-मात्रा से रहित। अनरूप= रूपरहित। अनरेख= रूप-रेख रहित।

भावार्थ—यदि कोई परमतत्त्व का बोध नाम के आधार पर चाहता है तो वह नाम अनाम है—नाम-रूप से परे है। वह लिखने-पढ़ने में नहीं आता है। वह वर्ण-मात्रा से परे तत्त्व है। आत्म स्वरूप को वैसे रूपरहित कहना चाहिए जैसे वायु बलवान होकर भी रूप-रेख रहित है। पलटू साहेब कहते हैं कि संत जन संकल्प-शून्य दृष्टि से आत्मसाक्षात्कार करते हैं।

विशेष—निज स्वरूप स्वचेतन अस्तित्व भौतिक नाम-रूप से परे है। संकल्प शांत होने पर अपने अस्तित्व का साक्षात्कार होता है।

अरिल-3

नाम डोरि है गुप्त कोऊ नहिं जानता।
निःअच्छर निःरूप दृष्टि नहिं आवता॥
ररंकार आकार पवन को देखना।
अरे हाँ पलटू देखत हैं इक संत और सब पेखना॥ 3॥

शब्दार्थ—निःअच्छर= वर्ण-मात्रा से रहित। निःरूप= रूप से रहित। ररंकार= रमैयाराम चेतन।

भावार्थ—नाम एवं संज्ञा के आधार पर हम आत्मतत्त्व का बोध प्राप्त करते हैं। वह चित्तवृत्ति की शून्य अवस्था में फलित होता है। यह गुप्त भेद है। इसे बहिर्मुखियों में कोई नहीं जानता है। अपना आत्म-अस्तित्व वर्णमाला

और रूप-रंग से परे है। वह चर्मचक्षु से देखने की वस्तु नहीं है। जैसे वायु अदृश्य है वैसे आत्मा अदृश्य है। उसका आकार कहा जाय तो वह केवल ररंकार है, अर्थात रमैयाराम चेतन मात्र है। पलटू साहेब कहते हैं कि इस आत्मसाक्षात्कार दशा को कोई संत देखता है। शेष लोग तो देखने का दंभ करते हैं।

अरिल-4

फूटि गया असमान सबद की धमक में।
लगी गगन में आग सुरति की चमक में॥
सेसनाग औ कसठ लगे सब काँपने।
अरे हाँ पलटू सहज समाधि की दसा खबर नहिं आपने॥ 4॥

शब्दार्थ—असमान=आकाश, ब्रह्मरंध्र। सबद=अनाहतनाद। सुरति=मनोवृत्ति। चमक=एकाग्रता। सेसनाग=शेषनाग। कमठ=कच्छप।

भावार्थ—शब्द की धमक से आकाश फट गया और सुरति की चमक से गगन में आग लग गयी। पृथ्वी को अपने ऊपर धारण करने वाले शेषनाग और कच्छप कांपने लगे। पलटू साहेब कहते हैं कि सहज समाधि की दशा यही है कि साधक उस समय संसार को भूल जाता है।

विशेष—ग्रंथकार कवि-हृदय हैं। शब्द की धमक है अनाहतनाद और सुरति की चमक है मन की एकाग्रता। इससे मन-मस्तिष्क के परदे हट गये, तो शेषनाग और कच्छप जो पौराणिक पृथ्वी के धारक हैं, वे कांप उठे। यह कथन का तामझाम है। अर्थ है कि काम-क्रोधादि निरस्त हो गये। सहज-समाधि में मन लीन रहता है, इसलिए यह दशा प्रपंच-शून्यता की है।

अरिल-5

पुरजे पुरजे उड़ैं झूठ भरि ना कहै।
साहिब के घर बीच झुठाई ना लगै॥
त्यागै तन की आस कसौटी खरी है।
अरे हाँ पलटू तब रीझैगा राम भक्ति क्या परी है॥ 5॥

शब्दार्थ—भरि=मात्र, किंचित। लगै=चले। परी=व्यर्थ पड़ी।

भावार्थ—चाहे शरीर के पुरजे-पुरजे उड़ जायं, किन्तु किंचित भी झूठ न बोले; क्योंकि परमात्मा के घर में झुठाई नहीं चलती है। परमात्मा का घर है आत्मशांति, स्वरूपस्थिति की कसौटी खरी है। उसके लिए साधक शरीर को

रखने की आशा छोड़ देता है। पलटू साहेब कहते हैं कि तभी राम प्रसन्न होगा—आत्मा में विश्राम मिलेगा। ध्यान रहे, क्या भक्ति राह में गिरी-पड़ी वस्तु है कि उसे सहज ही उठा लो। देहाभिमान विसर्जित करने पर, जीते जी मर जाने पर स्वरूपस्थिति होती है जो सच्ची भक्ति है—'स्वस्वरूपानुसंधानं भक्तिरित्यभिधीयते' (आदि शंकराचार्य) स्वस्वरूप का अनुसंधान भक्ति कहलाता है।

संत

अरिल-6

संत भये बादसाह गैब के तखत पर।
छत्र फिरै हरिनाम किहा तिहु लोक सर॥
धजा फरक्कै सुन्न अदल भी बड़ी है।
अरे हाँ पलटू नौबति आठौ पहर गगन में झरी है॥ 6॥

शब्दार्थ—गैब=ग़ैब, अदृश्य, प्रपंच-शून्य, संकल्प-शून्य, दृश्य-अभाव की दशा। सर=विजय। अदल=न्याय। नौबति=नौबत, मंगलसूचक बाजा।

भावार्थ—संत संकल्प-शून्यता की स्थिति रूपी तख़्त पर बैठकर बादशाह हो जाते हैं। वे तीनों लोकों को जीत लेते हैं—दृश्य मात्र का मोह छोड़ देते हैं। उनका आत्मज्ञान छत्र घूमता है। उनके मन की प्रपंच-शून्यता ही उनका ध्वजा-पताका फहराना है। उनका न्याय भी बड़ा है—जड़ दृश्य को त्यागकर स्वत: द्रष्टा स्वरूप चेतन में ठहरना। पलटू साहेब कहते हैं कि उनके हृदय-गगन में आठों पहर अखंड आनन्द रूप मंगलसूचक बाजा बजता है।

अरिल-7

सब में बड़े हैं संत दूसरा नाम है।
तिसरे दस औतार तिन्हैं परनाम है॥
ब्रह्मा बिसुन महेस सकल संसार है।
अरे हाँ पलटू सबके ऊपर संत मुकुट सरकार है॥ 7॥

शब्दार्थ—नाम=सतनाम, आत्मज्ञान।

भावार्थ—सबसे बड़े संत हैं, वे ही सतनाम के अर्थस्वरूप आत्मा का ज्ञान देते हैं; अतएव पहले संत, तब आत्मज्ञान। तीसरे नम्बर में माने गये दस

अवतार हैं। उन्हें नमस्कार है। फिर तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सारा संसार ही है। पलटू साहेब कहते हैं संत सबके ऊपर सिरमुकुट हैं।

अरिल-8

जीवन है दिन चार भजन करि लीजिये।
तन मन धन सब वारि संत पर दीजिये॥
संतहिं के सब होइ जो चाहै सो करैं।
अरे हाँ पलटू संग लगे भगवान संत से वे डेरैं॥ 8॥

शब्दार्थ—वारि= निछावर।

भावार्थ—जीवन चार दिन का है। आत्मशोधन कर आत्मलीन होने की साधना करो। इसके लिए अपने तन, मन, धन एवं सर्वस्व संतों के चरणों में न्योछावर कर दो। संत से ही कल्याण का रास्ता मिलेगा। उनके उपदेश से ही मुमुक्षु का उद्धार होगा। पलटू साहेब कहते हैं कि भगवान भी संत के पीछे-पीछे घूमते हैं और उनकी शरण से अपना कल्याण चाहते हैं। वे संत से डरते हैं।

विशेष—श्रीमद्‌भागवत में श्री कृष्ण जी कहते हैं कि इच्छारहित, मननशील, शांत, निर्वैरी, समदर्शी संतों के पीछे मैं इसलिए घूमता हूं कि उनके चरणों की रज मेरे ऊपर पड़े और मैं पवित्र हो जाऊं। यथा—

निरपेक्षं मुनिं शातं निर्वैरं समदर्शनम्।
अनुव्रजाम्यहं नित्यं पूयेयेत्यंघ्रिरेणुभिः॥ भागवत 11, 14, 16॥

अरिल-9

ऋद्धि सिद्धि से बैर संत दुरियावते।
इन्द्रासन बैकुंठ बिष्टा सम जानते॥
करते अविरल भक्ति प्यासा हरिनाम की।
अरे हाँ पलटू संत न चाहैं मुक्ति तुच्छ केहि काम की॥ 9॥

शब्दार्थ—दुरियावते= भगाते हैं, हटाते हैं। अविरल= निरंतर, अखंड।

भावार्थ—संत ऋद्धि-सिद्धि की उपेक्षा करते हैं और उन्हें दूर खदेड़ते हैं। इंद्रासन और बैकुंठ को मल की तरह समझते हैं। वे अखंड आत्मलीनता की भक्ति करते हैं। उन्हें हर क्षण हरि नाम की प्यास रहती है। पलटू साहेब कहते हैं कि संत मुक्ति नहीं चाहते। वह तो उनके लिए तुच्छ और निरर्थक है।

विशेष—जो सबसे सब समय निष्काम है, वह निरन्तर मुक्त है। अब उसे बाहर से मुक्ति पाने का क्या प्रयोजन होगा? पलटू साहेब फक्कड़ी संत हैं, इसलिए वे झटके में बात कहते हैं। इससे सामान्य लोगों को भ्रम हो सकता है कि क्या वे मुक्ति नहीं मानते थे। परन्तु ध्यान रहे, वे सब समय मुक्त थे। जो पूर्ण निष्काम है, वह निरंतर मुक्त है।

अरिल-10

जिन्हके ज्ञान बैराग भक्ति में प्रीति है।
रहनी कहनी एक हारि ना जीति है॥
संतोषी निरवृति भजन पर सिर दिया।
अरे हाँ पलटू सबद बिबेकी संत आतमा बसि किया॥ 10॥

शब्दार्थ—निरवृत्ति= निवृत्ति, छुटकारा।

भावार्थ—जिनके हृदय में आत्मज्ञान है, विषयों से वैराग्य है और सद्गुरु-भक्ति में प्रीति है, जिनकी कथनी और रहनी एक समान है; जिनके मन में न हार है और न जीत है; जो पूर्ण संतोषी तथा जगत-प्रपंच से निवृत्त हैं, और जिन्होंने आत्मलीनता रूपी भजन में अपने को समर्पित कर दिया है; पलटू साहेब कहते हैं कि वे सारासार शब्दों के विवेकी संत आत्मस्ववश जीवन्मुक्त हैं।

अरिल-11

आगम कहैं न संत भड़ेरिया कहत है।
संत न औषधि देत बैद यह करत है॥
झार फूँक ताबीज ओझा को काम है।
अरे हाँ पलटू संत रहित परपंच राम को नाम है॥ 11॥

शब्दार्थ—आगम= होनहार, भविष्यकी बात। भड़ेरिया= पाखंडी। ओझा= सोखा, भुवा, बैगा। परपंच= प्रपंच।

भावार्थ—संत किसी का भविष्य नहीं बताते हैं। यह तो पाखंडियों का काम है। संत औषध देने का काम नहीं करते। यह वैद्यों का काम है। झाड़-फूंक करना तथा ताबीज बनाकर देना, यह ओझा का काम है। पलटू साहेब कहते हैं कि संत इन झगड़ों से रहित रामलीनता में रहते हैं।

अरिल-12

मोह माया को त्यागि जगत से भगे हैं।
करि इन्द्री का दमन भजन में लगे हैं॥
ज्ञान बिबेक विचार रहनि में रहत हैं।
अरे हाँ पलटू हरि संतन की बात ऊधौ से कहत हैं॥ 12॥

शब्दार्थ—रहनि= पवित्र आचरण, आत्मलीनता।

भावार्थ—संत माया-मोह को त्यागकर सांसारिक झगड़े से भाग खड़े हुए हैं। वे इन्द्रियों को अपने वश में करके आत्मलीनता के अभ्यास में लगे हैं। वे आत्मज्ञान, आत्मा-अनात्मा का विवेक, अनात्म का त्यागकर आत्मा में रमने की रहनी में हर क्षण रहते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि इस प्रकार संतों की बात हरिजी उधो से कहते हैं।

अरिल-13

केहू भेष में नाहिं रहै अड़बंग है।
देवे मंहै कुसाद खाय में तंग है॥
जग से रहै उदास महरमी अंत के।
अरे हाँ पलटू ऐसी रहनि रहै सो लच्छन संत के॥ 13॥

शब्दार्थ—अड़बंग= विचित्र, बेफिक्र। कुसाद= कुशाद, उदार। महरमी= भेद जानने वाला।

भावार्थ—जो किसी एक वेष में न रहकर विचित्र वेष में रहता है; दूसरों को देने में उदार है और अपने जीवन पर खर्च करने में मितव्ययी है; जो संसार की चमक-दमक से उदास रहता है और अंतिम दशा—स्वरूपस्थिति का ज्ञाता तथा उसमें रमने वाला है; पलटू साहेब कहते हैं कि जो ऐसी रहनी में रहता है, उसके संत के लक्षण हैं।

विशेष—किसी एक वेष में न रहकर विचित्र वेष में रहना संशोधनीय है। वस्तुतः तड़क-भड़क वेष में न रहकर सादे में रहना चाहिए और एक स्थिर वेष में रहना ठीक है।

अरिल-14

बिगत राग जो होय ज्ञान में चक्कवै।
तुरिया से आतीत भजन में पक्कवै॥

रहनी गहनी एक सबद पहिचानिये।
अरे हाँ पलटू ऐसा जो कोई होय गुरु करि मानिये॥ 14॥

शब्दार्थ—चक्कवै= चक्रवर्ती, सम्राट।

भावार्थ—जो सब प्रकार के मोह से रहित है, आत्मज्ञान में लीन चक्रवर्ती सम्राट है; तुरीया से भी ऊपर उठकर स्वरूपस्थिति में पक्का दृढ़ है; जिनकी रहनी और व्यवहार एक समान है; जो नाना प्रकार के शब्दों के सार-असार को पहचानता है; पलटू साहेब कहते हैं कि यदि ऐसा कोई संत मिले, तो उसे सद्गुरु समझकर आदर दो।

अरिल-15

आसन दृढ़ जो होय नींद आहार में।
अठएँ लोक की बात कहै टकसार में॥
आठौ पहर असोच रहै दिल खुसी पर।
अरे हाँ पलटू तन मन धन सब वार डारिहौं उसी पर॥ 15॥

शब्दार्थ—टकसार= निर्णय, सच्चा, सत्य। असोच= चिंतारहित।

भावार्थ—जो आसन में दृढ़ है, भोजन और नींद में संयमी है, आठवें लोक की बात का सही निर्णय करता है; जो चौबीसों घंटे चिंतारहित तथा प्रसन्नचित्त रहता है, पलटू साहेब कहते हैं कि मैं अपने तन, मन, धन उसी के चरणों में न्योछावर कर दूंगा।

विशेष—आठवें लोक की बात संभवतः आठवां चक्र सुरति कमल हो, जो काल्पनिक है। आठवें लोक का सही रूप कहा जा सकता है पांच ज्ञानेन्द्रियां, मन और बुद्धि से परे स्वस्वरूप चेतन। वही आत्मा है और वही अपना लोक है।

अरिल-16

दुख सुख संपति विपति मान अपमान है।
सत्रु मित्र भूपाल सो एक समान है॥
कनक काँच ना भेद ज्ञान में तिच्छना।
अरे हाँ पलटू ऊधौ से हरि कहैं संत के लच्छना॥ 16॥

शब्दार्थ—तिच्छना= तीक्ष्ण, तेज, प्रवीण।

भावार्थ—दुख, सुख, संपत्ति, विपत्ति, मान, अपमान, शत्रु, मित्र, प्रजा, राजा, कनक और कांच में समान बुद्धि रखने वाले तथा आत्मज्ञान में प्रवीण

होना संत के लक्षण हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि हरिजी ऐसा ऊधो से कहते हैं।

अरिल-17

संत हमारे प्रान रहौं मैं साथ में।
तीन लोक सब रहै संत के हाथ में॥
मोहूँ डारै बेचि उजुर मैं ना करौं।
अरे हाँ पलटू हरि ऊधौ से कहैं संत से मैं डेरौं॥ 17॥

शब्दार्थ—उजुर= उज्र, आपत्ति, विरोध।

भावार्थ—पलटू साहेब कहते हैं कि हरिजी ने ऊधो से कहा कि संत मेरे प्राण हैं। मैं सदा संतों के साथ रहता हूं। संत के हाथों में तीनों लोक और सब कुछ रहता है। संत चाहे तो वे मुझे दूसरों के हाथों में बेच दें; अतएव मैं संत के विपरीत कुछ भी नहीं कहता हूं। मैं संतों से डरता रहता हूं।

अरिल-18

संत हमारी देह और ना कोऊ है।
ढरै पसीना संत ढरै मोर लोहू है॥
दोनों एक सरीर देखत कै दुइ धरौं।
अरे हाँ पलटू हरि ऊधौ से कहैं दुष्ट राई करौं॥ 18॥

शब्दार्थ—लोहू= रक्त। राई= राजा, श्रेष्ठ।

भावार्थ—हरि जी ऊधो से कहते हैं कि संत मेरी देह हैं और संत के समान मेरा कोई नहीं है। जहां संत का पसीना गिरता है वहां मेरा रक्त गिरता है। मैं और संत देखने में दो हैं, वस्तुतः एक शरीर हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि संतजन दुष्ट को उपदेश देकर उसे श्रेष्ठ मनुष्य बना देते हैं।

अरिल-19

संत का मैं संत मोर अंतर ना तनिक है।
संत बिना मैं जैसे फनि बिनु मनि कहै॥
लछमी मोर सरीर सो दासी संत की।
अरे हाँ पलटू हरि ऊधो से कहैं बात यह तंत की॥ 19॥

शब्दार्थ—फनि= सर्प। मनि= मणि। तंत= तत्त्व, सत्य।

भावार्थ—पलटू साहेब कहते हैं कि हरि जी ने ऊधो से कहा कि मैं संत का हूं और संत मेरे हैं। हम दोनों में थोड़ा भी अंतर नहीं है। मैं संतों के बिना वैसे नहीं जी सकता जैसे मणि के बिना सर्प नहीं जी सकता। लक्ष्मी मेरा शरीर है, परन्तु वह संतों की दासी है। यह सब सत्य है।

अरिल-20

तिल को तेल बसाय फूल के संग में।
सलिता गंगा होत परै जब गंग में॥
लोहा कंचन होय पारस के परस से।
अरे हाँ पलटू मूरख कथते ज्ञान संत के दरस से॥ 20॥

शब्दार्थ—बसाय= सुगन्धित होता है। सलिता= सरिता, नदी।

भावार्थ—तिल का तेल फूलों के साथ सुगन्धित हो जाता है। साधारण नदियां गंगा में मिलकर गंगा हो जाती हैं। लोहा पारस के स्पर्श से सोना हो जाता है। पलटू साहेब कहते हैं कि मूर्ख भी संतों के दर्शन-सत्संग पाकर आत्मज्ञान का प्रवक्ता हो जाता है।

अरिल-21

संतन किया बिचार पुजबे को दोय है।
की हरि की हरि भक्त और न कोय है॥
सब देवन के देव बड़े तिहुँ काल में।
अरे हाँ पलटू और देव को पूजि परै जंजाल में॥ 21॥

शब्दार्थ—जंजाल= उलझन।

भावार्थ—संतों ने विचार किया कि पूजने योग्य दो हैं; एक हरि और दूसरा हरिभक्त। इनके अलावा कोई पूज्य नहीं है। संत-भक्त तीनों काल में सब देवों के देव हैं। अन्य देव को पूजकर तो उलझन में पड़ना है।

विशेष—संत, भक्त या प्राणी के अलावा कोई हरि नहीं मिल सकता, जिसकी पूजा की जा सके। वस्तुतः हरि प्राणि समूह है और उसमें संत-भक्त उच्च हैं।

अरिल-22

हरिजन हरि हैं एक सबद के सार में।
जो चाहैं सो करैं संत दरबार में॥

तुरत मिलावै नाम एक ही बात में।
अरे हाँ पलटू लाली मेंहदी बीच छिपी है पात में॥ 22॥

शब्दार्थ—हरिजन= संत, भक्त, ज्ञानी।

भावार्थ—हरिजन, ज्ञानी संत जन ही हरि हैं। हरि शब्द का सार यही है। संत दरबार में वे जो चाहें वह करें। वे एक ही बात में सतनाम के अर्थ स्वरूप आत्मबोध तुरंत देते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि मेंहदी के हरे पात में जैसे लाली छिपी है, वैसे आत्मा में परमात्मत्व छिपा है।

अरिल-23

जो तू चाहै नाम बैठु सतसंग में।
संत मिला जो होय केहू के रंग में॥
उनसे सब कछु होय फलै में फूल है।
अरे हाँ पलटू हरि जन हरि में रहै बास ज्यों फूल है॥ 23॥

शब्दार्थ—नाम= सतनाम, सतनाम का तात्पर्य आत्मबोध।

भावार्थ—यदि तुम सतनाम का अर्थस्वरूप आत्मबोध चाहते हो, तो विवेकवान संतों के सत्संग में बैठो। यदि विवेकवान संत मिले हैं, वे किसी भी रूप में हों, उन्हीं से कल्याण की सारी बातें होंगी। फूल से फल होता है और अंततः फूल मानो फल ही में समा जाता है। संत से आत्मज्ञान मिलता है और संत आत्मज्ञान में समा जाते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि संतजन हरि में उसी प्रकार लीन रहते हैं जिस प्रकार फूल में उसकी सुगंध।

विशेष—हरि आत्मा है। संतजन आत्मलीन रहते हैं। यही उनकी हरि में लीनता है।

21. वैराग्य

अरिल-24

तुरी अठारह लाख अमीरी बलख की।
दिया मर्द ने छोड़ आस सब खलक की॥
चिथरा पहिरि लँगोटी साका कै गया।
अरे हाँ पलटू रहा अखाड़े का यार फकीरी लै गया॥ 24॥

शब्दार्थ—तुरी= घोड़ा; सवार। खलक= ख़ल्क़, जीव समूह, जगत। साका= कीर्ति का संवत।

भावार्थ—बलख बुखारे का बादशाह जिसके पाठ अठारह लाख घोड़े और घुड़सवार थे, बलख बुखारे की अमीरी थी, वह वैराग्य-वीर पूरे संसार के भोगों की आशा त्यागकर फकीर हो गया। उसने चिथड़े की लंगोटी पहनकर विरक्ति ले ली और अपनी कीर्ति का संवत चला गया। पलटू साहेब कहते हैं कि वह साधु के अखाड़े का यार था। उसने सच्ची फकीरी की।

अरिल-25

गोरख डारा कूप मँहै लै दरब को।
बारह बरस सुकदेव तजा ना गरभ को॥
दत्तात्रय सनकादि माया तजी केतनी।
अरे हाँ पलटू बड़े खिलाड़ी यार हमारे ओतनी॥ 25॥

शब्दार्थ—दरब= द्रव्य, धन। केतनी= कितने ही, बहुत। ओतनी= सगे भाई।

भावार्थ—गोरखनाथ ने धन को कुएं में डाल दिया। शुकदेव संसार को दुख रूप समझकर माता के गर्भवास से बारह वर्ष तक नहीं निकले। दत्तात्रय, सनक, सनंदन, सनातन, सनत्कुमार आदि कितने वैराग्यवान माया को त्यागकर विरक्तिमार्ग अपनाये। पलटू साहेब कहते हैं कि ये हमारे सगे भाई विरक्त वैराग्यवान बड़े खेलाड़ी यार हैं।

विशेष—कहते हैं कि गोरखनाथ जी महाराज अपने शिष्यों के सहित चल रहे थे। उनका सेवक शिष्य अपने झोले की बड़ी चिन्ता रखता था। यह बात गोरखनाथ जी समझ गये। उन्होंने उसके झोले से अशर्फियां निकालकर कुएं में डाल दीं और अपने शिष्य से कहा कि अब तू झोले की चिंता से मुक्त हो गया।

शुकदेव जी बारह वर्ष की उम्र में ही विरक्त हो गये; तो अतिशयोक्ति में कहा गया कि वे जगत को दुखरूप समझकर माता के गर्भ में बारह वर्ष तक रह गये। उसके बाद पैदा हुए।

पलटू साहेब कहते हैं कि ये सभी विरक्त फकीर मेरे ओतनी हैं, सगे भाई हैं।

22. कच्चा वैराग्य

अरिल-26

मरै मँहै जिव डरै जिवै की चाहना।
बिपति मँहै दुख होय सम्पति मँह गावना॥

सबसे रहै पुजाय पूजना कष्ट है।
अरे हाँ पलटू कंचन काँच से भेद फकीरी नष्ट है॥ 26॥

शब्दार्थ—मरै मँहै= मरने से।

भावार्थ—पलटू साहेब कहते हैं कि मरने से डरता है, जीते रहने की इच्छा है, विपत्ति आने पर दुखी होता है, संपत्ति पाने पर प्रसन्न होकर उसकी डींग हांकता है, अपने को सबसे पुजवाने की चेष्टा है, किन्तु दूसरे को पूजने में कष्ट है और कंचन तथा कांच में अंतर मानता है, तो फकीरी नष्ट है।

विशेष—कंचन और कांच में व्यवहारत: भेद तो है ही, किन्तु विवेकवान कंचन को अंतत: मिट्टी समझते हैं, इसलिए उसके लिए लालच नहीं करते हैं।

अरिल-27

अस्तुति से खुश होय निंदा में क्रोध है।
मित्र सेती है भाव दुष्ट से विरोध है॥
सादी में सुख होय गमी में रोवना।
अरे हाँ पलटू हर्ष सोक जो रहै फकीरी खोवना॥ 27॥

शब्दार्थ—सादी= शादी, खुशी, अनुकूलता; विवाह।

भावार्थ—पलटू साहेब कहते हैं कि अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न होता है, निन्दा सुनकर क्रोधित होता है, मित्र से मोह है, वैरी के प्रति क्रोध है। अनुकूलता में, आनन्द में फूलता है और प्रतिकूलता में रोता है। इस प्रकार जिसके जीवन में हर्ष-शोक है, उसकी फकीरी खो गयी है।

23. भेष

अरिल-28

अटकि रहे सब जाय माया का चहला भारी।
बूड़ैं औ उतरायँ पंडित ज्ञानी ब्रह्मचारी॥
ये कलऊ के भक्त ब्याज दे करते बट्टा।
अरे हाँ पलटू बटुरि बटुरि सब स्यार सिंह को मारै ठट्टा॥ 28॥

शब्दार्थ—चहला= कीचड़, दलदल। कलऊ= कलियुग। बट्टा= दलाली। बटुरि= इकट्ठा होकर।

भावार्थ—माया का दलदल भयंकर है। उसमें वेषधारी फंसते हैं। पंडित-ज्ञानी और ब्रह्मचारी उसी में डूबते-उतराते हैं। ये कलियुगी वेषधारी ब्याज पर अपने रुपये देते हैं, माल खरीदने-बेचने में दलाली का कमीशन खाते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि जैसे बहुत-से सियार इकट्ठे होकर सिंह की हंसी उड़ावें, वैसे ये कलियुगी वेषधारी वैराग्यवानों की खिल्ली उड़ाते हैं।

अरिल-29

सस्ते मँहै अनाज खरीद कै राखते।
महंगी में डारैं बेचि चौगुना चाहते॥
देखो यह बैराग दाम को गाड़ते।
अरे हाँ पलटू जम की बात है दूर हाकिम अब डाँड़ते॥ 29॥

शब्दार्थ—दाम= रुपये। जम= यम, वासना। हाकिम= सरकारी अधिकारी।

भावार्थ—ये कच्चे साधुवेषधारी अन्न पैदा होने के समय में उसे सस्ते में खरीदकर रखते हैं। जब अन्न महंगा होता है तब उसे बेचते हैं और लाभ चौगुना चाहते हैं। इनका वैराग्य तो देखो, रुपये को जमीन में गाड़कर रखते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि यमराज तो उन्हें समय से दंड देंगे। वर्तमान में तो सरकारी अधिकारी ही इनको दंडित करते हैं।

अरिल-30

करते बट्टा ब्याज कसब है जगत का।
माया में है लीन बहाना भगति का॥
तनिक कहीं नहिं छुई गया बैराग है।
अरे हाँ पलटू जनमें पूत कपूत लगाया दाग है॥ 30॥

शब्दार्थ—कसब= कस्ब, धनोपार्जन, व्यवसाय, पेशा।

भावार्थ—दलाली का कमीशन खाना, ब्याज पर पैसा देना संसारी मनुष्य का पेशा है। यदि साधु ऐसा करे तो वह माया में लीन है। उसका भक्ति-वैराग्य बहाना मात्र है। उसके जीवन में वैराग्य का थोड़ा भी स्पर्श नहीं हुआ है। पलटू साहेब कहते हैं कि साधु-वेष में शिष्य नहीं, वैराग्य-वेष में दाग लगाने वाले कुशिष्य हैं।

अरिल-31

पगरी धरा उतारि टका छः सात का।
मिला दुसाला आय रुपैया साठ का॥

गोड़ धरे कछु देहि मुड़ाए मूड़ के।
अरे हाँ पलटू ऐसा है रुजगार कीजिये ढूँढ़ि के॥ 31॥

शब्दार्थ—पगरि= पगड़ी। टका= रुपया। दुसाला= दुशाला, उत्तम ऊनी शाल। रुजगार= रोजगार, व्यापार।

भावार्थ—छह रुपये की पगड़ी सिर से उतारकर धर दी और साधु वेष धर लिया तो साठ रुपये का दुशाला मिल गया। सिर मुड़ाकर साधु-वेष धर लेने पर लोग उनके पैर छूते हैं और कुछ वस्त्र-द्रव्य आदि भी देते हैं। पलटू साहेब नकली वेषधारियों से व्यंग्य में कहते हैं कि यह तुम्हारा साधु-वेष करने का व्यापार अच्छा है। इसे खोज कर कीजिए।

अरिल-32

मसक्कत ना ह्वै सकी मुड़ाया मूड़ तब।
सेंति मेंति में खाय मिला औसान अब॥
तब नागा ह्वै लिहिन रहे ना काम के।
अरे हाँ पलटू मारि पीटि के खाहिं सो बेटा राम के॥ 32॥

शब्दार्थ—मसक्कत= मशक्कत= मेहनत, परिश्रम। सेतिमेंति= निःशुल्क, मुफ्त। औसान= सुख, सहज में।

भावार्थ—घर-गृहस्थी में रहकर मेहनत न कर सके, तो मूड़ मुड़ाकर नागा-साधु हो गये। अब सहज और मुफ्त में खाने-पीने को मिल रहा है। जब घर में काम-काज न कर सके तब नागा बाबा बन गये। पलटू साहेब कहते हैं कि अब ये राम के भक्त बने जनता को मारपीट कर खाते हैं।

अरिल-33

करामाति नट खेल अंत पछितायगा।
चटक मटक दिन चारि नरक में जायगा॥
भीर भार से संत भागि के लुकत हैं।
अरे हाँ पलटू सिद्धाई को देखि संत जन थुकत हैं॥ 33॥

शब्दार्थ—करामाति= करामात, चमत्कार, कार्य-कारण व्यवस्था से रहित घटना। लुकत हैं= छिपते हैं।

भावार्थ—चमत्कार दिखाना जालसाजी नट-खेल के समान है। यह सब करनेवाला धार्मिक वेषधारी अंत में पश्चाताप करेगा। वह चार दिन की भीड़ और धन की चमक-दमक में चौंधियाकर अंत में नरक जायेगा। संत तो

भीड़भाड़ से हटकर एकांत सेवन करते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि सिद्धि का संत जन तिरस्कार करते हैं।

अरिल-34

झूठा सब संसार झूठे पतियात हैं।
दुइ झूठे इक ठौर नरक में जात हैं॥
जहँवा सुनैं पखंड तहाँ सब धावते।
अरे हाँ पलटू संतन केरे पास कोऊ नहिं आवते॥ 34॥

शब्दार्थ—पतियात= विश्वास करते हैं। पाखंड= दिखावा, जालसाजी।

भावार्थ—संसार के अधिक लोग झूठी एवं क्षणिक वस्तुओं के इच्छुक हैं। इसलिए उनको धोखा देने वाले झुठाई का जाल फैलाते हैं और उसी में सब विश्वास करते हैं। इस प्रकार दो झूठे एक जगह मिलकर नरक में जाते हैं। जहां पाखंड एवं दिखावा की बात होती है, वहीं सब दौड़े जाते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि विवेकवान संतों के पास ऐसे लोगों में कोई नहीं आता है।

अरिल-35

जक्त भक्त कछु नाहिं बीच में रहि गये।
ज्यों अधमारा साँप केहू ओर ना भये॥
बेंचि बेंचि हरि नाम दाम लै लै धरै।
अरे हाँ पलटू सबद न बूझै तनिक फकीरी क्या करै॥ 35॥

शब्दार्थ—दाम= रुपये, धन।

भावार्थ—ऐसे लोग न तो जगत में रहकर गृहस्थी का शुद्ध आचरण किये और न विरक्त होकर शुद्ध भक्ति-वैराग्य किये, अपितु बीच में ही रह गये। जैसे अधमरा सांप किसी तरफ के न भये। ऐसे धार्मिक सिद्ध नामधारी भगवान का नाम बेच-बेचकर धन इकट्ठा करते हैं। ऐसे लोग निर्णय शब्दों को थोड़ा भी नहीं समझना चाहते, तो उनका साधु वेष क्या अच्छा फल देगा ?

24. चेतावनी

अरिल-36

क्या लै आया यार कहा लै जायगा।
संगी कोऊ नाहिं अंत पछितायगा॥

सपना यह संसार रैन का देखना।
अरे हाँ पलटू बाजीगर का खेल बना सब पेखना॥ 36॥

शब्दार्थ—पेखना= पेखन, प्रेक्षण, तमाशा, पाखंड।

भावार्थ—मित्र! जन्मते समय क्या लेकर आये हो और शरीर छोड़ते समय क्या लेकर जाओगे? याद रखो, तुम्हारा कोई साथ नहीं देगा, अतएव तुम्हें अंत में पश्चाताप करना पड़ेगा। रात में सोते समय जैसे सपने देखते हैं, वैसे इस संसार का दृश्य है। पलटू साहेब कहते हैं कि बाजीगर का खेल जैसे दिखावा मात्र होता है, वैसे तुम्हारा सारा भौतिक ऐश्वर्य तमाशा मात्र है।

अरिल-37

जीवन कहिये झूठ साँच है मरन को।
मूरख अजहूँ चेति गहो गुरु सरन को॥
मास के ऊपर चाम चाम पर रंग है।
अरे हाँ पलटू जैहैं जीव अकेले कोउ ना संग है॥ 37॥

शब्दार्थ—मरन= मरण, मृत्यु।

भावार्थ—जीवन लुप्त हो जायेगा, इसलिए इसे झूठा कहना चाहिए; और मरना परम सच्चाई है, जिसके बाद यहां का कुछ अपना नहीं होगा। हे भोले! आज भी सावधान होकर सद्गुरु की शरण ग्रहण कर। तेरा अपना माना गया शरीर मांस का लौंदा है। मांस के ऊपर चाम है और चाम पर रंग चढ़ा है। पलटू साहेब कहते हैं कि जीव संसार से अकेला ही जायेगा। उसका कोई साथ देनेवाला नहीं है।

अरिल-38

भजि लीजै हरि नाम सोई तो नफा है।
आवैगा जब काल तेही दिन रफा है॥
बाजीगर को ढोल तमासे सब गया।
अरे हाँ पलटू बिगरि गया जब नाच नचनियाँ रहि गया॥ 38॥

शब्दार्थ—रफा= रफ़ा, दूर किया हुआ; दूर जा पड़ेगा।

भावार्थ—हरि नाम का भजन कर लो, आत्मचिंतन कर अंतर्मुख हो जाओ। यही जीवन का लाभ है। जिस दिन मृत्यु आयेगी, तुम अपना माने हुए सब कुछ से दूर जा पड़ोगे। बाजीगर ने ढोल बजाया और सब लोग इकट्ठे

होकर उसका तमाशा देखने आ गये। पलटू साहेब कहते हैं कि बाजीगर का सारा खेल समाप्त हो गया, तब खेलाड़ी मात्र रह गया। इसी प्रकार जीव का सारा खेल मौत आने पर समाप्त हो जायेगा और जीव अकेला चल देगा।

अरिल-39

सुरनर मुनि इक समय सबै मरि जाहिंगे।
राजा रंक फकीर काल धै खाहिंगे॥
तीनि लोक सब डेरै भीम की हाँक में।
अरे हाँ पलटू जोधा भीम समान मिलै हैं ख़ाक में॥ 39॥

शब्दार्थ—डेरै= डरते थे। जोधा= योद्धा। खाक= ख़ाक, मिट्टी।

भावार्थ—देवता, मनुष्य, मुनि आदि सब एक दिन मरते हैं। राजा हो या दरिद्र, सबको काल पकड़ खाता है। भीम की हांक देने पर तीन लोक के लोग डरते थे। पलटू साहेब कहते हैं कि भीम के समान योद्धा भी धूल में मिल जाते हैं।

अरिल-40

भूलि रहा संसार काँच की झलक में।
बनत लगा दस मास उजाड़ा पलक में॥
रोवन वाला रोया आपनी दाह से।
अरे हाँ पलटू सब कोई छेंके ठाढ़ गया किस राह से॥ 40॥

शब्दार्थ—दाह= संताप, मोहजनित पीड़ा। छेकें ठाढ़= घेरकर खड़े।

भावार्थ—संसार के लोग कांच की चमक-दमक को हीरा मानकर भूले हैं। शरीर के बनने में दस महीने लगे, परन्तु मौत ने उसे पलक मारते उजाड़ फेंका। उसके लिए रोनेवाले अपनी मोहजनित पीड़ा से रोते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि सभी स्वजन तो उसे घेरकर खड़े थे, किन्तु वह किस रास्ते से निकल गया, कोई पता नहीं पाया।

अरिल-41

माया ठगिनी बड़ी ठगे यह जाति है।
बचे न इह से कोय लगी दिन राति है॥
कौड़ी नाहीं संग करोरिन जोरि कै।
अरे हाँ पलटू गे राजा रंक फकीर लँगोटी छोरि कै॥ 41॥

शब्दार्थ—करोरिन= करोड़ों।

भावार्थ—माया बड़ी ठगिनी है। यह सबको ठगती जाती है। इससे कोई बचता नहीं है। यह रात-दिन सबके पीछे ठगने के लिए लगी रहती है। लोग जानते हैं कि अंत में यहां से जाते समय एक कौड़ी भी साथ नहीं जायगी, परन्तु वे करोड़ों की संपत्ति जोड़ते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि राजा, रंक और फकीर लंगोटी यहीं छोड़कर चले जाते हैं।

विशेष—माया जड़ है। वह क्या ठगेगी ? वस्तुतः हम उसमें मोहित होते हैं, इसलिए स्वयं ठगाते हैं।

अरिल-42

कच्चा महल उठाय कच्चा सब भवन है।
दस दरवाजा बीच झँकता कवन है॥
कच्ची रैयत बसै कच्ची सब जून है।
अरे हाँ पलटू निकरि गया सरदार सहर अब सून है॥ 42॥

शब्दार्थ—कच्चा महल= शरीर। रैयत= प्रजा, इन्द्रियां। जून= समय, दिन का आधा भाग।

भावार्थ—शरीर रूपी कच्चा महल उठाया गया है। सभी शरीर कच्चे भवन हैं। ध्यान दो, इस दस दरवाजे के भवन शरीर में रहकर देखने-जानने वाला कौन है ? यह चेतन आत्मा है जो अविनाशी है। शरीर-भवन की प्रजा इन्द्रियां हैं, वे भी कच्ची हैं। यहां तक कि सभी समय अनात्म पदार्थ कच्चे हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि जब शरीर का सरदार चेतन आत्मा निकल जाता है, तब शरीर-शहर सूना हो जाता है।

अरिल-43

हाथ गोड़ सब बने नाहिं अब डोलता।
नाक कान मुख ओही नाहिं अब बोलता॥
काल लिहिसि अगुवाय चलै ना जोर है।
अरे हाँ पलटू निकरि गया असवार सहर में सोर है॥ 43॥

शब्दार्थ—अगुवाय= आगे आकर। असवार= सवार, जीव। सहर=शहर।

भावार्थ—जीव के निकल जाने पर हाथ-पैर तो बने हैं, परन्तु वे स्वयं हिलते-डुलते नहीं हैं। नाक, कान तथा मुख वे ही हैं, परन्तु न वे सूंघते हैं, न

सुनते हैं और न बोलते हैं। काल आगे आकर जीव को ले गया। किसी का बल नहीं लगा कि उसे रोक ले। पलटू साहेब कहते हैं कि जीव-सवार निकल गया। नगर में रोना चल रहा है।

अरिल-44

आलम का बाच्छाह दुहाई मुलुक में।
हाथ जोरि सब खड़े हकूमत खलक में॥
तेल फुलेल लगाय जरकसी पाग है।
अरे हाँ पलटू आखिर होना खाक लील का दाग है॥ 44॥

शब्दार्थ—आलम=संसार, जनसमूह। बाच्छाह=बादशाह। दुहाई=पुकार, प्रताप, ऐश्वर्य। खलक=संसार, मनुष्य जाति। जरकसी=ज़रकशी, कलाबत्तू का काम। लील का दाग=नील का दाग, कलंक।

भावार्थ—जनसमूह का बादशाह जिनका देश में ऐश्वर्य और प्रताप है। मनुष्यों पर जिनका शासन है और लोग जिनके सामने हाथ जोड़कर खड़े रहते हैं। वे शरीर में सुगंधित तेल लगाते हैं और बेलबूटे से शोभायमान पगड़ी बांधते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि अंत में उन्हें भी मिट्टी में मिलना है। उन्होंने असंयम करके अपने मन में कलंक का दाग लगा लिया।

अरिल-45

आया मूँठी बाँधि पसारे जायगा।
छूछा आवत जात मार तू खायगा॥
किते बिकरमाजीत साका बँधि मरि गये।
अरे हाँ पलटू राम नाम है सार सँदेसा कहि गये॥ 45॥

शब्दार्थ—साका=संवत।

भावार्थ—मनुष्य मूठी बांधकर जनमा है और अंत में हाथ पसारकर जायेगा। आते भी खाली हाथ, और जाते भी खाली हाथ; किन्तु यहां की माया के मोह में पड़कर दुष्कर्म किया तो इसके परिणाम में दुख भोगेगा। विक्रमादित्य जैसे कितने सम्राट अपना संवत चलाकर मर गये। पलटू साहेब कहते हैं कि मानो उन्होंने भी यह संदेश दिया कि रामनाम ही जीवन में सार है—जिसका नाम राम है उस आत्मा में पूर्ण विश्राम पा जाना, आत्मराम हो जाना जीवन का फल है।

अरिल-46

जो जनमा सो मुआ नाहिं थिर कोइ है।
राजा रंग फकीर गुजर दिन दोइ है॥
चलती चक्की बीच परा जो जाइ कै।
अरे हाँ पलटू साबित बचा न लोइ गया अलगाइ कै॥ 46॥

शब्दार्थ—लोई= लोग।

भावार्थ—जो प्राणी जन्म लेता है, वह मरता है। संसार में कोई स्थिर होकर नहीं रहता। राजा हो, दरिद्र हो या फकीर हो, दो दिन गुजरकर सब चले जाते हैं। जनम-मरण की चक्की में जो पड़ा, उसमें से कोई देह-सहित नहीं रहा। सब देह छोड़कर चले गये।

अरिल-47

माया यार फकीर कँहै जंजाल है।
सांप खिलौना करै एक दिन काल है॥
मांछी मधु लै धरै छोरि कोइ खाइगा।
अरे हाँ पलटू सिंह करै जो जतन स्यार होइ जायगा॥ 47॥

शब्दार्थ—जतन= संग्रह।

भावार्थ—हे मित्र! माया फकीर के लिए भवबंधन है। जो सांप को खिलौना बनाकर उसका खेल करेगा। उसको वह एक दिन काट खायेगा। मधुमक्खियां मधु संचय करती हैं, परन्तु उसे अन्य मनुष्य निकालकर खा लेगा। यदि सिंह संग्रह करता है, तो सियार हो जायेगा।

अरिल-48

टोप टोप रस आनि मक्खी मधु लाइया।
इक लै गया निकारि सबै दुख पाइया॥
मोको भा बैराग ओहि को निरखि कै।
अरे हाँ पलटू माया बुरी बलाय तजा मैं परखि कै॥ 48॥

शब्दार्थ—टोप-टोप= बूंद-बूंद। बलाय= बला, विपत्ति, दुख।

भावार्थ—मधुमक्खियां वनस्पतियों से बूंद-बूंद रस लाकर मधु बनाती हैं। कोई मनुष्य आया और उसे निकाल ले गया। इससे सारी मक्खियों को दुख हुआ। इस बात को देखकर मुझे वैराग्य हो गया। पलटू साहेब कहते हैं

कि माया को भयंकर दुखदायी जानकर और उसे परखकर मैंने उसका त्याग कर दिया।

अरिल-49

फूलन सेज बिछाय महल के रंग में।
अतर फुलेल लगाय सुन्दरी संग में॥
सूते छाती लाय परम आनन्द है।
अरे हाँ पलटू खबरि पूत को नाहिं काल कौ फन्द है॥ 49॥

शब्दार्थ—फुलेल= सुगंधित तेल।

भावार्थ—पलटू साहेब कहते हैं कि रंगमहल में फूलों की शय्या बिछा-कर शरीर और वस्त्रों में इतर तथा सुगंधित तेल लगाकर और सुन्दरी युवती को छाती से लगाकर सोये, बड़ा आनन्द माने हैं, पलटू साहेब कहते हैं कि परन्तु इन बच्चों को पता नहीं है कि यह आत्मा के लिए काल की फांसी है।

अरिल-50

कलिया नान-पुलाव पेट भरि खाइ कै।
सीस मँहै सराब चिराग जराइ कै॥
चीरे बन्द लगाय गले में सोवते।
अरे हाँ पलटू लगे फिरिस्ते आय पूत तब रोवते॥ 50॥

शब्दार्थ—कलिया= भूनकर-रसेदार पकाया हुआ मांस। नान-पुलाव= मांस-भात मिला व्यंजन, मांसोदन। चीरेबंद= विशेष बुनावट का वस्त्र। फिरिस्ते= फ़रिश्ता, ईश्वर-दूत, तात्पर्य में मृत्यु।

भावार्थ—कलिया और नान-पुलाव पेट भरकर खाकर, सिरहने शराब का दीपक जलाकर और गले में विशेष प्रकार की बुनावट वाला कपड़ा डाल कर सोते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि जब मृत्यु सामने आ गयी, तब रोने लगे।

अरिल-51

झूठ साच कहि दाम जोरि कै गाड़ने।
औषधि कूटहि रोज जिये के कारने॥
जीयै बरष हजार आखिर को मरैगा।
अरे हाँ पलटू तन भी नाहीं संग कहा लै करैगा॥ 51॥

शब्दार्थ—दाम= धन।

भावार्थ—सांच-झूठ बोलकर धन जोड़े और जमीन में गाड़े, नित्य औषध कूटकर खाते हैं जिससे लम्बे समय तक जीवित रहें। यदि कोई हजार वर्ष भी जी जाय, तो भी अंत में तो मरना ही है। पलटू साहेब कहते हैं कि शरीर भी साथ चलने वाला नहीं है, तब अन्य वस्तुएं रखकर क्या करेगा?

25. वैराग्य, स्वरूपस्थिति और वीरता

अरिल-52

खाला कै घर नाहिं भक्ति है राम की।
दाल भात है नाहिं खाये के काम की॥
साहिब का घर दूर सहज ना जानिये।
अरे हाँ पलटू गिरे तो चकनाचूर बचन को मानिये॥ 52॥

शब्दार्थ—खाला= ख़ाला, माता की बहिन, मौसी।

भावार्थ—राम की भक्ति मौसी का घर नहीं है कि वहां जाकर दस दिन गुलछर्रे उड़ा आओ। वह खाने का दाल-भात भी नहीं है। आत्मस्थिति रूपी साहेब का घर दूर है। वह सब कुछ त्याग से मिलता है। उसे सहज मत समझिये। यदि उस मार्ग पर चलकर गिरे, तो चकनाचूर हो जाओगे। पलटू साहेब कहते हैं कि यह मेरी बात मान लो।

अरिल-53

समुझि बूझि पगु धरै मरे की चाल है।
सिर के मोल बिकाय फकीरी ख्याल है॥
दूध छठी का जाय तनिक ना मानते।
अरे हाँ पलटू साहिब का घर दूर खिलौना जानते॥ 53॥

शब्दार्थ—चाल= रहनी। दूध छठी का= छठी का दूध एक मुहावरा है; इसका अर्थ होता है कड़ी मेहनत, इतनी मेहनत पड़ना कि बचपन का सुख याद आ जाय।

भावार्थ—वैराग्य पथ पर समझ-बूझकर पैर रखना चाहिए। यह मृत्यु की रहनी है। फकीरी ख्याल में जीना सिर अर्पित करके साधना करना है। वैराग्य पथ पर चलना कठोर तप है। उसे थोड़ा नहीं समझना चाहिए। पलटू

साहेब कहते हैं कि स्वरूपस्थिति विषयासक्ति से सर्वथा परे है। लोग उसे खिलौना समझते हैं।

अरिल-54

पहले कबर खुदाय आसिक तब हूजिये।
सिर पर कफ्फन बाँधि पाँव तब दीजिये॥
आसिक को दिन राति नाहिं है सोवना।
अरे हाँ पलटू बेदर्दी मासूक दर्द कब खोवना॥ 54॥

शब्दार्थ—कबर= कब्र। आसिक= आशिक़, प्रेमी, अनुरक्त। बेदर्दी= दया रहित। मासूक= माशूक़, प्रियतम, स्वरूपस्थिति, आत्मा।

भावार्थ—पहले अपने माने गये शरीर की कब्र खुदा लो, तब स्वरूप-स्थिति के प्रेमी बनो—पहले शरीर का मोह सर्वथा त्यागकर वैराग्य के पथ पर पैर रखो। अपने सिर पर पहले कफन बांध लो तब मोक्ष पथ पर पांव रखो। स्वरूपस्थिति के प्रेमी को रात-दिन सावधान रहना है, उसे कहीं मोह की झपकी न लगे। आत्मा रूपी प्रियतम बेदर्द है। वह मोह करने की थोड़ी भी सुविधा नहीं देता है। तुम मोह कब खोओगे ?

अरिल-55

जो तुझको है चाह सजन को देखना।
करम भरम दे छोड़ि जगत का पेखना॥
बाँध सुरति की डोरि सब्द में पिलैगा।
अरे हाँ पलटू ज्ञान ध्यान के पार ठिकाना मिलैगा॥ 55॥

शब्दार्थ—सजन= प्रियतम, आत्मा। देखना= साक्षात्कार। पेखना= दिखावा।

भावार्थ—यदि तुम्हें आत्मसाक्षात्कार की चाह है, तो कर्मकांड, बाहर से परमात्मा पाने का भ्रम और दिखावा छोड़ दो। जब तुम अपनी मनोवृत्ति को स्वरूपज्ञान परिचायक निर्णय शब्दों में लगाओगे पलटू साहेब कहते हैं कि तब वाचिक आत्मज्ञान तथा उसके अनुमान से ऊपर उठकर स्व-स्वरूप में ही स्थित हो जाओगे।

अरिल-56

छोड़ौं न दरबार इसिम पर मरौंगा।
सिफति करौं दिन राति टारै ना टरौंगा॥

जिव मेरो बरु जाय हारिहौं जनम को।
अरे हाँ पलटू तेरो अब कहलाय कहावौं कवन को॥ 56॥

शब्दार्थ—इसिम=इस्म, नाम, संज्ञा, तात्पर्य में गुरु का नाम। सिफति= सिफ़त, विशेषता, गुण, लक्षण, स्वभाव, गुणगान।

भावार्थ—मैं सद्‌गुरु का दरबार नहीं छोड़ूंगा। उनके नाम पर अपनी जान देने के लिए तैयार रहूंगा। रात-दिन गुरु का गुणानुवाद करूंगा। उनके द्वार से हटाने पर भी नहीं हटूंगा। मेरे प्राण भले चले जायं, परन्तु सद्‌गुरु के चरणों में अपना जीवन समर्पित कर दूंगा। पलटू साहेब कहते हैं कि हे सद्‌गुरु! मैं आपका दास कहलाता हूं, फिर अब दूसरे किसका दास कहलाऊंगा?

अरिल-57

आठ पहर की मार बिना तरवार की।
चूके सो नहिं ठौर लड़ाई धार की॥
उसही से यह बनै सिपाही लाग का।
अरे हाँ पलटू पड़ै दाग पर दाग पंथ बैराग का॥ 57॥

शब्दार्थ—लाग का= लगन का, लगाव का, परम शांति के विरही का।

भावार्थ—मन को निर्मल तथा स्ववश करने की साधना का युद्ध बिना तलवार के आठ पहर की मार है—चौबीस घंटे का घमासान है। यह तेज धार की लड़ाई है। जो इस युद्ध में असावधान हो गया, उसको शांति का स्थान नहीं मिलेगा। जो लगनशील साधक-योद्धा होगा, उसी से मन को जीतने का काम बनेगा। जैसे युद्ध-क्षेत्र में लड़ने वाले योद्धा के हाथों में दाग पर दाग पड़ते हैं, वैसे वैराग्य पथ में चलने वाले साधकों के मन में सावधानी पर सावधानी बढ़ती जाती है।

अरिल-58

कड़ुवा प्याला नाम पिया सो ना जरै।
देखा देखी पिवै ज्वान सो भी मरै॥
धर पर सीस न होय उतारै भुइँ धरै।
अरे हाँ पलटू छोड़ै तन की आस सरग पर घर करै॥ 58॥

शब्दार्थ—धर= धड़। सरग= स्वर्ग, आत्मशांति।

भावार्थ—सतनाम के अर्थस्वरूप आत्मज्ञान का कड़वा प्याला जो पीता है, वह मोह-शोक में नहीं जलता है। जो ज्वान-योद्धा दूसरे की नकल करके वैराग्य के पथ में आता है, वह पुनः पतित हो जाता है। धड़ पर सिर न रखे, उसे उतारकर जमीन पर रख दे—देहाभिमान पूर्णतया मिटा दे। पलटू साहेब कहते हैं कि शरीर की आशा छोड़कर स्वरूपस्थिति रूपी स्वर्ग पर अपना स्थान बनावे।

अरिल-59

भक्ति करै कोइ सूर जक्त से तोरि कै।
ज्ञान लिये समसेर लड़ै झकझोरि कै॥
रहै खेत पर ठाढ़ भक्ति की डेर मँहै।
अरे हाँ पलटू झूठा टिकै न कोइ राम के घर मँहै॥ 59॥

शब्दार्थ—समसेर= शमशीर, तलवार। डेर= डर, भय।

भावार्थ—कोई शूर-वीर साधक संसार का मोह छोड़कर भक्ति करता है। वह आत्मज्ञान की तलवार लेकर मन से झकझोरकर लड़ता है। भक्ति का भय रखकर कि वह छूट न जाय, युद्ध क्षेत्र में अड़ा रहता है। पलटू साहेब कहते हैं कि आत्मस्थिति में वह नहीं ठहर सकता, जो असत अनात्म पदार्थों का मोही है।

अरिल-60

राम के घर की बात कसौटी खरी है।
झूठा टिकै न कोय आजु की घरी है॥
जियतै जो मरि जाय सीस लै हाथमें।
अरे हाँ पलटू ऐसा मर्द जो होय परै यहि बात में॥ 60॥

शब्दार्थ—राम के घर की बात= स्वरूपस्थिति की दशा।

भावार्थ—स्वरूपस्थिति में अविचल भाव में वह ठहर सकता है जो वैराग्य की खरी कसौटी में टिक सके। वर्तमान में अनुभव के आधार पर कहना पड़ता है कि इसमें असत-अनात्म पदार्थों का मोह रखने वाला कोई नहीं ठहर सकता। जो साधक जीते जी मर जाय—सारी अहंता-ममता छोड़ दे और अपना सिर अपने हाथ में लेकर एवं जीवन की आशा छोड़कर मन के विकारों से युद्ध करे, वही सफल होगा। पलटू साहेब कहते हैं कि जो ऐसा वैराग्य-वीर हो, वह इस स्वरूपस्थिति की बात में पड़े।

अरिल-61

सबद लिहे तरवारि म्यान है ज्ञान का।
दुरमति मुरचा खोय मसकला ध्यान का॥
सतसंगति की ओटि मूठि है नामकी।
अरे हाँ पलटू रहै हाथ में लगी समय पर काम की॥ 61॥

शब्दार्थ—मसकला= मांजने का औजार। ओटि= ओट, आड़ा; आधार, शरण।

भावार्थ—निर्णयपूर्ण आत्म परिचायक शब्द तलवार है। आत्मज्ञान की म्यान है। ध्यान का मसकला है जिससे दुर्बुद्धि का मुरचा रगड़कर साफ हो जाता है। सत्संग की शरण है और सतनाम की मुठिया है। पलटू साहेब कहते हैं कि यह हाथ में लगी रहे, तो समय पर काम देगी–मन के बवंडर को साधक काट सकेगा।

अरिल-62

साहिब के घर बीच गया जो चाहिये।
सिर को धरै उतारि कदम को नाइये॥
जियते जी मरि जाय सोई बहुरायगा।
अरे हाँ पलटू जेकरे जिव की चाह सोई भगि जायगा॥ 62॥

शब्दार्थ—साहिब के घर= आत्मस्थिति। बहुरायेगा= लौटेगा, वापस आयेगा।

भावार्थ—जो स्वरूपस्थिति के अविचल घर में अपना ठहराव चाहे, वह अपने सिर को उतारकर जमीन पर धर दे, तब पांव उस तरफ रखे। जो जीते जी मर जायेगा, सारी अहंता-ममता छोड़ देगा, वही अपने घर—स्वरूपस्थिति में लौटेगा। पलटू साहेब कहते हैं कि जिसको देह में रहकर दुनिया के सारहीन भोगों को भोगने की लालसा है, वह सत्संग-साधना के अखाड़े से भाग खड़ा होगा।

अरिल-63

बार न बाँकै मोर कोई क्या करैगा।
रूठै तीनिउँ लोक नाहिं मन डेरैगा॥
रच्छा करते आप दिये दोउ हस्त हैं।
अरे हाँ पलटू सिर पर गोबिदनंद खड़े समरत्थ है॥ 63॥

शब्दार्थ—डेरैगा= डरेगा। गोविन्दनन्द= श्री गोविंद साहेब; ये पलटू साहेब के गुरु थे।

भावार्थ—मेरा बाल बांका नहीं होगा। मेरा कोई क्या करेगा ? तीनों लोक नाखुश हो जाय, तो भी मेरा मन भय नहीं करेगा। पलटू साहेब कहते हैं कि मेरे समर्थ गुरुदेव श्री गोविन्द साहेब मेरे सिर पर खड़े हैं और वे अपने दोनों हाथों से मेरी रक्षा करते हैं।

अरिल-64

धरौ फूँकि के पाँव कुसंग ना कीजिये।
भजन मँहै भँग होय सोच ना लीजिये॥
कोउ ना पकरै फेट करै जो त्याग है।
अरे हाँ पलटू माया संग्रह करै भक्ति में दाग है॥ 64॥

शब्दार्थ—फेट= फेंट, फेंटा, कमर में लपेटी धोती।

भावार्थ—हे सुख चाहनेवाले ! जीवन में फूंक-फूंक कर पैर रखो, गलत काम न करो और कुसंगति न करो। कुसंग करने से भजन में भंग होगा। कुसंग से बचकर चिंतारहित रहो। यदि तुम त्याग-मार्ग से चलोगे, तो तुम्हारा कोई फेंटा नहीं पकड़ सकता है, तुम्हें कोई गिरा नहीं सकता है। पलटू साहेब कहते हैं कि यदि माया-संग्रह किया जाता है, तो यह भक्ति एवं साधना में दाग लगाना है।

विशेष—संग्रह सेवा के लिए हो। केवल संग्रह और सेवा न करना पाप बटोरना है।

अरिल-65

मन में बिनती करै डगमगी छोड़ि दै।
जरै मरै अब बनै सिंधोरा हाथ लै॥
मरै कहै जब चली सगुन तब क्या करै।
अरे हाँ पलटू सती बटोरै बस्तु जरे से जब डेरै॥ 65॥

शब्दार्थ—सिंधोरा= सेंदुरदान। सगुन= शकुन, शुभ घड़ी।

भावार्थ—मन विनम्र रखे और उसकी डगमगाहट छोड़कर साधना में दृढ़ रहे। सती जब हाथ में सेंदुरदान लेकर सती होने के लिए निकल पड़ी है,

तो उसके जलकर मर जाने से ही उसका मंगल है। जब वह जल मरने के लिए चल पड़ी, तब शुभ घड़ी देखने की क्या आवश्यकता है ? पलटू साहेब कहते हैं कि सती उस दशा में वस्तुओं का संग्रह करती है, जब वह जलने से डर जाती है।

विशेष—सती के नाम पर स्त्रियों का पति की लाश के साथ जलने की प्रथा अज्ञानमूलक और पापपूर्ण है। यहां तो उसका उदाहरण मात्र है। बात विरक्त के लिए है। विरक्त मरने के लिए साधु वेष लेता है। विरक्त वह हो जो विनम्र, दृढ़ और त्याग से रह सके। विरक्त का मन मर जाना चाहिए, माया-मोह से रहित हो जाना चाहिए।

अरिल-66

हरि चर्चा से बैर संग वह त्यागिये।
अपनी बुद्धि नसाय सबेरे भागिये॥
सरबस वह जो देइ तो नाहीं काम का।
अरे हाँ पलटू मित्र नहीं वह दुष्ट जो द्रोही राम का॥ 66॥

शब्दार्थ—सबेरे= शीघ्र। सरबस= सब कुछ।

भावार्थ—जो आध्यात्मिक चर्चा एवं सत्संग से वैर रखता हो, उसका साथ छोड़ दीजिए। उसकी संगत से तो अपनी बुद्धि नष्ट होगी। इसलिए उससे शीघ्र हट जाइये। यदि वह सब सांसारिक सुविधा देता है, तो वह निरर्थक है। पलटू साहेब कहते हैं कि वह मित्र नहीं, शत्रु है जो आध्यात्मिक ज्ञान एवं सत्संग का विरोधी है।

अरिल-67

आसन दृढ़ ह्वै रहै जगत से हारना।
निद्रा बसि में करै भूख को मारना॥
काम क्रोध को मारि आपु को खोवना।
अरे हाँ पलटू पाँव पसारे यार मौज से सोवना॥ 67॥

भावार्थ—अपनी शांति स्थिति में दृढ़ होकर रहे, निकट-दूर के सभी मनुष्यों से हार मानकर रहे। उनसे लड़े न। भूख और नींद पर संयम रखे। काम-क्रोधादि को मारकर अपने देहाभिमान को खो दे। पलटू साहेब कहते हैं कि हे मित्र ! इस रहनी में रहकर निश्‍ंचित आनन्द में सोवो।

अरिल-68

संत सोई है जाय संजम में जो रहै।
गया आपु को भूलि खबर अब को कहै॥
आगि के बीच पतंग बहुरि ना होन की।
अरे हाँ पलटू परी सिंधु में जाय डेरी जब लोन की॥ 68॥

शब्दार्थ—संजम = संयम। डेरी = डली।

भावार्थ—संत वही हो जाता है जो अपने मन-इन्द्रियों पर पूर्ण संयम कर लेता है। वह देहाभिमान को भूलकर आत्मलीन हो जाता है, फिर उसकी खबर बताने कौन आवे ? पतंग आग के बीच में पड़ गया तो वह जीवन में लौट नहीं सकता और नमक-डली जल में पड़ी तो वह लौट नहीं सकती। पलटू साहेब कहते हैं कि वैसे जो सारे अनात्म का अहंकार छोड़कर आत्मलीन हो गया, वह बढ़-बढ़ कर बातें नहीं करता।

अरिल-69

माया औ बैराग दोऊ में बैर है।
लिये कुल्हाड़ी हाथ मारता पैर है॥
किया चहै बैराग मया में जायगा।
अरे हाँ पलटू जो कोइ माहुर खाय सोई मरि जायगा॥ 69॥

शब्दार्थ—माहुर = विष।

भावार्थ—माया और वैराग्य, इन दोनों में वैर है। वैरागी माया संग्रह में लगा है तो वह अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाड़ी मारता है। करना चाहता है वैराग्य और माया में डूबा है। पलटू साहेब कहते हैं कि कोई भी मनुष्य जो विष खायेगा, वही मर जायेगा।

विशेष—विरक्त व्यक्तिगत जीवन के लिए अधिक संग्रह न करे। समूह की सेवा के लिए संग्रह हो तो वह खर्च होता रहे।

अरिल-70

लोकलाज जनि मानु बेद कुल कानि को।
भली बुरी सिर धरौ भजौ भगवान को॥
हँसि है सब संसार तो माख नमानिये।
अरे हाँ पलटू भक्त जक्त से बैर चारों जुग जानिये॥ 70॥

शब्दार्थ—कानि= लोक लज्जा; मर्यादा, लिहाज। माख= अपमान जनित क्रोध, अमर्ष।

भावार्थ—लोक, वेद, कुल, जाति आदि की मर्यादा, लज्जा आदि को मत मानो। यदि कोई तुम्हें भला-बुरा कहे, तो उसको नम्रतापूर्वक सह लो और भगवान का भजन करो—आत्मचिंतन में रहो। सारा संसार तुम्हारी हंसी उड़ाये तो तुम इसको लेकर अमर्ष न करो। पलटू साहेब कहते हैं कि भक्त और जगत का वैर सब समय रहा है। संसारी बुद्धि के लोग सब समय साधकों की निन्दा करते रहे हैं।

अरिल-71

देव पित्र दै छोड़ि जगत क्या करैगा।
चला जा सूधी चाल रोइ सब मरैगा॥
जाति बरन कुल खोइ करौ तुम भक्तिको।
अरे हाँ पलटू कान लीजिये मूँदि हँसै दे जक्त को॥ 71॥

शब्दार्थ—पित्र= मृत पित्र।

भावार्थ—काल्पनिक जड़ देवता और मृत पित्र की पूजा छोड़ दे। संसार के लोग तेरा क्या बिगाड़ लेंगे ? तू अपने सदाचार और आत्मज्ञान के सीधे पथ पर चलता चल। संसार के लोग रो-रो कर मरते हैं, तो उन्हें मरने दे। जाति, वर्ण और कुल का पाखंड तथा लज्जा त्यागकर तू अपने निर्मल भक्ति के आचरण में चल। पलटू साहेब कहते हैं कि यदि लोग तेरी हंसी उड़ाते हैं तो तू अपने कान मूंद ले। संसारियों को हंसने दे।

अरिल-72

केतिक जुग गये बीति माला के फेरते।
छाला परि गये जीभ राम के टेरते॥
माला दीजै डारि मनै को फेरना।
अरे हाँ पलटू मुँह के कहे न मिलै दिलै बिच हेरना॥ 72॥

शब्दार्थ—हेरना= खोज करना, विवेक से स्थिर करना।

भावार्थ—माला फेरते तुम्हारे कितने ही युग बीत गये। राम-राम कहते-कहते तेरी जीभ में छाले पड़ गये। अतएव तुम माला छोड़ दो, अपितु अपने मन को जड़ दृश्य से फेरो। पलटू साहेब कहते हैं कि मुंह से कहने से राम नहीं मिलता है। राम तो हृदय में बैठा है, अतएव अपने हृदय में खोजो।

अरिल-73

तीरथ ब्रत में फिरे बहुत चित लाइ कै।
जल पखान को पूजि मुए पछिताइ कै॥
बस्तु न बूझी जाय अपाने हाथ में।
अरे हाँ पलटू जो कुछ मिलै सो मिलै संत के साथ में॥ 73॥

शब्दार्थ—वस्तु= सत्य तत्त्व, आत्म स्वरूप।

भावार्थ—व्रत-उपवास किये, मन में उत्साहित होकर तीर्थों में घूमे और वहां पानी-पत्थर की पूजा करते-करते थक गये और मन का पश्चाताप बना रहा। वस्तु अपने हाथ में होते हुए भी बिना उसके विशेषज्ञ द्वारा बताये समझ में नहीं आती है। पलटू साहेब कहते हैं कि आत्मज्ञान और साधना की अक्ल विवेकवान संतों की संगत में मिलती है।

अरिल-74

केतिक फिरै उदास बनै बन धावते।
केतिक साधैं जोग खाक सिर नावते॥
केतिक कथनी कथैं केतिक आचार में।
अरे हाँ पलटू कोउ न पावै पार बड़े दरबार में॥ 74॥

शब्दार्थ—खाक= मिट्टी, राख।

भावार्थ—परम सत्य की खोज में कितने लोग उदास होकर वन-वन में दौड़ते रहते हैं। कितने लोग सिर से पैर तक राख लगाकर योग साधते हैं। कितने लोग वक्तव्य देने में लगे रहते हैं और कितने लोग बाह्याचार में हरदम लगे रहते हैं; किन्तु पलटू साहेब कहते हैं कि इन बाहरी बातों से उस स्वरूप स्थिति रूपी बड़े दरबार की समझ किसी को नहीं मिलती है।

अरिल-75

सुपना यह संसार लागता आइ कै।
चले जुवा में हारि मनुष तन पाइ कै॥
देखत सोना लगै सकल जग काँच है।
अरे हाँ पलटू जीवन कहिये झूठ तो मरना साँच है॥ 75॥

शब्दार्थ—सुपना= स्वप्न।

भावार्थ—यह संसार स्वप्नवत है, किन्तु अज्ञानवश यथार्थ लगता है। इसी धोखे में, कल्याणदायी मनुष्य तन पाकर भी भोग के जुआबाजी में जीवन को हार चले। पलटू साहेब कहते हैं कि देखने में तो सोना लगता है, परन्तु सारा संसार कांच है। जीवन झूठा है। मरना सच्चा है।

अरिल-76

तीसो रोजा किया फिरे सब भटकि कै।
आठो पहर निमाज मुए सिर पटकि कै॥
मक्के में भी गये कबर में खाक है।
अरे हाँ पलटू एक नबी का नाम सदा वह पाक है॥ 76॥

शब्दार्थ—पहर= तीन घंटे का समय। नबी= हजरत मुहम्मद।

भावार्थ—रमजान के दिनों में तीसों दिन उपवास रहे और मक्का-मदीना भटक आये। चौबीसों घंटों की नमाज अदा करते रहे और मस्जिद में सिर पटक-पटक कर थक गये। मक्का भी गये। कब्रों को सिर झुकाये; किन्तु उसमें तो मिट्टी है। पलटू साहेब कहते हैं कि नबी का बताया एक अल्लाह का नाम ही पवित्र है।

विशेष—बाहरी कर्मकाण्ड में अध्यात्म की इति श्री मत समझो। अल्लाह को समझो। वह तुम्हारे दिल-दरगाह में मौजूद है।

अरिल-77

ना बाम्हन ना सूद्र न सैयद सेख है।
हम तुम कोऊ नाहिं बोलता एक है॥
दूजा कोऊ नाहिं यही तहकीक है।
अरे हाँ पलटू लाख बात की बात कहा हम ठीक है॥ 77॥

शब्दार्थ—तहकीक= तहक़ीक़, परीक्षित, सत्य।

भावार्थ—न कोई ब्राह्मण है, न शूद्र है, न सैयद है और न शेख है। मेरे और तुम्हारे में कोई अंतर नहीं है। सबके भीतर बैठे बोलने वाले चेतन आत्मा एक समान हैं। इसके अलावा कोई दूसरा नहीं है जिसे पाना है, यही परीक्षित सत्य है। पलटू साहेब कहते हैं कि यही लाख बातों में सच्ची बात है। मैंने ठीक कहा है।

अरिल-78

डाँड़ी पकरे ज्ञान छिमा कै सेर है।
सुरत सबद से तौल मनै का फेर है॥
भला बुरा इक भाव निबाहै ओर है।
अरे हाँ पलटू संतोष की करै दुकान महाजन जोर है॥ 78॥

शब्दार्थ—ओर= आदि, अंत।

भावार्थ—आत्मज्ञान की डांड़ी पकड़े, क्षमा का सेर रखे, मनोवृत्ति और निर्णय शब्दों से तौलकर मन के चक्कर को शांत करे। अनुकूल-प्रतिकूल जो कुछ आवे समता भाव से उन्हें निपटाता रहे और अंत तक शांति की रहनी में रहे। पलटू साहेब कहते हैं कि संतोष का व्यापार करे। वही बड़ा पूंजीपति है।

अरिल-79

करामात सब झूठ बिस्वास को थापना।
जैसे स्वान को हाड़ लोहू है आपना॥
कहे सेती का मिलै रांड़ कै गावना।
अरे हाँ पलटू जो जस करै सो मिलै आपनी भावना॥ 79॥

शब्दार्थ—करामात= चमत्कार। रांड़= राड़, निकम्मा, हीन, नीच, कायर, भगोड़ा, मूर्ख। गावना= प्रलाप।

भावार्थ—सारे चमत्कार असत्य होते हैं। छली-कपटी लोग जनता के मन में उसका अंधविश्वास आरोपित करते हैं। जैसे कुत्ता सूखी हड्डी चूसता है, किन्तु उसे अपने जबड़े से निकले हुए रक्त का स्वाद मिलता है और वह मानता है कि हड्डी से मिल रहा है; वैसे मनुष्य को अपने ही कर्मों के फल मिलते हैं, किन्तु उसे लगता है कि किसी भगवान, भवानी अथवा सिद्ध की कृपा से मिलते हैं। किसी के कहने से क्या मिलेगा ? चमत्कार तो मूर्खों का प्रलाप है। पलटू साहेब कहते हैं कि जो मनुष्य जैसी मनोभावना रखता और कर्म करता है उसको वैसा ही फल मिलता है।

अरिल-80

लाखों मौनी फिरैं लाखों बाघम्बरी।
उर्धमुखी औ नखी लाखों लोहलंगरी॥

लाखों जल में पड़े (लाखों) धूरि कोछानते।
अरे हाँ पलटू जामें राजी राम सो कोउ नहिं जानते॥ 80॥

शब्दार्थ—लोह लंगरी=लोह की जंजीर में अपने तन को बांधकर तप करने वाले।

भावार्थ—लाखों मौनी घूमते हैं, लाखों बाघ का चाम ओढ़कर घूमते हैं। लाखों ऊपर मुख करके तप करने वाले हैं। नख बढ़ाकर तथा लोह की जंजीर पहनकर तप करने वाले लाखों हैं। लाखों जल में पड़कर तप करने वाले और शरीर में धूल लगाकर तप करने वाले हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि जिससे अंतरात्मा को पूर्ण शांति मिले, उस तथ्य को ये कोई नहीं जानते।

अरिल-81

हरि कै दास कहाय जतन ना कीजिये।
बाकी दीजै छोड़ि पेट भरि लीजिये॥
जतन करैगा जोई सोई पछितायगा।
अरे हाँ पलटू जोगवै आग चकोर पंख जरि जायगा॥ 81॥

शब्दार्थ—जतन=संग्रह। जोगवै=स्थिर रखे।

भावार्थ—हरि भक्त कहलाकर संग्रह न करे। अपना जीवन-निर्वाह करे, और शेष धन को परिवार या समाज की सेवा के लिए छोड़ दे। जो अधिक संग्रह करेगा वह अंत में पश्चाताप करेगा। पलटू साहेब कहते हैं कि यदि चकोर आग को अपने पास स्थिर रखेगा, तो उसके पंख जल जायेंगे।

विशेष—यह मान्यता है कि चकोर चंद्रमा का प्रेमी है। वह आग को चंद्रमा का टुकड़ा मानकर उसे निगल जाता है और जलता नहीं। लेकिन अगर वह आग अपने पास रखेगा तो उसके पंख जल जायेंगे। इसी प्रकार साधक अपने निर्वाह से अधिक संग्रह करेगा, तो वह साधना नहीं कर पायेगा, अपितु पुनः माया में लिपट जायेगा।

अरिल-82

चक्की चलती देखि दिया मैं रोय है।
पीस गया संसार बचा न कोय है॥
अधबीचे में परा कोऊ ना निरबहा।
अरे हाँ पलटू बचिगा कोऊ संत जो खूँटे लगि रहा॥ 82॥

शब्दार्थ—चक्की = मोह-माया। खूंटे = स्वसत्ता, आत्मस्वरूप।

भावार्थ—माया-मोह की चलती हुई चक्की देखकर मैं रो दिया। संसार के सभी जीव इसमें पिस रहे हैं। कोई इससे बचता नहीं है। जो थोड़ा सावधान हुआ वह भी आधे बीच से पुनः लौटकर माया-मोह में पड़ गया। कोई इससे पूरा नहीं निकल पाता। पलटू साहेब कहते हैं कि कोई वह बिरला संत इस माया-मोह की चक्की से पूर्ण निकल गया जो आत्मलीन हो गया।

विशेष—आत्मा अपने को भूलकर माया-मोह की चक्की में पिस रहा है। जो पूर्ण सावधान होकर अपने में लौट आया, वह बच गया। माया-मोह की चक्की का मूल खूंटा तो आत्मा स्वयं है। वह अपनी भूल से उसको चला रहा है। जब अपने में सावधान होकर ठहर गया तब माया मोह समाप्त हो गया।

अरिल-83

डेरै लोक की लाज परलोक नसायगा।
माया के परसंग ज्ञान मिटि जायगा॥
तजै न भोग बिलास चाहता जोग है।
अरे हाँ पलटू बिना बिचार बिबेक भेष में रोग है॥ 83॥

शब्दार्थ—डेरै = डरे, भय करे। जोग = योग।

भावार्थ—जो मनुष्य संसार से डरेगा और लोक-लाज में पड़ा रहेगा, उसका कल्याण कार्य नष्ट हो जायगा। माया-मोह में लगे रहने से आत्मज्ञान मिट जायेगा। चाहते तो हैं योग-वैराग्य, परंतु विषयों का भोग-विलास नहीं छोड़ते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि विचार-विवेक न होने से साधुवेषधारी भी मानसिक रोग में पड़े रहते हैं।

अरिल-84

तीरथ संत समाज आत्मा गंग है।
तट है सील सनेह रु दया तरंग है॥
निरमल नीर गंभीर ज्ञान धारा बहै।
अरे हाँ पलटू गुरु दरियाव नहाय तो दुरमति ना रहै॥ 84॥

शब्दार्थ—दरियाव = दरिया, नदी, समुद्र।

भावार्थ—संत समाज तीर्थ है, आत्मा गंगा है, शील और स्नेह तट हैं, और दया तरंग है। आत्मज्ञान के निर्मल जल की गंभीर धारा बह रही है। पलटू साहेब कहते हैं कि जो मनुष्य गुरुज्ञान के दरिया में स्नान करता है, उसमें दुर्बुद्धि नहीं रह जाती है।

अरिल-85

साफी छानै सुरति अमल हरि नाम का।
और अमल सब झूठ नाहिं है काम का॥
काया कूँड़ी करै पवन का घोटना।
अरे हाँ पलटू पीवै प्याला प्रेम ज्ञान घर लोटना॥ 85॥

शब्दार्थ—साफी= छनना, छानने का वस्त्र। सुरति= मनोवृत्ति। अमल= कार्य; आचरण; अधिकार, शासन; नशा; आदत; प्रभाव, भोगकाल; समय; यहां का तात्पर्य है नशा।

भावार्थ—मनोवृत्ति की छननी से हरिनाम एवं आत्मज्ञान का नशा छाने। शरीर को कूड़ी बनावे और प्राण की घोटनी से घोटे और प्रेम का प्याला पीये। इसके अतिरिक्त सारे नशा निरर्थक हैं, झूठ में फंसाने वाले हैं। प्रेम-प्याला पीकर आत्मज्ञान की स्थिति में विश्राम करे।

अरिल-86

पहिले ह्वै वैराग भक्ति तब कीजिये।
सतसंग कै जोग ज्ञान तब लीजिये॥
ऐसे उपजै ज्ञान भक्ति को पाइ कै।
अरे हाँ पलटू लै जा उपरै मारि ठोक ठहराय कै॥ 86॥

शब्दार्थ—जोग= योग। उपरै= ऊपर, माया से अतीत दशा, पारगत।

भावार्थ—साधक को पहले विषयों से वैराग्य होना चाहिए। इसके बाद सद्गुरु-संतों में भक्ति होनी चाहिए। फिर सत्संग के प्रभाव से मनोनिग्रह रूप योग सिद्ध होता है। मन एकाग्र होने से आत्मज्ञान का साक्षात्कार होता है। पलटू साहेब कहते हैं कि हे साधक ! मन को ठोक-ठहराकर उसे मोह-माया से ऊपर उठा ले।

अरिल-87

जहाँ न जप तप नेम ज्ञान ना ध्यान है।
पानी पवन अकास नाहिं ससि भान है॥

जोग जुक्ति ना सुरति नाहिं दिन रात है।
अरे हाँ पलटू मन बुधि चित ना जाय तहाँ की बात है॥ 87॥

शब्दार्थ—ससि= शशि, चंद्रमा।

भावार्थ—जिस स्थिति में जप, तप, नियम, ज्ञान, ध्यान, पानी, पवन, आकाश, चंद्रमा, सूर्य, योग, युक्ति, सुरति, दिन, रात आदि कुछ नहीं है और जहां मन, बुद्धि तथा चित्त की गति नहीं है, वहां की बात है।

विशेष—यह है संकल्प-शून्य स्वरूपस्थिति दशा। इसमें स्वरूपस्थिति के अलावा कुछ नहीं रहता।

अरिल-88

नवनि गरीबी दया भक्ति का मूल है।
इतना गुन ना होय बास बिनु फूल है॥
बड़ा भया किस काम करै हंकार है।
अरे हाँ पलटू मीठ कूप जल पिवै समुंदर खार है॥ 88॥

शब्दार्थ—नवनि= विनम्रता। गरीबी= सादगी।

भावार्थ—विनम्रता, सादगी और दयाभाव भक्ति का मूल है। यदि उपर्युक्त सद्गुण न हो तो वह वैसे सारहीन है जैसे सुगंध रहित फूल। यदि अहंकार करता है तो बड़ा होना किस काम का। पलटू साहेब कहते हैं कि छोटे जलाशय, कुआं का मीठा जल सब पीते हैं, बड़ा समुद्र किस काम का जिसका जल खारा है।

26. मन

अरिल-89

मन ना पकरा जाय बहादुर ज्वान है।
करत रहै खुरखुन्द बड़ा सैतान है॥
ऐसा यार हरीफ रहत मन हलक में।
अरे हाँ पलटू उड़ता कोस हजार पच्छ बिनु पलक में॥ 89॥

शब्दार्थ—खुरखुंद= हलचल, बदमाशी। हरीफ= हरीफ़, समान व्यवसायी, शत्रु, धूर्त। हलक= हलक़, गला, कंठ। पच्छ= पंख।

भावार्थ—मन पकड़ने में नहीं आता है। यह वीर जवान है। यह बदमाशी करता रहता है। यह महा शैतान है। पलटू साहेब कहते हैं कि यह

ऐसा धूर्त मित्र है कि कंठ में ही रहता है और पलक मात्र में बिना पंख के हजार कोस उड़ जाता है।

अरिल-90

काम क्रोध बसि किहा नींद अरु भूख को।
लोभ मोह बसि किया दुक्ख औ सुक्ख को॥
पल में कोस हजार जाय यह डोलता।
अरे हाँ पलटू वह ना लागा हाथ जौन यह बोलता॥ 90॥

शब्दार्थ—डोलता= भटकता, भागता।

भावार्थ—काम, क्रोध, नींद, भूख, लोभ, मोह, दुख और सुख को वश में कर लिया; परन्तु मन पल मात्र में हजार कोस भाग जाता है। पलटू साहेब कहते हैं कि देह में रहकर जो बोलता है, उस चेतन आत्मा का बोध न हुआ, तो सब अधूरा ही है।

विशेष—आत्मज्ञान हो और मन वश में हो तब अध्यात्म की पूर्णता है।

अरिल-91

नापै चारिउ खूँट थहावै समुँद को।
सब परबत को तौलि गनै फिर बूँद को॥
हारा सब संसार बात है फेर का।
अरे हाँ पलटू वह नहिं लागै हाथ जो चालिस सेर का॥ 91॥

शब्दार्थ—खूँट= कोना, तरफ। चालिस सेर का= मन।

भावार्थ—मन पृथ्वी के चारों कोने नाप आता है, समुद्र को उलीचता है, पर्वत को तौलता है और फिर समुद्र की बूंद को गिनता है। सारा संसार मन से हार गया है। इसमें केवल समझ का फेर है। पलटू साहेब कहते हैं कि वह पकड़ में नहीं आता है जो चालीस सेर का है। वह है मन।

विशेष—जब यह समझ लिया जाता है कि मन मैं नहीं हूं। मन आभास मात्र है। इसके साथ जब भोग और स्वामित्व की इच्छा समाप्त हो जाती है, तब मन मर जाता है, शांत हो जाता है।

अरिल-92

जानि बूझि के परै आप से भाड़ में।
तासे काह बिसाय खुसी जो मार में॥

पीटा गा बहु बार तनिक नहिं डेरत है।
अरे हाँ पलटू यह मन भया चमार चमारी करत है॥ 92॥

शब्दार्थ—भाड़= अग्निकुंड। डेरत= डरता।

भावार्थ—मन जान-बूझकर आग में कूदता है। उसको कैसे रोका जा सकता है जो मार खाने में ही प्रसन्न रहता है। मन भोगों तथा अहंकार में पड़कर अगणित बार पीटा गया है, परन्तु यह दुष्कर्म से थोड़ा भी नहीं डरता। पलटू साहेब कहते हैं कि यह मन चमार है और चमारी करता है।

अरिल-93

सहज कूप में परै सहज रन जूझना।
सहजै सिंह सिकार अगिन कै कूदना॥
कितनी करै हियाब बात सब गर्द है।
अरे हाँ पलटू मन को राखै मार सिपाही मद है॥ 93॥

शब्दार्थ—रन= रण। हियाब= साहस। गर्द= धूल, व्यर्थ।

भावार्थ—कूप में डूबना सहज है, रणक्षेत्र में युद्ध करना सहज है, सिंह का शिकार करना सहज है और आग में कूदना भी सहज है। बाहरी बातों में चाहे जितना साहस करे, व्यर्थ है। पलटू साहेब कहते हैं कि जो मन को शांत रखता है, वह वीर योद्धा है।

27. माया

अरिल-94

दिया जक्त बौराय माया कलवारिनी।
द्रव्य लेइ बिष देइ पियावै बारुनी॥
इक तो लोटै धूरि चोख इक माँगता।
अरे हाँ पलटू अमल नहीं यह भूत धाय के लागता॥ 94॥

शब्दार्थ—कलवारिनी= शराब पिलाने वाली। बारुनी= वारुणी, शराब। चोख= तेजी से। अमल= आदत, व्यसन।

भावार्थ—भोग और स्वामित्व की चाह रूपी माया कलवारिनि ने जगत के लोगों को पागल बना दिया है। शराब बेचनेवाला लोगों से पैसे लेकर विष देता और शराब पिलाता है। शराब पीकर एक आदमी धूल में पड़ा लोटता है

और दूसरा उसी के सामने तेज शराब पीने को मांगता है। पलटू साहेब कहते हैं कि यह शराब की लत व्यसन नहीं, भूत है और दौड़कर पीने वाले को धर दबोचती है। यही दशा संपत्ति और स्वामित्व के मोही की होती है।

28. मान

अरिल-95

लोभ मोह को तजा तजा जग आस को।
काम क्रोध को तजा भूख और प्यास को॥
नंगा बन बन फिरै बसन ना तने में।
अरे हाँ पलटू सबै बात गई खोय बड़ाई मान में॥ 95॥

शब्दार्थ—बसन= वस्त्र, कपड़े।

भावार्थ—लोभ-मोह को त्याग दिया। जगत-भोगों की आशा छोड़ दी। काम-क्रोध को त्याग दिया। भूख-प्यास पर पूरा संयम कर लिया। नंगा होकर वन-वन घूमते हैं; परन्तु ये सारे त्याग व्यर्थ हो गये जब मन में मान-बड़ाई का रोग लगा है।

29. कनक-कामिनी

अरिल-96

निकरे घर को त्यागि लराई करन को।
चले खेत से भागि डेरे जब मरन को॥
दुइ नंगी तरवार किहा तिन्ह गरद है।
अरे हाँ पलटू कनक कामिनी सेती बचै सो मरद है॥ 96॥

शब्दार्थ—खेत= रणक्षेत्र, साधना क्षेत्र। गरद= गर्द, धूल। मरद= मर्द, वीर।

भावार्थ—लोग घर को त्यागकर और विरक्ति-वेष लेकर साधना के रणक्षेत्र में मन से युद्ध करने निकले; किन्तु जब मरने का भय सवार हुआ तब रणक्षेत्र से भाग खड़े हुए। पलटू साहेब कहते हैं कि दो नंगी तलवारे हैं, एक कनक और दूसरी कामिनी। इनने कायरों को धूल में मिला दिया है। जो इनसे अपने को बचा ले, वह वीर योद्धा है।

30. मूर्खता

अरिल-97

हरि हीरा हरि नाम फेंकि तेहिं देत हैं।
सिद्धाई है काँच तुच्छ को लेत हैं॥
करामाति को देखि मूढ़ ललचात हैं।
अरे हाँ पलटू इन बातन से संत बहुत अलसात हैं॥ 97॥

शब्दार्थ—सिद्धाई= झुठाई का जाल। करामाति= चमत्कार, छल-कपट। अलसात= निष्क्रिय रहते।

भावार्थ—हरि और हरिनाम जो हीरा है, उसे लोग त्याग देते हैं और सिद्ध बनने का ढोंग जो कांच है उसको लेते हैं। चमत्कार लगने वाली बातों को देखकर मूर्ख-समाज ललचाता है और वहां फंसता है। पलटू साहेब कहते हैं कि इस छल-कपट के जाल का संतों में अभाव होता है।

विशेष—आत्मा हरि है, किन्तु लोग उसके प्रति उदास रहते हैं। सिद्ध, चमत्कारी बाबा ये धर्म के नाम पर छल-कपट करने वाले बदमाश होते हैं। किन्तु इनके जाल में लोग लौकिक लाभ के झांसे में फंसते हैं। ये सिद्ध कहलाने वाले धूर्त दे कुछ नहीं सकते किन्तु इनके बहकाव में अशिक्षित से अधिक शिक्षित मूर्ख फंसते हैं। विवेकवान संत इसका विरोध करते हैं। आध्यात्मिक ऊंचाई पर चढ़ा हुआ साधक कारण-कार्य-व्यवस्था के विरुद्ध काम कर सकता है, यह घोर अंधविश्वास है। आध्यात्मिक ऊंचाई का अर्थ है पूर्ण शांत हो जाना, न कि आकाश में उड़ना जो असंभव है।

अरिल-98

लोभ मोह के बीच परा सब लोग हैं।
काम क्रोध सुत नारि नरक का भोग हैं॥
पीये हैं विष धाय अमृत करि जानते।
अरे हाँ पलटू मने करै हित जानि बैर सबमानते॥ 98॥

शब्दार्थ—मने करै= रोकने से, निवारण करने से।

भावार्थ—संसार के सब लोग लोभ-मोह के बीच में पड़े हैं। काम, क्रोध और पुत्र-पत्नी का मोह नरक का भोग है। संसारी मनुष्य दौड़-दौड़कर विषय रूपी विष पीते हैं, परन्तु उसे वे अमृत मानते हैं। पलटू साहेब कहते हैं

कि उनके कल्याण के लिए उन्हें इस पतन पथ से रोका जाता है, तो वे उपदेष्टा को ही शत्रु मान लेते हैं।

31. दुर्मति

अरिल-99

दुरमति जेहि माँ बसै ज्ञान हर लेत है।
तुरत करत है नास बड़ा दुख देत है॥
तेज पुंज हर लेय बुद्धि बल भावना।
अरे हाँ पलटू दुरमति बसे बिलाय गया हैरावना॥ 99॥

शब्दार्थ—बिलाय गया=नष्ट हो गया।

भावार्थ—जिसमें दुर्बुद्धि बसती है, ज्ञान खो जाता है। ज्ञान नष्ट होने से मनुष्य का तत्काल पतन होता है। यह दुर्बुद्धि बहुत दुखदायी है। दुर्बुद्धि ज्योतित आत्मज्ञान, विवेक-बल और श्रद्धा को नष्ट कर देती है। पलटू साहेब कहते हैं कि दुर्बुद्धि के कारण ही रावण जैसा प्रतापवान नष्ट हो गया।

अरिल-100

लाख खाय जो स्वान चाटने जायगा।
तजि कै काग कपूर विष्ठा को खायगा॥
तजै न चोरी चोर सहै बहु सासना।
अरे हाँ पलटू छुटै न जिव की खोय लगी वह बासना॥ 100॥

शब्दार्थ—सासना= दण्ड, दुख। खोय= आदत।

भावार्थ—कुत्ता लाखों बार उत्तम व्यंजन खा ले, तो भी अवसर पाने पर गंदी वस्तु चाटने जायगा। कौआ कपूर को त्यागकर विष्टा खायेगा। चोर पुलिस द्वारा बहुत दंड पाने पर भी चोरी नहीं छोड़ता। पलटू साहेब कहते हैं कि मनुष्य में जो आदत एवं वासना लग जाती है, वह छूटती नहीं है।

अरिल-101

मन माया ना तजै उलटि फिरि लागता।
ज्यों जहाज कै काग जहाजै ताकता॥
मारे मिटै न छुटै टेव है करम की।
अरे हाँ पलटू मिटै न जिव की खोय परी है जनम की॥ 101॥

शब्दार्थ—टेव= आदत, व्यसन। खोय= आदत।

भावार्थ—मन माया-मोह को नहीं छोड़ता। वह उससे दुख पाने पर भी उसी में वैसे लौटकर लगता है, जैसे समुद्र के जहाज का काग आकाश में उड़ने पर भी पुनः जहाज को ही अपना आश्रय समझता है। मरने पर भी कर्मों के अध्यास उससे नहीं छूटते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि उसकी जन्म-जन्मान्तर की आदत नहीं छूटती।

अरिल-102

बातन केरी लाग चलै तरवार है।
करते दोउ दल जोरि बात पर मार है॥
कछू कोऊ कहि जाय नफा ना टोट है।
अरे हाँ पलटू संतहि सहैं कुबचन कठिन यह चोट है॥ 102॥

शब्दार्थ—लाग= शत्रुता, वैर। टोट= घाटा, हानि।

भावार्थ—मनुष्यों में बातों को लेकर वैर हो जाता है, फिर आपस में कटु वचनों की तलवार चलती है। दोनों विरोधी दल जोर देकर बात-बात की मार करते हैं। विवेक से देखने पर लगता है कि हमारे लिए कोई कुछ भी कह डाले, उसमें न हमारा लाभ है और न हानि है। पलटू साहेब कहते हैं कि संत ही कटुवचन की चोट सहते हैं।

अरिल-103

नित उठि सुनै पुरान धसै बैराग ना।
बिषय बासना लील छुटै वह दाग ना॥
छुटै नहीं मरजाद बड़ाई खात है।
अरे हाँ पलटू ज्यों ज्यों सुनै पुरान अधिक लपटात है॥ 103॥

शब्दार्थ—लील= नील, दाग।

भावार्थ—नित्य-नित्य पुराण सुनते और बांचते हैं, किन्तु मन में वैराग्य का प्रवेश नहीं होता है। विषय-वासना का नील-दाग नहीं छूटता है। मान-मर्यादा का परदा हटा नहीं पाते हैं और उन्हें बड़प्पन की व्याधि खा रही है। पलटू साहेब कहते हैं कि ज्यों-ज्यों पुराण सुनते हैं त्यों-त्यों माया में अधिक लिपटते जा रहे हैं।

अरिल-104

भूला एक न दोय सकल संसार है।
लोक बेद के साथ बहा मँझधार है॥
मैं भूला बहु बार भेड़ के संग में।
अरे हाँ पलटू अबकी भया है चेत गुरु के रंग में॥ 104॥

शब्दार्थ—भेड़= भेड़ जानवर; अंधविश्वासी।

भावार्थ—एक-दो नहीं, किन्तु पूरे संसार के लोग ही भूले हैं। लोक और वेद, लोक-मर्यादा और पुस्तक-प्रमाण के साथ सभी मनुष्य भ्रांति-धारा में बह रहे हैं। इन अंधविश्वासियों की भेड़िया धंसान में मैं भी बहुत बार भूल चुका हूं। पलटू साहेब कहते हैं कि अबकी बार सद्गुरु की संगत पाकर जग गया हूं।

अरिल-105

जौं लगि पहुँचै नाहिं कथै ना झूठी बानी।
मिलै सबद जब जाय साच टकसार ठिकानी॥
जोरि जारि दुइ बात कहै जो राम की।
अरे हाँ पलटू ज्यों बालू की भीत रही किस काम की॥ 105॥

शब्दार्थ—टकसार= प्रामाणिक।

भावार्थ—जब तक निजस्वरूप में पूर्ण विश्राम न मिल जाय, तब तक अनुभवहीन नकली वाणी का कथन न करे। जब प्रामाणिक स्वरूपस्थिति प्राप्त कर ले, तब उसकी वाणी अनुभव से मेल खायेगी। जो लोग आत्माराम में लीन हुए बिना उसके सम्बन्ध में जोड़-जोड़ कर वाणी कहते हैं उनका सारा कथन बालू की दीवार उठाने की तरह निरर्थक है।

32. विविध उपदेश

अरिल-106

मैं जानौं जग स्यान जगत है बौरहा।
भजै नहीं भगवान केतिक हमने कहा॥
तजै सरग की राह नरक में जात है।
अरे हाँ पलटू परै आपसे कूप कहे रिसियात है॥ 106॥

शब्दार्थ—स्यान= सयान, समझदार। बौरहा = भोलाभाला, बेबूझ। रिसियात= क्रोध करता है।

भावार्थ—मैं समझता था कि संसार के लोग समझदार हैं, परन्तु वस्तुतः वे भोले हैं। गुरुजन कितना समझाते हैं परन्तु संसार के लोग भगवान के भजन में—आत्मशोधन में नहीं लगते। लोग मन की पवित्रता रूपी स्वर्ग का रास्ता छोड़ते हैं और मन की मलिनता रूपी नरक के रास्ते में जाते हैं। लोग मोह-वश स्वयं भव-बंधनों के कुएं में कूदते हैं। यदि उनको मना किया जाय तो वे क्रोध करते हैं।

अरिल-107

जननी रहै तो बाँझ पै साकट ना जनै।
होतै बरु मरि जाय जिये से ना बनै॥
पुत्र से भला मदार फरै ना दोष में।
अरे हाँ पलटू पुत्रवंती हरि भक्त होय जेहि कोष में॥ 107॥

शब्दार्थ—साकट= अभक्त, आध्यात्मिकता से रहित। मदार= एक विषैले रस का पौधा। कोष= कोख, कुक्षि, पेट।

भावार्थ—पैदा करने की शक्ति रखने वाली जननी का वंध्या रह जाना अच्छा है, परन्तु अभक्त एवं धर्मविरुद्ध पुत्र को जन्म न दे। अशिष्ट पुत्र पैदा होते ही मर जाय तो अच्छा है। उसके जीने में भला नहीं है। अशिष्ट पुत्र से अच्छा मदार का पौधा है, क्योंकि उससे मां-बाप को दोष नहीं लगेगा। पलटू साहेब कहते हैं कि जिसके पेट से हरि-भक्त पैदा हो, वही सच्ची पुत्रवती है।

अरिल-108

केतिक कहा पुकारि कोऊ नहिं बूझता।
करम बंध संसार तनिक नहिं सूझता॥
भेष मँहै परपंच अकेले डोलना।
अरे हाँ पलटू जुदी हमारी राह हमैं क्या बोलना॥ 108॥

शब्दार्थ—करम-बंध= अपने गंदे कर्मों में बंधा।

भावार्थ—संतजन पुकार-पुकार कर कितना समझाते हैं, परन्तु कोई समझना नहीं चाहता। संसार के लोग अपने गंदे कर्मों के संस्कार में बंधे हैं। उन्हें थोड़ा भी नहीं समझ पड़ता। साधु-वेषधारियों की भीड़ में भी बड़ा-बड़ा

प्रपंच है, इसलिए अकेला ही विचरना ठीक है। पलटू साहेब कहते हैं कि हमारा रास्ता ही अलग है—अंतर्मुखता। हमें वेष भगवान से झख नहीं मारना है।

अरिल-109

सब भेड़ी की राह चले हैं जूटि कै।
इक ओर आसिक चला अकेला फूटि कै॥
उलटि के खेलै खेल भया मन मगन में।
अरे हाँ पलटू छुटा भुइँचपा जाय एक ठो गगन में॥ 109॥

शब्दार्थ—आसिक= आशिक़, आत्मानुरागी। भुइँचपा= जमीन में चिपका, माया-मोह में डूबा। एक ठो= एक व्यक्ति, अकेला।

भावार्थ—संसार के लोग भेड़िया धंसान में एक के पीछे एक चलते हैं। विवेक-विचार नहीं करते। इसलिए आत्मानुरागी व्यक्ति इनसे अलग होकर अकेला ही चला। वह सांसारिकता से विमुख होकर अंतर्मुखता की साधना में लग गया और उसका मन आत्मलीन हो गया। पलटू साहेब कहते हैं कि जो मोह-माया में चिपका था, वह अकेला अब निर्मलता के आकाश में उड़ गया।

अरिल-110

भंग भजन में करै दुष्ट यह पेट है।
बिना भजन भगवान से नाहीं भेंट है॥
सतसंगति जब करै भूख तब मिटैगी।
अरे हाँ पलटू यहि का यही इलाज फिकिर सब फटैगी॥ 110॥

शब्दार्थ—भूख= तृष्णा, वासना, ललक।

भावार्थ—यह दुष्ट पेट भजन-साधना में बाधा डालता है। और भजन के बिना आत्मा का साक्षात्कार नहीं होगा। जब साधक विवेकवान संतों का सत्संग करेगा, तब उसकी विषय-तृष्णा मिटेगी। पलटू साहेब कहते हैं कि भव-व्याधि की यही चिकित्सा है। सत्संग तथा विवेक-साधना से सारे मोह-शोक दूर हो जायेंगे।

विषय—पेट को भोजन दो और मन को अंतर्मुखता की साधना।

अरिल-111

जग के लेखे जोगिया बाउर होइ गया।
जोगिया के लेखे बाउर जक्त सब ही भया॥
कौन करै यह न्याव दोऊ परमान है।
अरे हाँ पलटू सरग नरक की राह सदा अलगान है॥ 111॥

शब्दार्थ—लेखे= हिसाब से, समझ से। बाउर= पागल। परमान= प्रमाण, उचित, सत्य।

भावार्थ—संसारी बुद्धि वालों की समझ से विरक्त संत पागल हैं और विरक्त संतों की समझ से संसारी बुद्धि वाले पागल हैं। दोनों के बीच में कौन न्याय करे कि दोनों में से कौन पागल है; क्योंकि दोनों अपने को सही मानते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि स्वर्ग और नरक के रास्ते सदैव अलग-अलग हैं।

विशेष—मन-इंद्रियों की उत्तेजना में रहने वाले नरक के रास्ते में हैं और जिनकी इन्द्रियां और मन शांत हैं, वे स्वर्ग के रास्ते में हैं। नरक है उत्तेजना और स्वर्ग है शांति। यहां स्वर्ग का अर्थ पौराणिक स्वर्ग नहीं है जो वस्तुतः नरक ही है, क्योंकि वह मलिन देह-विलास की कल्पना है।

अरिल-112

संतन किया बियाह दुलहिनी ज्ञान की।
सतगुरु दिया कराय बेटी जजमान की॥
तन माड़ो के बीच अजब इक चेहरा।
अरे हाँ पलटू मन दुलह रघुनाथ चढ़े सिर सेहरा॥ 112॥

शब्दार्थ—जजमान= यजमान। चेहरा= स्वरूप। रघुनाथ= इन्द्रियों का स्वामी आत्मा। सेहरा= फूलों और गोटे आदि की लड़ियां जो दूल्हे और दुलहिन के सिर पर बांधी जाती हैं और मुंह पर लटकती रहती हैं।

भावार्थ—संतों ने एक विवाह रचाया, जिसमें मन सम्बन्धी आत्मा दुलहा बना और आत्मज्ञान की स्थिति दुलहिनी बनी, जो विवेक यजमान की बेटी है। शरीर रूपी मंडप के बीच में ज्ञानस्वरूप चेतन आत्मा और आत्मस्थिति का एक अद्भुत रूप-सौंदर्य है, जिसके शिरोभाग पर ज्ञान-ज्योतित सेहरा चढ़ा है।

विशेष—आत्मा दूल्हा है और शांति दुलहिन। आत्मा और शांति का एकमेक हो जाना जीवन की ऊंचाई है।

अरिल-113

रहते रोजा नित्त साँझ कै मुरगी मारै।
आठो वक्त निमाज गाय की कुही निहारै॥
सब में रहै खुदाय गले में छूरी देता।
अरे हाँ पलटू जाया चाहै भिस्त खून गरदन पर लेता॥ 113॥

शब्दार्थ—कुही=कूल्हा, धड़ और जांघ का जोड़, कमर के दोनों ओर की हड्डी। भिस्त=बहिश्त, स्वर्ग।

भावार्थ—मुसलमान कहलानेवाले रमजान के दिनों में नित्य दिन भर उपवास रहते हैं; किन्तु रात होते ही मुरगी मारते हैं। आठों पहर नमाज पढ़ते हैं; किन्तु गाय का कूल्हा निहारते हैं कि इसे मारकर खायं। वस्तुतः सब प्राणियों में खुदा बसता है किंतु प्राणियों के गले को छूरी से रेतते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि ये लोग जाना तो चाहते हैं स्वर्ग, परन्तु निरीह प्राणियों की गर्दन काटकर अपने ऊपर हत्या का अपराध लेते हैं।

अरिल-114

मुसलमान के जिबह हिन्दू के मारै झटका।
खाइ दूनों मुरदार फिरत हैं दूनिऊँ भटका॥
वै पूरब को जाहिं पछिम वै ताकते।
अरे हाँ पलटू महजिद देवल जाय दोऊ सिर मारते॥ 114॥

शब्दार्थ—जिबह=ज़बह, गला काटकर जान लेने का कार्य। झटका =एक ही बार में गला काट देना।

भावार्थ—मुसलमान जानवर के गला को रेतकर मारते हैं और हिंदू एक बार में मारते हैं। दोनों मुरदा खाते हैं, अतएव दोनों भटके फिरते हैं। हिन्दू पूर्व मुंह कर उपासना करते हैं और मुसलमान पश्चिम मुंह कर उपासना करते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि दोनों देवालय तथा मस्जिद में जाकर सिर पटकते हैं।

विशेष—मंदिर-मस्जिद में राम-रहीम नहीं है, किन्तु सबके दिल में है; इसलिए किसी प्राणी को दुख न देना सच्ची उपासना है।

अरिल-115

करम बँधा संसार बँधावै आप से।
जमपुर बाँधा जाय करम की फाँस से॥
कोई न सकै छुड़ाय रस्सा यह मोट है।
अरे हाँ पलटू संतन डारा काटि नाम की ओट से॥ 115॥

शब्दार्थ—करम= कर्म, राग-द्वेषपूर्ण कर्म। जमपुर= यमपुर, गर्भवास। मोट= मोटा, बलवान। ओट= आधार।

भावार्थ—राग-द्वेष जनित कर्म बंधनों में संसार के जीव बंधे हैं और उसी बंधन में आज पुनः अपने को बंधा रहे हैं। इस कर्म की फांसी में ही बंधकर जीव पुनः-पुनः गर्भवास में जाता है। कर्म का यह रस्सा बड़ा जबर्दस्त है। इसको कोई तोड़ नहीं पाता है। पलटू साहेब कहते हैं कि संतजन सतनाम के अर्थस्वरूप आत्मज्ञान का आधार लेकर कर्मबंधन का रस्सा काट डालते हैं।

अरिल-116

बाँधे बनिया हाट नहीं है लावना।
इसक बिना का राग बनै नहिं गावना॥
मन मानै सो करै बात यह चौज की।
अरे हाँ पलटू कहे सुने से नाहिं फकीरी सौक की॥ 116॥

शब्दार्थ—इसक= इश्क़, प्रेम, चाह। चौज= चाहना, इच्छा। सौक= शौक, तीव्र लालसा।

भावार्थ—कहावत है—'बांधे बनिया बाजार नहीं लगता।' बनिया को मजबूर करके उससे बाजार नहीं लगवाया जा सकता। प्रेम के बिना संगीत नहीं निकलता और गाते नहीं बनता। जिस काम को मन लाभकारी मान लेता है, वह उस काम को समर्पित होकर करता है। कोई काम तत्पर होकर करना प्रबल इच्छा का परिणाम है। पलटू साहेब कहते हैं कि फकीरी कहने-सुनने से नहीं होती, अपितु तीव्र लालसा से होती है।

अरिल-117

निकरे जग से तोरि भया मन त्याग में।
मारग पकरिन कठिन धसे बैराग में॥

माया आगे मिली रहे ललचाय कै।
अरे हाँ पलटू धँसे जक्त में फेर महंती पाय कै॥ 117॥

शब्दार्थ—धंसे= डूबे।

भावार्थ—संसारी माया-मोह की रस्सी तोड़कर घर से निकल पड़े। मन त्याग में लग गया। विषय-विरक्ति के कठिन मार्ग को पकड़े और वैराग्य में मग्न हो गये। कुछ दिनों के बाद आगे संसार की माया मिली और उसमें आसक्त हो गये। पलटू साहेब कहते हैं कि महंती पाकर सांसारिक माया-जाल में पुनः उलझ गये।

33. वर्ण-मात्रा के आधार पर उपदेश

अरिल-118

कक्का केती कही समुझाय कहा कोई नहिं मानै।
खारी और कपूर दोऊ एकै में सानै॥
कंचन घुँघुची आनि तुला एकै में तौलै।
अरे हाँ पलटू झूठा मारै गाल, साच कैसे कै बोलै॥ 1॥

शब्दार्थ—खारी= नमक।

भावार्थ—क अक्षर के आधार पर संत पलटू साहेब उपदेश करते हैं और कहते हैं कि मैं कितना ही समझाकर कहता हूं, परन्तु कोई कहा नहीं मानता है। संसार के लोग नमक और कपूर को एक में ही मिलाते हैं—सही-गलत का भेद नहीं समझते हैं। सोना और घुंघची को एक ही भाव समझते हैं। मिथ्याभाषी लोग बकबक करते हैं, तो सत्यवादी कैसे अपनी बात कहे?

अरिल-119

खख्खा खरा बनावै खोट खोट को खरा बनावै।
चोर चौतरे बैठि साह को पकरि मँगावै॥
काम क्रोध नहिं मरै गुरु औ सिष्य अनारी।
अरे हाँ पलटू हमरा तत्त बिचार, कहौ को सुनै हमारी॥ 2॥

शब्दार्थ—तत्त विचार= आत्मा-अनात्मा का विवेक।

भावार्थ—ख अक्षर के आधार पर पलटू साहेब कहते हैं कि लोग सत्य को झूठ तथा झूठ को सत्य सिद्ध करने में लगे हैं। चोर खुले मैदान के चबूतरे

पर बैठकर सत्यपरायण को पकड़ मंगाता है और उसको दंडित करता है। गुरु और शिष्य दोनों साधना से अनभिज्ञ हैं, अतएव उनके मन के काम-क्रोध मरते नहीं हैं। मेरा आत्म-अनात्म का तत्त्वविचार कौन सुने ?

अरिल-120

गग्गा गाली पावैं संत सिद्ध की करैं बड़ाई।
सूद्र कलंदर द्रव्य सिद्ध से माँगन जाई॥
अंधे ऐना हाथ कहौ कैसे कै सूझै।
अरे हाँ पलटू हमरा तत्त विचार, बचन कोई नहिं बूझै॥ 3॥

शब्दार्थ—कलंदर= एक वर्णसंकर मानी गयी जाति। ऐना= दर्पण।

भावार्थ—ग अक्षर से उपदेश है कि सच्चे संत गाली पाते हैं; और सिद्ध नामधारी जो जालसाज होते हैं, उनकी लोग बड़ाई करते हैं; और सामान्य जनता सिद्ध कहलाने वालों से पुत्र, धनादि मांगने जाती है। अंधों के हाथों में दर्पण दिया जाय, तो कहो, वे उसमें अपने मुंह के प्रतिबिम्ब कैसे देख सकते हैं ? पलटू साहेब कहते हैं कि मेरा तत्त्व विचार कोई नहीं समझता है।

अरिल-121

घघ्घा घर में बस्तु हिरान ढूँढ़न को बन-बन धावै।
गुरु सिष दोउ अंध कहौ को राह बतावै॥
राजा पाँच पचीस काल की चोट है।
अरे हाँ पलटू बचिहैं कोई साध नाम की ओट है॥ 4॥

शब्दार्थ—हिरान= खोया।

भावार्थ—घ अक्षर कहता है कि आत्मा रूपी अपनी वस्तु हृदय-घर में है, किन्तु अज्ञान-वश उसे खोजने के लिए वन-वन भटकते हैं। गुरु और शिष्य दोनों विवेकहीन हैं। कहो, कौन किसको रास्ता बतावे। शरीर में पांच ज्ञानेन्द्रियां और पचीस प्रकृतियां शासक हैं। इनकी चोट हर क्षण लगती रहती है। पलटू साहेब कहते हैं कि इनकी चोट से कोई संत आत्मज्ञान की रहनी में रहकर अपने को सुरक्षित रख सकेगा।

अरिल-122

नन्ना नाना कीन्हें भेष मिटी नहिं मन की आसा।
बहुरुपिया का स्वांग अंत को नर्क निवासा॥

माया दै दै ढोल सबन को नाच नचाया।
अरे हाँ पलटू लगी रहै वह डोरि बहुरि चौरासी आया॥ 5॥

शब्दार्थ—डोरि= वासना।

भावार्थ—न अक्षर कहता है कि लोग नाना प्रकार वेष तो बनाते हैं, परन्तु उनके मन की आशा-तृष्णा नहीं मिटती। बहुरुपिया जैसा नाना वेष बनाकर स्वांग एवं तमाशा करने से अंत में नरक में ही निवास होगा। माया ढोल बजा-बजा कर सबको नाच नचाती है। पलटू साहेब कहते हैं कि अनात्म वस्तुओं में जिसकी वासना की डोरी लगी है, उसे बारंबार चौरासी चक्कर में भटकना होगा।

अरिल-123

चच्चा चरक मरक संसार मकर से दुनिया खावै।
बातैं कहै बनाय सोई अब सिद्ध कहावै॥
मिली नहीं कछु बस्तु भेद का मरम न जाना।
अरे हाँ पलटू चरम दृष्ट संसार इष्ट कैसे पहिचाना॥ 6॥

शब्दार्थ—चरक मरक= चकर-मकर, दिखावा। मकर= जालसाजी। इष्ट= प्रिय, उपास्य।

भावार्थ—च अक्षर कहता है कि संसार एक दिखावा है। यह स्थिर नहीं, बदलता रहता है। कुछ लोग ऐसे हैं जो जालसाजी करके लोगों को फंसाते हैं और उनसे अपना स्वार्थ साधते हैं। जो छलपूर्ण बात करते हैं वे सिद्ध कहलाते हैं। उन्हें अपनी आत्म-वस्तु का थोड़ा भी भेद नहीं मिला और वे पवित्र रहनी का रहस्य नहीं जान सके। पलटू साहेब कहते हैं कि संसार के लोग तो चर्म दृष्टिवाले हैं। उन्हें केवल देहबुद्धि है। वे परम उपास्य आत्मा को कैसे पहचान सकते हैं?

अरिल-124

छछ्छा छके नहिं हरिनाम पीवते भाँग धतूरा।
बैठि गुफा के बीच खान को लड्डू पेड़ा॥
मँगनी कीन्हीं जाय ब्याह बिन रही कुमारी।
अरे हाँ पलटू खसम पड़ा नहिं चीन्ह, झूठ कस लावै तारी॥ 7॥

शब्दार्थ—खसम= पति, स्वामी। तारी= ध्यान।

भावार्थ—हरिनाम का रस नहीं पिये, अपितु भांग-धतूरा पीते हैं। गुफा में जा बैठे, किन्तु लड्डू-पेड़े खाने के लिए लालायित हैं। लड़की की मंगनी तो कर लिये, किन्तु उसका पति से विवाह नहीं हुआ और वह कुंवारी ही रह गयी। पलटू साहेब कहते हैं कि पति तो पहचानने में नहीं आया, फिर झूठा ध्यान क्या करते हैं ?

विशेष—मनोवृत्ति रूपी पत्नी का चेतन-आत्मा पति है; परन्तु यह बोध नहीं है तो मनुष्य की मनोवृत्ति भटकती है।

अरिल-125

जज्जा जटा रखाये सीस बगल में निर्गुन फाँसी।
गो पर करते घात देखन को बड़े उदासी॥
बुझी नहीं है आग राख में रहती दब की।
अरे हाँ पलटू तन से देखा त्याग, चाह यह सबके मन की॥ 8॥

शब्दार्थ—निर्गुन= गुणरहित, दुर्गुण। गो= इन्द्रियां।

भावार्थ—ज अक्षर कहता है कि सिर पर जटा रख लिये और बगल में दुर्गुणों की फांसी लेकर घूम रहे हैं। देखने में बड़े उदासी लगते हैं, किन्तु इन्द्रियों के भोगों पर घात लगाये रहते हैं। इनके मन की कामनाओं की आग बुझी नहीं है अपितु राख में दबी आग जैसी मन में दबी है। पलटू साहेब कहते हैं कि ऐसे लोगों का वेष देखकर तो लगता है कि ये त्यागी हैं, किन्तु इनके मन में सारे भोगों को भोगने की चाहना बनी है।

अरिल-126

झझ्झा झंखत फिरत कम्मखत रोइ कै जनम गँवावै।
वस्तु न सकै सम्हारि दोऊ गति सोग लगावै॥
हीरा लै लै हाथ आप से देत बहाई।
अरे हाँ पलटू करम लिखा है पोत, कहो कस हीरा पाई॥ 9॥

शब्दार्थ—झंखत= झींखत, दुखी होते, कुढ़ते। कम्मखत= कमबख़्त, अभागा। पोत= कांच का टुकड़ा।

भावार्थ—झ अक्षर कहता है कि अभागा मनुष्य दुखी होकर भटकता है और भीतर से रो-रो कर जीवन खोता है। अपनी आत्मवस्तु को सम्हालकर नहीं रख पाता है। लोक-परलोक दोनों से असफल होकर शोक-पीड़ित

भटकता है। मानवजीवन कल्याण-साधना करने का स्थान होने से हीरा है, परन्तु मनुष्य उसे व्यर्थ के कामों में खो देता है। पलटू साहेब कहते हैं कि जब कर्म में कांच का टुकड़ा लिखा है, तब हीरा कैसे पावे ? जब हम गलत कर्म करेंगे तब दुख मिलेगा।

अरिल-127

टट्टा टरै खेत से भागि सूर और बीर करारी।
हाथ जोरि मिलि गये माया जब दीन्ही तारी॥
लाखन में कोई संत माया का मुहड़ा फेरी।
अरे हाँ पलटू संतन किया बिबेक, माया भइ उनकी चेरी॥ 10॥

शब्दार्थ—खेत= क्षेत्र, साधना क्षेत्र। करारी= दृढ़ता। तारी= ताली, लालच।

भावार्थ—ट अक्षर कहता है कि दृढ़ कहलाने वाले शूर-वीर साधक साधना-क्षेत्र से भागकर हट गये। जब माया ने उन्हें लालच दिया तब वे हाथ जोड़ विनयावनत होकर माया के सामने झुक गये। लाखों में कोई बिरला संत होगा जो माया का लगाव छोड़कर वैराग्य में दृढ़ रहता हो। पलटू साहेब कहते हैं कि जिन संतों ने विवेक कर माया को चित्त से उतार दिया, माया उनकी दासी हो गयी।

अरिल-128

ठठ्ठा ठौर लेहु ठहराय गुरु से पूछि ठिकाना।
करड़ी खैंचि कमान सुरत से फोड़ निसाना॥
फूट जाय ब्रह्मांड गगन में करै रकाना।
अरे हाँ पलटू बड़े मरद का काम, रुंड पर बाँधे बाना॥ 11॥

शब्दार्थ—करड़ी= जोर से। कमान= धनुष। रकाना= स्थान, ठिकाना। रुंड= धड़, जिसमें सिर न हो।

भावार्थ—ठ अक्षर कहता है कि हे मुमुक्षु! सद्गुरु से पूछकर अपनी स्थायी स्थिति कर लो। सुरति के धनुष को जोर से खींचकर लक्ष्य को बेध दो जिससे माया का ब्रह्माण्ड फूट जाय और निर्मलता के आकाश में अपनी दृढ़ स्थिति बना लो। पलटू साहेब कहते हैं कि यह बड़े वीर का काम है कि वह सिर को गुरु के चरणों में समर्पित करके धड़ पर साधुवेष रूपी कफन बांधे।

अरिल-129

डड्डा डगर से रहे भुलाय नगर को राह बताये।
चले पैर नहिं एक मनौ मुहँई से आये॥
मजलिस बैठि गँवार कहै पहुँचे हैं हमहीं।
अरे हाँ पलटू पड़ैं कसौटी जाय सार टकसार में तबहीं॥ 12॥

शब्दार्थ—मजलिस= सभा, समाज, जलसा। गंवार= मूर्ख, अनाड़ी।

भावार्थ—ड अक्षर कहता है कि ऐसे लोग होते हैं कि वे स्वयं पथ से भटके हैं और दूसरों को मोक्ष-नगर का रास्ता बताते हैं। वे साधना-पथ में एक पैर भी नहीं चले हैं। मानो वे वाणी से मोक्ष का वक्तव्य करके उसमें पहुंचे हैं। वे मूर्ख सभा में बैठकर कहते हैं कि केवल मैं ही अध्यात्म के उच्च शिखर पर पहुंचा हूं। पलटू साहेब कहते हैं कि जब सच्चे संतों के सत्संग में उनकी कसौटी होती है, तब उनका नकली तेज उतर जाता है।

अरिल-130

ढड्ढा ढालों की क्या ओट लड़ौ ले सब्द कटारी।
खड़े रहौ मैदान हाँक दै सुरति सम्हारी॥
तिलतिल लागैं घाव टरै नहिं खेत से।
अरे हाँ पलटू अड़ा रहा कोई साध, धनी के हेत से॥ 130॥

शब्दार्थ—ओट= आड़ा। हांक= पुकार, ललकार। धनी= आत्मा।

भावार्थ—ढ अक्षर कहता है कि हे साधक! परोक्ष-उपासना रूपी ढाल का आड़ा क्या लेना, निर्णय शब्दों की तलवार लेकर साधना के क्षेत्र में मन के दुर्गुणों से युद्ध करने में लगे रहो। युद्ध के मैदान में हर क्षण खड़े रहो और अपनी मनोवृत्ति सम्हालकर दुर्गुणों को ललकार कर लड़ो। शरीर के तिल-तिल में घाव लगे तो भी युद्ध-क्षेत्र से न हटो। पलटू साहेब कहते हैं कि कोई बिरला साधु आत्म-उद्धार के लिए मन के दुर्गुणों से युद्ध करने में अडिग होकर डटा रहता है।

अरिल-131

तत्ता तन में लाये छाल कुम्भ का बक्कल पहिरे।
बैठि गुफा में जाय खोद के धरती गहिरे॥
करते प्रानायाम उलटि कै खैंचे स्वासा।
अरे हाँ पलटू बैठे आसन मारि, मिटी नहिं मन की आसा॥ 14॥

शब्दार्थ—कुम्भ= केला का पेड़। बक्कल= वल्कल, पेड़ की छाल।

भावार्थ—त अक्षर कहता है कि कितने साधक वृक्ष की छाल या केला की छाल पहनते हैं, जिसे वल्कल कहते हैं और पृथ्वी में गहरा गड्ढा खोदकर गुफा बनाते हैं और उसमें जा बैठते हैं। वे प्राणायाम करते हैं और उलटकर श्वास खींचते हैं। अनुलोम (ऊपर से नीचे की ओर) तथा विलोम (नीचे से ऊपर की ओर) श्वास खींचते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि वे आसन जमाकर बैठते तो हैं, किन्तु मन की सांसारिक आशाएं नहीं मिटतीं, तो उनका सब करना व्यर्थ रहता है।

अरिल-132

थथ्था थकित भये हम देखि सबै गफलत में सोवैं।
भक्ति का पौधा काटि बिषय का अंकुर बोवैं॥
तपसी भे धनवंत सावै सब भये भिखारी।
अरे हाँ पलटू रोगी ह्वै गये नीक, बैद सब भये अजारी॥ 15॥

शब्दार्थ—सावै= साहु, व्यवसायी। अजारी= रोगी।

भावार्थ—थ अक्षर कहता है कि सारे लोग माया-मोह की असावधानी में पड़े सो रहे हैं, इसलिए मैं इनसे हार बैठा हूं। ये लोग भक्ति का पौधा काटकर विषयवासना के बीज अंकुरित कर रहे हैं। तपस्वी संपदाशाली हो गये और व्यवसायी दरिद्र हो गये। पलटू साहेब कहते हैं कि रोगी निरोगी हो गये और वैद्य रोगी हो गये—साधारण लोग भक्ति-ज्ञान के पथ में लगकर मन निर्मल कर लिये और बड़े महात्मा कहलाने वाले मान-बड़ाई के मोह में पड़कर मन मैला कर लिये।

अरिल-133

दद्दा दबकि रहा है स्यार सिंह का पहिरे बाना।
दाग दगाये सीस लड़न का मरम न जाना॥
हाकिम रहे छिपाय भेद पाया नहिं कोई।
अरे हाँ पलटू तक तक रहिये ताक, कहै सो दुसमन होई॥ 16॥

शब्दार्थ—स्यार= सियार। हाकिम= हुकूमत करने वाला, बड़ा अफसर।

भावार्थ—द अक्षर कहता है कि सियार सिंह का वेष पहनकर अपने को छिपा रखा है। सिर पर तो साधना करने का चिन्ह लगा लिये, किन्तु मानसिक-युद्ध का भेद नहीं समझ पाये। उनके ऊपर हुकूमत करने वाले गुरु

लोग भी उनका भेद छिपाये रखे, इसलिए उनका कोई भेद नहीं जान सका। पलटू साहेब कहते हैं कि हम बारंबार देखते और उनकी पोल-पट्टी जानते हैं, किन्तु उनका भेद बतावें तो उनके शत्रु बनेंगे।

अरिल-134

धध्धा धनी कहावैं बड़े पूँजी घर में नहिं इक किन।
बैठ करत गुमान रैनि दिन जात भजन बिन॥
चौड़ी लाय दुकान करैं पकवानहिं फीका।
अरे हाँ पलटू जानै खावनहार और नहिं स्वाद उसी का॥ 17॥

शब्दार्थ—किन= कण, थोड़ा।

भावार्थ—ध अक्षर कहता है कि लोग धर्म और अध्यात्म-साधना के धनी तो कहलाते हैं, किन्तु उनके हृदय-घर में पवित्र रहनी का एक कण भी नहीं है। वे धर्म का अहंकार और भ्रम करके तो बैठे हैं, किन्तु उनका पूरा समय आत्मशोधन के बिना जा रहा है। दुकान तो बड़ी है, किन्तु पकवान फीके हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि आध्यात्मिक साधना के रसिक उनकी पोलपट्टी जानते हैं। अन्य लोग उसका स्वाद क्या जानें ?

अरिल-135

पप्पा पड़ै पतंगा जाय आपसे दीपक माहीं।
तन को दिया जराय सोच दीपक को नाहीं॥
पहिले तो दीपक जरै पाछे जरै पतंग।
अरे हाँ पलटू हरि हरिजन से प्रीति करि मिलि दोऊ इक अंग॥ 18॥

शब्दार्थ—हरि= ज्ञान, आत्मा। हरिजन= ज्ञानी, साधक।

भावार्थ—प अक्षर कहता है कि पतिंगे स्वयं दीपक की लौ में कूदकर जल मरते हैं। इससे दीपक को कोई दुख नहीं होता। पहले तो दीपक जलता है और पीछे पतिंगे उसमें लिपटकर जलते हैं। मोह-वश मनुष्य विषयों में लिपटकर जल मरते हैं। पलटू साहेब कहते हैं, किन्तु साधक आत्मज्ञान में रत होता है और अंततः आत्मलीन हो जाता है।

अरिल-136

फफ्फा फाका फिकर जरूर फरक आलम से रहिये।
भली बुरी कहि जाय बात दो सबकी सहिये॥

कहर मेहर की नजर लगन साहिब से लावै।
अरे हाँ पलटू लगी रहै वह डोरि, छुटै तो गोता खावै॥ 19॥

शब्दार्थ—फाका= फ़ाक़ा, निराहार, उपवास, ग़रीबी। फिकर= फ़िक्र, चिन्ता। फरक= फ़रक़, दूरी, अलग। आलम= भीड़भाड़। कहर= क़हर, विपत्ति, दुख। मेहर= मेह्र, कृपा। कहर-मेहर= दुख-सुख।

भावार्थ—फ अक्षर कहता है कि गरीब एवं सादा होकर रहो, कल्याण की चिंता अवश्य रखो, और दुनियादारी लोगों से हटकर रहो। लोगों से तुम्हारी स्तुति और निन्दा होती हो तो ये दोनों बातें निर्विकार भाव से स्वीकार करो। चाहे विपत्ति हो या संपत्ति सब समय अंतर्मुख होकर आत्मानुरागी रहो। पलटू साहेब कहते हैं कि अंतर्मुखता की डोरी सदैव लगी रहे। यदि यह टूट जायगी तो दुनिया में डूबोगे।

अरिल-137

बब्बा बगुला कीन्हे भेष हंस की बोली बोलै।
नीर छीर दोउ महै आप से परदा खोलै॥
राँगा रूपा सेत नजर बिन को अलगावै।
अरे हाँ पलटू जहवाँ नाहीं हंस तहाँ बगु हंस कहावै॥ 20॥

शब्दार्थ—रांगा= एक प्रसिद्ध सस्ता धातु। रूपा= चांदी। सेत= उजला।

भावार्थ—ब अक्षर कहता है कि बगुले हंस का वेष बनाकर हंस की बोली बोलते हैं, परन्तु जब नीर-क्षीर अलग करने का समय आता है तब बगुले की पोलपट्टी स्वयं खुल जाती है। रांगा और चांदी दोनों सफेद होते हैं। उसको परखने की दृष्टि हुए बिना दोनों का भेद कौन कर सकता है। पलटू साहेब कहते हैं कि जहां हंस नहीं होते हैं, वहां बगुले ही हंस कहलाते हैं।

अरिल-138

भभ्भा भरमन ही को खै करै इंद्रिन से निगरा।
नाम से रहै भुलाय चित्त दै करते सिगरा॥
निगरा सिगरा नाहिं जोई है जाग्रत जोगी।
अरे हाँ पलटू निगरा सिगरा आहिं, कहो कोई रोगी भोगी॥ 21॥

शब्दार्थ—खै= क्षय, नाश। निगरा= निग्रह, नियंत्रण, रोक। सिगरा= संग्रह। निगरा-सिगरा= त्याग-संग्रह।

भावार्थ—भ अक्षर कहता है कि मन के भ्रम और भटकाव को क्षीण करे, समाप्त करे। कुछ लोग इन्द्रियों का ऊपरी ढंग से रोकथाम रखते हैं, परन्तु सतनाम के अर्थस्वरूप आत्मा को भूलकर सांसारिक संग्रह में चित्त लगाकर डूबे हैं। वस्तुत: जो त्याग के अहंकार और संग्रह के लोभ से अलग है वह सावधान योगी है। पलटू साहेब कहते हैं कि त्याग के अहंकारी और संग्रह के लोभी लोग कहना चाहिए कोई रोगी-भोगी होते हैं।

अरिल-139

मम्मा मन मुरीद होइ नाहिं आपु वै पीर कहावैं।
बिना बंदगी फैज कहो कोइ कैसे पावै॥
कितनौ नाचौ नाच नाक बिन नकटी बाई।
अरे हाँ पलटू सतगुरु होहिं दयाल, देहिं तौ मिलै बड़ाई॥ 22॥

शब्दार्थ—मुरीद=शिष्य। पीर=गुरु। बंदगी=वंदना, सेवा, प्रणाम। फैज=फ़ैज़, परोपकर; हित, लाभ; यश।

भावार्थ—म अक्षर कहता है कि जिसका अपना मन शिष्य नहीं हुआ, वे दूसरों को शिष्य बनाने के लिए स्वयं गुरु बन बैठते हैं। बिना सेवा और विनम्रता के लाभ एवं सुयश कहो कैसे मिल सकता है ? जिसको नाक नहीं है, वह कितना ही नाच नाचे, नकटी बाई ही रहेगी—विनम्रता के बिना गुरुवाई हास्यास्पद ही है। पलटू साहेब कहते हैं कि दयालु सद्गुरु से आत्मबोध पाकर जब साधक विनम्रता से सेवा-साधना करता है, तब उसको लाभ एवं सुयश मिलता है।

अरिल-140

रर्रा राँड़ भराये माँग नैन भरि काजर लाये।
बिना खसम की सेज कहा भा फूल बिछाये॥
तन पर लत्ता नाहिं ओढ़ाती खसमहिं सोई।
अरे हाँ पलटू बिना भजन की राँड़, कहो कितना तन धोई॥ 23॥

शब्दार्थ—खसम=पति। लत्ता=सड़ा-फटा वस्त्र। राँड़=मूर्ख। भजन =आत्मशोधन।

भावार्थ—र अक्षर कहता है कि विधवा स्त्री मांग भर सेंदुर लगाये, नेत्र भर काजल पारे और फूलों से सजाकर शय्या बिछाये, तो बिना पति के यह सब किस काम का ? उसके शरीर पर चीथड़ा भी नहीं है, परन्तु वह अपनी

नग्नता ही अपने कल्पित पति को ओढ़ाती है। इसी प्रकार बिना आत्मशोधन के मूर्ख कहो कितना अपना जीवन निर्मल कर सकता है?

विशेष—यथार्थ सद्गुरु की शरण में समर्पित हुए बिना, आत्मबोध और आत्मशोध बिना कोई अहंकारी बनकर कल्याण नहीं कर सकता।

अरिल-141

लल्ला लालच बुरी बलाय यही सब बात बिगारी।
लालच जेहि का नाम माया की है महतारी॥
कनिक कामिनी रूप धरे सुर नर मुनि लूटै।
अरे हाँ पलटू ऐसा कोई ना मिला जो इनसे छूटै॥ 24॥

शब्दार्थ—बलाय= बला, विपत्ति, आफत, दुख।

भावार्थ—ल अक्षर कहता है कि लालच भारी विपत्ति है। इसी ने जीवन के सारे काम को बिगाड़ा है। जिसे लालच कहते हैं, यह माया की जननी है। इसी से सब माया एवं धोखा पैदा होता है। यह लालच कनक और कामिनी रूप धारणकर एवं लालच से कनक-कामिनी में फंसकर सुर, नर, मुनि सब लूटे गये। पलटू साहेब कहते हैं कि ऐसा कोई नहीं मिलता है जो लालच से परे रहता हो।

अरिल-142

वव्वा वारूँ तन मन सीस उसी का कहूँ संदेसा।
हित अपना पहिचान सुनत ही मिटै कलेसा॥
पूरन प्रगटे भाग मिले वहि देस के साईं।
अरे हाँ पलटू करिये उनसे प्रीत नहीं उनसे अधिकाई॥ 25॥

शब्दार्थ—साईं= स्वामी, सद्गुरु।

भावार्थ—व अक्षर कहता है कि मैं अपने शरीर, मन और सिर उस सद्गुरु के चरणों में समर्पित करता हूं और उसी के उपदेश बताता हूं। सद्गुरु के उपदेश से मुमुक्षु अपने कल्याण की बात समझ लेता है। गुरु के उपदेश सुनकर तुरंत मन का दुख मिट जाता है। स्वरूपस्थिति-देश का महरमी स्वामी सद्गुरु यदि मिल जाय, तो मुमुक्षु का पूर्ण भाग्य उदय हुआ समझना चाहिए। पलटू साहेब कहते हैं कि ऐसे पूर्ण सद्गुरु से प्रेम करो। उनसे बड़ा कोई नहीं है।

अरिल-143

सस्सा सरबर करते स्यार सिंह से रार बढ़ावै।
काग कहै हम बड़े हंस से गाल बजावै॥
भूँकन लागे स्वान संत सुनि कान को मूँदा।
अरे हाँ पलटू आखिर बड़े सो बड़े दिन चार का धींगम धूँगा॥ 26॥

शब्दार्थ—सरबर= बराबरी, समानता। रार= झगड़ा। धींगमधूँगा= दुष्टता, द्वंद्व, झगड़ा।

भावार्थ—स अक्षर कहता है कि सियार सिंह से अपनी बराबरी की डींग हांकते हैं और झगड़ा करते हैं। कौआ बक-बक करके कहता है कि मैं हंस से बड़ा हूं। झगड़ालू लोग बकबक करने लगे, तो संतों ने उनकी द्वंद्वात्मक बातें सुनकर अपने कान मूंद लिये। पलटू साहेब कहते हैं कि अंततः बोध और रहनी में रहने वाले ही बड़े होते हैं और इसलिए वे ही बड़े हैं, शेष लोगों का तो चार दिन के लिए बकबक करना मात्र है।

अरिल-144

हहा हक है वही हलाल सबर से बैठे आवै।
खाना वही हराम पेट को माँगन जावै॥
हाथी धीरज धरै साँझ को मन भर पावै।
अरे हाँ पलटू टूक टूक को स्वान, बीस घर भटका खावै॥ 27॥

शब्दार्थ—हक= हक़, अधिकार, कर्तव्य। हलाल= जायज़, उचित, ठीक। सबर= सब्र, संतोष। हराम= नाजायज़, अनुचित।

भावार्थ—ह अक्षर कहता है कि मनुष्य अपना कर्तव्य कर्म करता रहे और संतोष करके स्थिर रहे; फिर जो कुछ प्राप्त हो, वही उचित समझे, उसी पर अपना अधिकार माने। पेट के लिए दूसरे के घर मांगने जाना अनुचित है। हाथी धैर्य धारण करके खड़ा रहता है, तो शाम को अपनी भारी खुराक पाता है। पलटू साहेब कहते हैं कि कुत्ते एक टुकड़े के लिए बीसों घर भटकते हैं।

अरिल-145

अआ अपनी ओर निहार तुझे क्या परी परारी।
घर में मूसै चोर और को झिखै अनारी॥

अपनी करनी साच और सब झूठ कहानी।
अरे हाँ पलटू धोय सिताबी हाथ, जात है बहता पानी॥ 28॥

शब्दार्थ—परारी= दूसरे का, पराई। झिखै= झिड़कता है, डांटता है; बकबक करता है। सिताबी= शिताबी, शीघ्रता।

भावार्थ—अ मात्रा कहती है कि हे कल्याणार्थी! तू अपनी ओर देख। तुझे दूसरे की क्या चिंता है? हे अनाड़ी! तेरे हृदय-भीतर कामादि चोर हर क्षण तेरा आत्मधन लूटते हैं। तू अपनी रक्षा नहीं करता है। तू दूसरे की क्या शिकायत या चिंता करता है, दूसरे के लिए क्या बक-बक करता है ? अपनी करनी और रहनी को हर क्षण शुद्ध बनाये रखना जीवन की सत्यता है। शेष अन्य के विषय में बकबक करना झूठी कहानी है। पलटू साहेब कहते हैं कि हे कल्याणार्थी! जीवन के उत्तम समय का निर्मल जल बहा जा रहा है। तू शीघ्र अपने हाथों को धो ले—अपने को सब तरफ से मुक्त कर ले।

अरिल-146

ईई इसम करै कोइ मरद और सब पेट जियावैं।
मार गया कोइ सिंह खान को गीदड़ धावैं॥
छत्र फिरै सिर ऊपर सोई बाच्छाह कहावै।
अरे हाँ पलटू सब नायक हो जायँ, तो बग्घी कौन लदावै॥ 29॥

शब्दार्थ—इसम= इस्म, नाम, संज्ञा। मरद= मर्द, वीर। बाच्छाह= बादशाह। नायक= निर्देशक, सरदार। बग्घी= चार पहियों की घोड़ा गाड़ी।

भावार्थ—ई मात्रा कहती है कि कोई शूरवीर एवं मनोविजयी अपना नाम उजागर करता है। शेष लोग तो अपने पेट पालते हैं। एक सिंह किसी जानवर को मारता है। सिंह के चले जाने पर उसे खाने के लिए गीदड़ दौड़ते हैं। जिसके सिर के ऊपर छत्र रहता है, वह बादशाह कहलाता है। पलटू साहेब कहते हैं कि यदि सब निर्देश करने वाले सरदार हो जायं, तो बग्घी में सामान लादने वाला कुली कौन रहेगा ?

अरिल-147

उऊ उमर गई सब बीति चलन को दिन है थोरा।
अहमक भजन बिचारु गोड़ धरि करौं निहोरा॥
भूले कौल करार धनी घर कैसे जइहौ।
अरे हाँ पलटू सिर पर मारै धौल काल तब कहाँ लुकइहौ॥ 30॥

शब्दार्थ—अहमक= अहमक़, बेवकूफ, मूर्ख। निहोरा= प्रार्थना, निवेदन; कृपा, उपकार, एहसान; अवलंब, सहारा; यहां अर्थ है प्रार्थना, निवेदन। कौल= प्रतिज्ञा। करार= क़रार, प्रतिज्ञा। धौल= चोट, आघात। लुकइहौ= छिपोगे।

भावार्थ—उ मात्रा कहती है कि हे मनुष्य ! तुम्हारी सब आयु बीत गयी है। अब संसार से चलने के दिन थोड़े रह गये हैं। हे मूर्ख ! विचार कर और आत्मशोधन में लग जा। मैं इसके लिए तेरे पैर पकड़कर तेरी प्रार्थना करता हूं। तू पूर्व प्रतिज्ञा को भूल गया है। तू धनी के घर कैसे जायेगा? पलटू साहेब कहते हैं कि जब मृत्यु तेरे सिर पर जोर कर आघात करेगी, तब तू कहां छिपेगा ?

विशेष—यह पुराना विश्वास है कि जीव माता के गर्भ में ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मुझे इस गर्भवास से निकाल लो, मैं पैदा होकर तुम्हारा भजन तथा आत्मकल्याण करूंगा। उसी विश्वास के आधार पर ऊपर कहा गया है कि "भूले कौल करार।" गर्भवास में जीव अचेत रहता है। उसमें ऐसी बुद्धि कहां जो किसी से प्रार्थना करे ! सार अर्थ है कि जीवन में आत्मशोधन करना चाहिए।

अरिल-148

एऐ एक ओर पढ़ै कुरान बाँग धुनि लावै मुलना।
एक ओर बाजै संख बेद धुनि पंडित रटना॥
सोय रहै मैदान खाय बरु माँगि कै।
अरे हाँ पलटू दोऊ घर लागी आग, बचा कोइ भागि कै॥ 31॥

शब्दार्थ—बांग= शब्द, आवाज़, पुकार।

भावार्थ—ए मात्रा कहती है कि एक ओर मुलना कुरान पड़ता है और जोर से बांग देता है और दूसरी ओर शंख बजाकर पंडित वेदों का पाठ करता है। दोनों ईश्वर के एकाधिकारी ठेकेदार बनते और एक दूसरे को काफिर और नास्तिक कहते हैं। पलटू साहेब कहते हैं कि दोनों के सम्प्रदायों में मिथ्या अहंकार एवं अज्ञान की आग लगी है। कोई निष्पक्ष विवेकवान इन दोनों की धोखेधड़ी से भागकर बचता है और वह सोचता है कि भले मांगकर खाना पड़े और मैदान में सोना पड़े, परन्तु इन मिथ्याभिमानियों के पास न जाय।

विशेष—हिन्दू-मुसलमान के पंडित-मुल्ला सामने थे, इसलिए इनके नाम यहां आये हैं। वस्तुतः संसार के उन सभी सम्प्रदायों को इस अर्थ में

लेना चाहिए जो सत्य के एकाधिकारी ठेकेदार बनते हैं और स्वर्ग तथा मोक्ष अपने सम्प्रदाय के लोगों के लिए ही रिजर्व मानते हैं, शेष सबको नरक तथा भवबंधनों में भटकने के लिए भेजते हैं। ऐसे अहंकारी लोग घोर अंधकार में हैं।

अरिल-149

ओऔ औरों बैर बिहाय प्रीति सज्जन से जोड़ी।
बड़े अनाड़ी लोग जोड़ि कै पाछे तोड़ी॥
मौत देहि भगवान सजन से ह्वै जु बिछोहा।
अरे हाँ पलटू हँसिहैं बैरी लोग, जीति जब पइहैं दोहा॥ 32॥

शब्दार्थ—बिहाय= छोड़कर, त्यागकर। दोहा= द्रोही, दुश्मन, शत्रु।

भावार्थ—ओ मात्रा कहती है कि अन्य सबसे शत्रुता त्यागकर सज्जन-संतों से प्रेम जोड़ना चाहिए। वे लोग बहुत ही बेवकूफ हैं जो सज्जन-संतों से प्रेम जोड़कर पीछे उसे तोड़ देते हैं। यदि संतों का वियोग हो जाय तो इससे अच्छा है कि भगवान मौत दे दे। जब कामादि शत्रु हमारे ऊपर विजय कर लेंगे, तब हमारे विरोधी लोग हमारी हंसी उड़ायेंगे।

अरिल-150

अंअः औङ ओअं एक और नाहीं कोई दूजा।
एक ब्रह्म संसार करौं मैं किसकी पूजा॥
समुझ पड़ा करतार करम को किया भगूरा।
अरे हाँ पलटू दुरमति भागी दूरि, मिला जब सतगुरु पूरा॥ 33॥

शब्दार्थ—भगूरा=सड़ा दिया, नष्ट कर दिया।

भावार्थ—अं मात्रा कहती है कि एक ओं है, दूसरा कोई नहीं है। जब सारा संसार एक ब्रह्म ही है, तब मैं किसकी पूजा करूं? जब समझ में आया कि आत्मा ही कर्ता है और यह अपने राग-द्वेषजनित कर्मों के बंधनों में बंधता है, तब सारे राग-द्वेष जनित कर्मों को नष्ट कर दिया। पलटू साहेब कहते हैं कि पूरा सद्गुरु मिल गया, तब उससे आत्मज्ञान का उपदेश पाकर सारी दुर्बुद्धि दूर हो गयी।

विशेष—जड़-चेतन सर्वथा भिन्न हैं और चेतन असंख्य हैं। मन द्वैत बनाता है; अतएव संकल्पों के त्याग से चेतन जीव अकेला, असंग तथा केवल रह जाता है। यही उसका अद्वैत है।

कवित्त

कवित्त-1

पूरन ब्रह्म रहै घट में,
सठ तीरथ कानन खोजन जाई।
कीट पतंग रहे परिपूरन,
कहु तिल एक न होत जुदा ही॥
नैन दियो हरि देखन को,
पलटू सब में प्रभु देत दिखाई।
ढूँढ़त अंध गरंथन में,
लिखि कागद में कहुँ राम लुकाही॥ 1॥

शब्दार्थ—कानन= वन, जंगल। लुकाही =छिपा है।

भावार्थ—शरीर में बैठा चेतन जीव पूर्ण ब्रह्म है, किन्तु भोला मनुष्य उसे तीर्थ और वनों में खोजने जाता है। कीट-पतंग में भी वह विद्यमान है। वह चेतन जीव से कभी एक तिल भी अलग नहीं होता है। पलटू साहेब कहते हैं कि प्रकृति ने मनुष्य को आंखें दी हैं जिनसे वह सब प्राणियों में परमात्मा का दर्शन करे। किन्तु विवेकहीन लोग उसे किताबों में खोजते हैं। क्या लिखे हुए कागज में कहीं राम छिपा बैठा है ?

कवित्त-2

चाहौं ना चारि धाम चाहौं ना सात पुरी,
चाहौं ना तीरथ ना द्वारिका दगावना।
नहीं चहौं कैलास नहीं ब्रह्म लोक वास,
चहौं न बैकुंठ नाहिं नर्कहू को भावना॥
चाहौं न इंद्र लोक चाहौं न मुक्ति द्वार,
चाहौं न राम नाहिं भक्ति की बड़ावना।
चाहै न पलटू दास पूजी है सकल आस,
एक चाह रही संत रेनु केरी चाहना॥ 2॥

शब्दार्थ—संत रेनु= संत-चरणों की धूलि।

भावार्थ—मैं चारों धाम नहीं चाहता हूं। सात पुरी, अन्य तीर्थ या द्वारका में अंग दगवाने की भी इच्छा नहीं है। कैलाशवास, ब्रह्मलोकवास तथा बैकुंठ भी नहीं चाहता हूं। नरक जाने की तो इच्छा ही कैसे होगी ? इंद्रलोक और मुक्तिद्वार भी नहीं चाहता हूं। राम को भी नहीं पाना चाहता हूं और उसके प्रति भक्ति को बढ़ाना नहीं चाहता हूं। पलटू साहेब कहते हैं कि मेरी सारी कामनाएं पूरी हो गयी हैं। बस, एक इच्छा है कि शरीर रहे तक संतों की चरणरज का आधार मिला रहे।

विशेष—सारी कामनाएं शांत हो जाने पर जीव स्वयं पूर्ण है। वह स्वयं राम है, ब्रह्म है, खुदा है, गॉड है, मुक्त है। इस स्थिति को जीवनपर्यन्त बनाये रखने के लिए सत्संग चाहिए।

कवित्त-3

सुक्ख में मगन औ दुख में दिलगीरी आवै,
मरत है बड़ाई को छोटाई की अचाहना।
अस्तुति में फूलै औ क्रोध करै निन्दा सुनि,
मित्र सेती भाव करै दुष्ट से अभावना॥
संपति में खुसी औ बिपति बिलाप बड़ा,
पूजै में कष्ट है पुजावने की कामना॥
पलटू दास चिन्ता ज्यों चरत है सरीर कँहै,
बिगरी फकीरी बेकूफी से ना बना॥ 3॥

शब्दार्थ—दिलगीरी= उदासी, दुख। बेकूफी= बेवकूफ़ी।

भावार्थ—सुख में प्रसन्न हैं, दुख में दुखी, प्रशंसा पाने के लिए जान देते हैं, लघुता नहीं चाहते, अपनी स्तुति पाकर फूले फिरते हैं और निंदा पाकर क्रोध करते हैं, मित्र से मोह है, वैरी से द्वेष है, संपत्ति पाकर प्रसन्न हैं, विपत्ति आने पर फूट-फूट कर रोते हैं, दूसरों का सत्कार करने में दुख मानते हैं, किन्तु अपने को पुजवाने के लिए बड़ी इच्छा है, जैसे पशु फसल चर ले, वैसे उनके शरीर को चिंता चर रही है; पलटू साहेब कहते हैं कि ऐसी स्थिति में फकीरी नष्ट है। मूर्खता रखकर त्याग नहीं बनता।

सवैया

सवैया-1

छिन में बहुत हरि तरंग उठै, छिन में धन खोजत लोग लुगाई।
छिन में बहु जोग बैराग कथै, छिन काम किरोध को मारन धाई॥
छिन में बहु भोग विलास करै, छिन में उठि धाय करै कुटिलाई।
पलटू कपटी मन चोट करै, हम भागि बचे गुरु की सरनाई॥4॥

शब्दार्थ—चोट= आघात, मार।

भावार्थ—मन क्षण में हरिभजन की तरंग में डूबता है, क्षण में धन तथा स्त्री खोजता है, क्षण में योग-वैराग्य की बात करता है और काम-क्रोध को मारता है, क्षण में बहुत भोग-विलास में उलझता है, क्षण में कुटिलता करने के लिए दौड़ता है। पलटू साहेब कहते हैं कि यह कपटी मन बारंबार आघात करता है, परनु मैंने भागकर सद्‌गुरु की शरण ली और उसकी चोट से बच गया।

सवैया-2

चोर चंडाल चमार कहै और कोऊ, कहै हरिदास है भाई।
कोऊ कहै यह तो नारि लुभानो, कोऊ कहै माया रति आई॥
निंद करै ता से निंद करैये, अस्तुति को न मनावन जाई।
जो हम हैं हरि जानत हैं, अब रैन दिवस उनकौ गुन गाई॥5॥

शब्दार्थ—हरिदास= भगवत भक्त।

भावार्थ—मुझे कोई चोर कहता है, कोई भंगी, कोई चमार और कोई कहता है कि भाई, यह तो भगवतभक्त है। कोई कहता है कि यह तो स्त्री का मोही है। कोई कहता है कि यह माया में डूबा है। जो मेरी निन्दा करता है, उसको मैं निन्दा करने देता हूं और जो मेरी स्तुति करता है, मैं उसको धन्यवाद देने नहीं जाता हूं। मैं जो हूं वह हरि जानता है। अब मैं रात-दिन उसी का गुण गाता हूं।

विशेष—आत्मा परमात्मा है। बोधवान अपनी सच्ची स्थिति को जानता है और वह उसी में निरन्तर लीन रहता है।